SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

लेखापरीक्षा प्रकाश

एक सौ बावनवां (152वां) अंक जुलाई-दिसम्बर, 2025

भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक का कार्यालय
9, दीन दयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110124

BHASHINI

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

लेखापरीक्षा प्रकाश

एक सौ बावनवां (152वां) अंक

हिन्दी गृह-पत्रिका
जुलाई-दिसम्बर 2025

भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक का कार्यालय
नई दिल्ली-110124

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

स्वत्वाधिकार
भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक
प्रकाशन
"लेखापरीक्षा प्रकाश" (हिंदी गृह पत्रिका)
प्रकाशक
भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक
का कार्यालय, नई दिल्ली–110124
एक सौ बावनवां (152वां) अंक
(जुलाई–दिसम्बर, 2025)

पत्रिका परिवार
मुख्य संरक्षक
श्री के. संजय मूर्ति
भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक

संरक्षक
श्री के.एस. सुब्रमण्यम
उपनियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक
एवं
डॉ. नीलोत्पल गोस्वामी
अपर उपनियंत्रक एव महालेखापरीक्षक

संपादक मण्डल
प्रधान संपादक
श्री भवानी शंकर
महानिदेशक (राजभाषा)
संपादक
श्री अनुराग प्रभाकर
वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी

रचना चयन समिति
श्री भवानी शंकर
महानिदेशक (राजभाषा)
श्री अनुराग प्रभाकर
वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी
श्री संदीप
कनिष्ठ अनुवादक
सुश्री नमिता सिंह
कनिष्ठ अनुवादक

मुद्रक : चन्दु प्रैस
469, पटपड़गंज इंडस्ट्रियल एस्टेट,
दिल्ली 110092
मूल्य : राजभाषा के प्रति निष्ठा

अनुक्रमणिका

क्रम सं.	शीर्षक		पृष्ठ
1.	संदेश		3
2.	महानिदेशक (राजभाषा) की डेस्क से		5
3.	पाठकों से दो शब्द		6
4.	आपके पत्र		7
	लेख		
5.	साइबर अपराध की समस्या	कुमार अग्निवेश	11
6.	कलाम	ए. राधा	16
7.	लेखा परीक्षा स्तम्भ - पूर्वोत्तर कनेक्ट	आरती शर्मा	18
8.	ज्ञान, भक्ति और माया	कृष्ण मुरारी जयपुरिया	22
9.	मेरी हिन्दी यात्रा	डूमेश कुमार धनकर	24
10.	दुर्गा पूजा	कमलाकर कुमार झा	27
11.	जीवन का फलसफा : मृत्यु भली या जीवन?	बिजेन्द्र कुमार बेरवाल	29
12.	मीडिया में हिंदी	धीरज कुमार रॉय	34
13.	बाली	पूनम मुंजाल	39
14.	13 सितंबर, 1949 और हिन्दी भाषा	मोहन प्रकाश	41
15.	हमने तारे नहीं खोए, हमने अंधेरा खो दिया	संदीप सिंह	44
16.	मच्छर की मर्मभरी पुकार: कोई मेरा भी प्रेमी हो!	सत्यप्रकाश	46
17.	विदेश से पहले अपने देश को देखें	सुनीता	48
18.	हिंदीतर राज्य में हिंदी एवं क्षेत्रीय भाषा	नर्मदा कुमारी	51
19.	शक्ति, सौंदर्य एवं संघर्ष का प्रतीक - 'स्त्री'	नमिता सिंह	53
20.	हरियाणा	संदीप	55
21.	कृत्रिम बुद्धिमत्ता का उजला पक्ष	डॉ. नीलोत्पल गोस्वामी	61
	कहानी		
22.	धरोहर	मुनीष भाटिया	66
23.	जादू	सुदेश कुमारी	69
24.	गोतनियों का रिश्ता	सियाशरण	73
25.	चालीस के बाद की रफ़्तार	अमित उपाध्याय	78
	कविताएँ		
26.	अनुवाद	सन्नी कुमार	80
27.	क्या क्या याद रखें	पंकज मोहन जायसवाल	80
28.	मित्रता	अंशुल पंत	81
29.	कौन हो तुम	शैलेंद्र कुमार	81
30.	हमारा विभाग	ज्योति दीक्षित	82
31.	बोझपड़ा (सामंजस्य)	कौशिक चक्रवर्ती	82
32.	आज़ादी की कहानी	नवीन दैया	83
33.	प्रकृति का आँचल : एक अनमोल धरोहर	डॉ. अजीत कुमार	84
34.	मेहनत रंग लाएगी	विष्णु शर्मा	85
35.	सफलता का भवन	रामानन्द शर्मा	85
36.	माँझी और नाव	अंकुश शर्मा	86
37.	साहस	जावेद	87
38.	जीवन का सार	सुमित कुमार	87
39.	किसे क्या कहें	सुनीता	88
40.	"खो गया कहाँ... रिश्तों का सम्मान"	रिंकी गुप्ता	89
41.	हक़ की उड़ान	सुमित	90
42.	हिंदी कार्यशाला विशेष	प्रिया मिश्रा	91
43.	1. बीते दिनों की प्रेमिकाएँ, 2. खंदा-ए-गुल में, 3. छूना	जय प्रकाश	92
	प्रेरक प्रसंग		
44.	कथनी और करनी में अंतर		95
45.	मन की डोर – प्रभु के हाथ		97
46.	मन की फिसलन		98
47.	**मुख्यालय समाचार**		**99**
48.	**सेवानिवृत्ति**		**126**
49.	**सीएजी - सुर्खियों में**		**138**

अस्वीकरण– पत्रिका में व्यक्त विचार एवं भावनाएं लेखक के अपने हैं, अतः कार्यालय एवं संपादक मंडल का इसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

डॉ. नीलोत्पल गोस्वामी, आईएएएस
अपर उप नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक
Dr. Nilotpal Goswami, IA&AS
Addl. Deputy Comptroller & Auditor General

भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक का कार्यालय
Office of Comptroller and Auditor General of India

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

संदेश

मैं इस बात से अत्यंत आल्हादित एवं चकित हूँ कि इतने छोटे अंतराल पर हम पत्रिका के अगले अंक को लेकर पुनः आपके समक्ष प्रस्तुत हो रहे हैं। यह संभव नहीं हो सकता था यदि पत्रिका में कार्यरत दल ने व्यक्तिगत स्तर पर इसके प्रकाशन कार्य के विभिन्न पक्षों में रुचि लेते हुए अपना योगदान न दिया होता। इसके अतिरिक्त राजभाषा विभाग के वर्ष 2025-26 के वार्षिक कार्यक्रम के लक्ष्यों को भी मुख्यालय द्वारा उसी सरलता से पूर्ण किया गया जिस तरह से इस पत्रिका द्वारा आपकी आकांक्षाओं को पूर्ण करने का प्रयास किया गया।

संविधान की आठवीं अनुसूची में भारत के विभिन्न राज्यों में प्रचलित 22 भाषाओं को मान्यता प्रदान की गई है। इन भाषाओं में भी कालजयी साहित्य रचा गया है।इसके अतिरिक्त ऐसे साहित्य से हमें अपने समाज से इतर लोक संस्कृति एवं परम्पराओं को जानने और समझने का भी मौका मिलता है। "पुदुमैपित्तन की कहानियाँ" को आधुनिक तमिल लघु कथाओं का जनक माना जाता है। इनमे "शाप विमोचनम" एवं "कंचनाई" को तो प्रसिद्धि में देश काल से परे माना जाता है। बांग्ला साहित्य में सत्यजित रे के जासूसी चरित्र "फेलू दा" के कारनामों को कौन भूल सकता है वहीं महिलाओं के संघर्ष को जिस तरह से आशापूर्णा देवी द्वारा "प्रथम प्रतिश्रुति" में दिखाया गया है वह भाषा की सीमाओं को लांघ कर देश के प्रबुद्ध जनों के मनमस्तिष्क में घर कर गया है। इसी तरह तेलुगू साहित्य में गुरुजादा अप्पाराव द्वारा रचित "कन्याशुल्कम" एवं साने गुरुजी द्वारा मराठी में रचित "श्यामची आई" की समता कर सकने वाला अन्य भाषाओं में रचा गया साहित्य विरला ही होगा।

आपको स्मरण होगा कि अपने पिछले संदेश में मैंने मुख्यालय में साहित्य एवं तकनीक के संगम से सम्बद्ध कुछ शृंखलाबद्ध कार्यक्रमों के प्रारम्भ होने की चर्चा की थी। मुझे आप सभी को यह बताते हुए अत्यंत हर्ष का अनुभव हो रहा है कि विगत नवंबर (2025) में इलेक्ट्रॉनिक्स एवं सूचना प्रोद्यौगिकी मंत्रालय के डिजिटल इंडिया भाषिणी खंड (डीआईबीडी) ने भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक कार्यालय के साथ एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए हैं । इस समझौता ज्ञापन के अनुसार अनुवाद क्षेत्र में शिक्षण एवं प्रशिक्षण द्वारा दिए जाने वाले सहयोग के अतिरिक्त डीआईबीडी दल स्वयं द्वारा विकसित किए गए अनुवाद प्रयुक्ति "भाषिणी" की भी सेवाएँ प्रदान करेगा जिसके द्वारा भारत की सभी 22 मान्यता प्राप्त भाषाओं में न सिर्फ अनुवाद अपितु दो भिन्न भाषाभाषियों द्वारा वार्तालाप भी संभव होगा। इस समझौते के अनुसार हमारे कार्यालय की ऑनलाइन कार्यव्यवस्था में एक बहुभाषी तथा पाठ, चित्र, ध्वनि एवं वीडियो आदि विधाओं से समृद्ध प्रणाली को स्थापित किया जा रहा है।

तकनीक के इस युग में भारतीय पाठकों को ऐसी रचनाओं से विरत रखना एक तरह से उनके साथ अन्याय करना होगा। इस पत्रिका के माध्यम से इस अंक सहित आगामी अंकों में हमारा यही प्रयास होगा कि अन्य भाषाओं की अमर रचनाओं से हिन्दी भाषियों को भी अवगत कराया जाए।

इस अंक में भी अन्य भाषाओं से हिन्दी में अनुवादित रचनाओं को सम्मिलित किया गया है। उद्देश्य है कि इस महान देश की समरसता एवं एकता को भाषिक स्तर पर भी व्यवहृत किया जाए जिससे वह पाठ्य पुस्तकों तक सीमित न रह कर व्यावहारिक जीवन में भी उतर सके।

हमारी इस पत्रिका का विस्तार क्षेत्र समूचा भारत है जो हमारे विभिन्न भाषाभाषी पाठकों का निवास क्षेत्र है।हम अपने पाठकों से आशा करते हैं कि वे क्षेत्रीय भाषाओं में रचित प्रदेश एवं संस्कृति से संबन्धित रचनाओं के हिन्दी अनुवाद द्वारा पत्रिका के हिंदीभाषी पाठकों को उनसे अवगत कराएं जिससे वे देश की सामाजिक एवं सांस्कृतिक विभिन्नताओं से परिचित हो सकें।

हमें आशा ही नहीं बल्कि विश्वास भी है कि हम पत्रिका के प्रति आपके प्रेम, आपकी उत्सुकता एवं सहयोग को सकारात्मक रूप से प्रेरित करने में सफल रहे हैं।

जय भारत !

आपका,

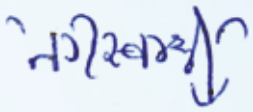

(डॉ. नीलोत्पल गोस्वामी)

महानिदेशक (राजभाषा) की डेस्क से

भवानी शंकर
महानिदेशक (राजभाषा)

नेल्सन मंडेला ने कहा था " जब आप किसी व्यक्ति से उस भाषा में बात करते हैं जिसे वह समझता है तब बात उसके दिमाग तक जाती है पर जब आप उस व्यक्ति से उसकी मातृभाषा में बात करते हैं तो वह बात उसके दिल तक जाती है।"

उनका यह कथन हम सभी के लिए सत्य सिद्ध हो रहा है। आज शासकीय कार्य हम जिस भाषा में कर रहे हैं वह हमारी मातृभाषा नहीं है। यह इस अवधारणा का आधार है कि राजकीय कार्यों का स्वरूप अत्यंत औपचारिक एवं पूर्वानुमानित होता है। जिन सरकारी कार्यों का सीधा संबंध जनता से होता है वहाँ इन औपचारिकताओं को भ्रमवश संवेदनहीनता भी समझ लिया जाता है जबकि तकनीकी रूप से वह कार्य त्रुटि रहित होता है। इसका कारण मातृभाषा की अनुपस्थिति के कारण हृदय से हृदय के जुड़ाव की कमी को माना जा सकता है।

शासकीय कर्मियों की रुचि हिन्दी भाषा में जागृत हो जाए तो यह न सिर्फ राजभाषा के प्रचार प्रसार में सहायक होगा अपितु राजकीय कार्य को हिन्दी में करने में भी सहायक होगा। हमारी पत्रिका अपने इस उद्देश्य को भी भली भांति पूर्ण कर रही है। यह देखकर असीम संतोष का अनुभव होता है कि हमारी पत्रिका के माध्यम से पत्रिका के कई पाठक, लेखकों के रूप में बदल कर भाषा के प्रचारप्रसार एवं पत्रिका की उन्नति में सहायक हो रहे हैं।

पत्रिका के इस अंक को आपकी आकांक्षाओं के अनुरूप रखते हुए कुछ अनुवादित रचनाओं को भी सम्मिलित किया गया है। इसके पीछे की भावना देश के संघीय ढांचे को अक्षुण्ण रखने के उद्देश्य के अनुरूप है। हाल ही में इलेक्ट्रॉनिक्स एवं सूचना प्रोद्यौगिकी मंत्रालय के डिजिटल इंडिया भाषिणी खंड (डीआईबीडी) के साथ हुए समझौते में इस तथ्य को रेखांकित किया गया कि रिपोर्ट के स्तर को ऊंचा उठाने के लिए स्थानीय सरकारी अधिकारियों के साथ देशज भाषाओं में यदि संवाद को स्थापित किया जाए तो निश्चित रूप से सूचनाओं के नए द्वार खुल जाएंगे एवं पारदर्शिता को बढ़ावा मिलेगा। कृत्रिम बुद्धिमत्ता का प्रयोग रिपोर्ट के निर्माण में आमूलचूल परिवर्तन लाकर इसके तथ्यों, अनुवाद एवं उसकी समीक्षा की परिशुद्धता को बढ़ाएगा।

इस प्रकार लेखापरीक्षा के क्षेत्र में हम एक युगांतकारी परिवर्तन के साक्षी बनने जा रहे हैं। हम तकनीकी श्रेष्ठता के उस युग में प्रवेश करने जा रहे हैं जहां भारत के किसी सुदूर गाँव के ग्रामीण से वार्तालाप में लेखापरीक्षा के आंकड़ों की शुद्धता की संभावना निहित होगी एवं दूसरी ओर आंकड़ों के वृहद जमावड़े के बावजूद भी रिपोर्ट के तैयार होने की समयरेखा पर इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा और वह अपने तयशुदा समय पर ही विधायिका में प्रस्तुत की जाएगी।

इन तकनीकी प्रगतियों की साक्षी निस्संदेह हमारी पत्रिका भी बनेगी। तकनीक के माध्यम से ही पत्रिका के कलेवर में पहले भी कुछ परिवर्तन किए गए थे और आगे भी परिवर्तन की संभावना से इंकार नहीं किया जा सकता।

परिवर्तन के इस दौर में जब रोज एक नए दिन , एक नई तकनीक की आहट सुनाई देती है और समय के साथ चलने के लिए आधिकारिक रूप से तकनीक को अपनाने का दबाव सन्निहित हो, तब हमारी दृष्टि अपने पाठकों की ओर इस विश्वास के साथ उठती है कि युग कितना भी परिवर्तनशील क्यों न हो जाए, हमारे पाठकों के प्रेम की मात्रा कभी परिवर्तित नहीं होगी, उनकी आशाएँ और उनका विश्वास कभी नहीं बदलेगाऔर हम भी उनकी आशाओं और आकांक्षाओं पर खरा उतरने का पूरा प्रयास करते रहेंगे।

जय राजभाषा,

आपका

भवानी शंकर

पाठकों से दो शब्द

अनुराग प्रभाकर
वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी (राजभाषा)

नमस्कार दोस्तों,

हमारी आपकी मुलाक़ात वैसे तो छोटी सी होती है पर हमारे आपके मध्य सबसे बड़ा सेतु यही है । आपके प्रेम और आपकी प्रतिक्रियाओं ने हमें वह संबल दिया जिससे कारण पत्रिका के दो अंकों के मध्य का अंतराल ऐसा हो गया है मानो हमारी पत्रिका मासिक आधार पर आपके मध्य पहुँचती हो । यह आपके लिए ही नहीं समस्त पत्रिका परिवार के गर्व का विषय है । आपमें से बहुत से पाठकों से मैं व्यक्तिगत रूप से मिल चुका हूँ पर विश्वास कीजिए , इस पटल पर जब मैं अपनी बात रखता हूँ तो मुझे ऐसा लगता है कि मानो आप सभी हमारे समक्ष विराजमान हैं और हम आमने सामने बातें कर रहे हैं।

आपसे अनुरोध है कि पत्रिका के प्रति अपना प्रेम और विश्वास ऐसे ही बनाए रखें । यह भी अनुरोध है कि पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं के प्रति अपने विचारों से हमें अवश्य अवगत कराएं । आपके विचार हमारे लिए उस प्रकाश स्तम्भ की भांति हैं जो समुद्र में भटकते जहाज रूपी हमारी पत्रिका के लिए मार्गदर्शक का काम करते हैं।

हम पर अपना प्रेम और विश्वास बनाए रखने के लिए आप सभी का बहुत बहुत आभार, आशा है कि बहुत जल्द फिर मुलाक़ात होगी

मुसल–सल एक ही तस्वीर चश्म–ए–तर में रही
चराग बुझ भी गया रोशनी सफर में रही
नई उड़ान का रस्ता दिखा रही है हमें
वो गर्द पिछले सफर की जो बाल–ओ–पर में रही

आपका ही
अनुराग प्रभाकर

पत्रिका में अपनी रचनाएं प्रकाशित करने हेतु लेखकों के लिए अनुदेश

1. रचना वर्ड सॉफ्ट कॉपी में ही भेजी जाए। यदि भौतिक प्रति भेजी जा रही है तो मंगल फॉन्ट में फॉन्ट साइज़ 12 रखते हुए पृष्ठ के एक ओर टंकित करके निम्न पते पर भेजें।
   संपादक 'लेखापरीक्षा प्रकाश', 10, बहादुरशाह जफ़र मार्ग, नई दिल्ली–110002
2. कृपया लेख के साथ (i) मौलिकता प्रमाणपत्र, (ii) फोटो, (iii) नाम एवं पदनाम, (iv) कार्यरत (संविदा पर नहीं) / सेवानिवृत्त (यदि कार्यरत हैं तो अनुभाग); (v) यदि सेवानिवृत्त हैं तो, कार्यकाल के दौरान पदनाम; (vi) मूल कार्यालय का नाम और पता संपर्क संख्या के साथ (कार्यरत और सेवानिवृत्त दोनों का); (vii) वर्तमान कार्यालय का नाम, पता और संपर्क संख्या (यदि कार्यरत हैं तो); (viii) लैंडमार्क के साथ वर्तमान आवासीय पता, (ix) ई-मेल एवं मोबाइल नम्बर भी संलग्न करें, बैंक खाता विवरण संलग्न करें।
3. यदि पत्रिका के वर्तमान अंक के लिए पर्याप्त रचनाओं की संख्या प्राप्त हो चुकी हो तो उसी रचना को अगले अंक के लिए आरक्षित कर लिया जाता है। अतः लेखकों से निवेदन है कि अपनी रचना के प्रकाशन के संबंध में अनावश्यक पूछताछ न करें।
4. संभव हो तो संबंधित पत्र व्यवहार भी राजभाषा में करने का प्रयास करें।
5. सॉफ्ट कॉपी में रचना भेजने का पता :– **ईमेलः anuragp.cag@cag.gov.in; Contact : 9402275468**

आशा है आप अपना सहयोग इसी तरह बनाए रखेंगे।

आपके पत्र

महोदय/महोदया,

कार्यालय की गृहपत्रिका "लेखापरीक्षा प्रकाश' के 150 व 151 वें अंकों की प्राप्ति हुई, जिसके लिए आपको बहुत-बहुत धन्यवाद। पत्रिका के दोनों अंकों के मुख-पृष्ठ एवं रूपरेखा अत्यंत सुंदर हैं। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं ज्ञानवर्धक एवं वैविध्यपूर्ण हैं जिसके संकलन के लिए संपादक मंडल एवं सभी रचनाकार बधाई के पात्र हैं। आपकी पत्रिका राजभाषा हिंदी के प्रचार–प्रसार की दिशा में एक महत्वपूर्ण प्रयास है। आगे, पत्रिका में सम्मिलित विभिन्न गतिविधियों से संबंधित तस्वीरें पत्रिका की शोभा को और बढाती हैं।

हिंदी गृहपत्रिका "लेखापरीक्षा प्रकाश' के 150 व 151 वें अंकों के सफल प्रकाशन हेतु बधाइयां एवं आगामी अंक के लिए ढेर सारी शुभकामनाएं।

सादर,
राजभाषा अनुभाग
प्र.नि.लेप.(कें.), बेंगलूरु

REGIONAL CAPACITY BUILDING & KNOWLEDGE INSTITUTE
Indian Audit & Accounts Department
20, Sarojini Naidu Marg, Prayagraj – 211001

दिनांक : 09.03.2026

नई दिल्ली - 110124

संदर्भ:- पत्रांक 92/रा.भा.अ./95-2025 दिनांक 27.02.2026

महोदय,

Phone : 0532-2423485 Fax : 0532-2423485 E-mail : rtiallahabad@cag.gov.in

हि.अ./ले. व हक./5/पत्रिका प्रतिक्रिया/2024-25 I/1356574/2026

प्रधान महालेखाकार (ले०&ह०) का कार्यालय
वीरचंद पटेल पथ,
पटना, बिहार - 800001

OFFICE OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (A&E),
BIRCHAND PATEL PATH
PATNA, BIHAR - 800001

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

पत्रांक/ Letter No.: हि.अ./ले. व हक./5/पत्रिका प्रतिक्रिया/25-26/ 163
दिनांक/ Date: 19-02-2026

सेवा में,
वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी (राजभाषा),
भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक का कार्यालय,
नई दिल्ली-110124

विषय: हिंदी पत्रिका "लेखापरीक्षा प्रकाश" के 151वें अंक की अभिस्वीकृति एवं प्रतिक्रिया।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका "लेखापरीक्षा प्रकाश" का 151वां अंक ई-मेल के द्वारा प्राप्त हुआ है। पत्रिका का आवरण पृष्ठ एवं साज-सज्जा सुन्दर एवं आकर्षक है। पत्रिका राजभाषा के प्रसार के साथ-साथ साहित्यिक की दृष्टि से भी अत्यंत प्रभावशाली है। इस अंक में निहित सभी रचनाएँ प्रशंसनीय एवं रोचक हैं, विशेषकर निम्नलिखित रचनाकारों की रचनाएं अत्यधिक प्रशंसनीय हैं :-

क्रम सं.	रचनाएँ	रचनाकार
1.	अनिश्चित जीवन और बेपरवाह की चिंताएं	श्री सचिन सिंह
2.	बोझ नहीं हैं बुजुर्ग	श्री मनीष भाटिया
3.	पछतावा	श्री अमित उपाध्याय
4.	मुश्किलों का हल	श्री हरिओम कुमार
5.	हर सुबह के नाम एक खत	श्रीमती कुसुम लता
6.	ब्रज की कल्पना में श्री राधा-कृष्ण की होली	श्रीमती ममिता सिंह

पत्रिका के आगामी अंकों के लिए शुभकामनाएं।
इसे सक्षम प्राधिकारी के अनुमोदन से निर्गत किया गया है।

भवदीय,
Digitally signed by
SUNIL KUMAR
Date: 18-03-2026
17:24:26
सहायक निदेशक (राजभाषा)

Phone: [illegible] Fax: [illegible] Email: agaebihar@cag.gov.in

---

सं./प्रनिलेप(कें)/हि.अ./लेप.प्र./No.PDA(C)/H.S./L.P.P/14-40 I/1343276/2026

महानिदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय)
चेन्नै का कार्यालय
"ऑडिट भवन", 361, अन्ना सालै, तेनांपेट,
चेन्नै - 600018

OFFICE OF THE DIRECTOR GENERAL OF AUDIT
(CENTRAL), CHENNAI
'AUDIT BHAWAN', 361, ANNA SALAI,
TEYNAMPET, CHENNAI - 600018

सं. मनिलेप (के) /हिं अ./14-40/2025-26/ दिनांकः 10-03-2026

सेवा में

वरिष्ठ प्रशासन अधिकारी (रा.भा.)
भारत के नियंत्रक-महालेखापरीक्षक का कार्यालय,
10, बहादुर शाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली- 110124.

विषयः 'लेखापरीक्षा-प्रकाश' पत्रिका के 150वें अंक पर अभिमत ।

महोदय,

लेखापरीक्षा-प्रकाश पत्रिका के 150 वें अंक को ई-पत्रिका के रूप में अग्रेषित करने हेतु हार्दिक धन्यवाद । इस पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएँ हमारे भारतीय लेखा तथा लेखापरीक्षा विभाग के सदस्यों की सृजनात्मकता को बढ़ावा देती है । सभी रचनाएँ सुरुचिपूर्ण तथा ज्ञानप्रद हैं ।

विशेषकर श्री चाँद सिह दहिया कृत **–'युद्ध की भयानकता''** लेख युद्ध की विभीषिका और मानवीय संवेदनाओं का अत्यंत मार्मिक चित्रण करता है, श्री विभाष रंजन मंडल कृत **"नाउरू- दुनिया का सबसे छोटा लोकतांत्रिक राष्ट्र"-** यह नाउरू की अनूठी संस्कृति और भौगोलिक सुंदरता का बहुत ही रोचक और ज्ञानवर्धक परिचय देता है, श्री उदय प्रताप सिंह कृत **मानक देवनागरी लिपि और हिंदी वर्तनी** भाषा के विविध पक्षों की महत्ता को बहुत ही स्पष्ट और व्यवस्थित रूप से प्रस्तुत करता है, श्री अनुराग प्रभाकर कृत **अस्तित्व** में लेखक ने निस्वार्थ सेवा और अटूट विश्वास के महत्व को बड़ी ही खूबसूरती से जीवंत किया है तथा कु. प्रियंका **कृत पतझड़ की ऋतु है आई** कविता में पतझड़ की ऋतु के सौंदर्य और उसके साथ आने वाली नई उम्मीदों का अत्यंत मनमोहक वर्णन किया गया है।

समग्र रूप से पत्रिका अत्यंत प्रभावी है। इस पत्रिका के प्रकाशन में योगदान देने वाले सभी को बधाईयाँ एवं शुभकामनाएँ ।

(इसे महा निदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय) के अनुमोदन से निर्गत किया जाता है)

भवदीया,
Digitally signed by
Sudhavalli
Date: 10-03-2026
सहायक निदेशक/राजभाषा

राजभाषाकक्ष/मुख्यालयपत्रिका/के-35/2020-21 I/1339664/2026

कार्यालय प्रधान महालेखाकार(लेखा व हक) राजस्थान, जयपुर

क्रमांक :- राजभाषाकक्ष/मुख्यालयपत्रिका/के-**35/2025-26** दिनांक :-

सेवा में,
सहायक निदेशक (राजभाषा)
भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक का कार्यालय
9, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली

विषय :– मुख्यालय की त्रैमासिक हिंदी पत्रिका "लेखापरीक्षा प्रकाश' के **151**वें अंक के ई-संस्करण की प्राप्ति के संबंध में ।

महोदय,

मुख्यालय की त्रैमासिक हिंदी पत्रिका "लेखापरीक्षा प्रकाश' के 151वें अंक के ई-संस्करण की प्राप्ति हुई। इस पत्रिका में संगृहीत सभी रचनाएँ प्रभावशाली रोचक एवं उच्च कोटि की हैं। पत्रिका का मुख्य पृष्ठ आकर्षक है एवं पत्रिका के माध्यम से राजभाषा हिंदी के सृजनात्मक उत्थान हेतु आपके द्वारा किया गया प्रयास सराहनीय है।

पत्रिका के इस अंक में सम्मिलित श्री अमित उपाध्याय की कहानी **'पछतावा'**, श्री मनीष भाटिया का लेख 'बोझ नहीं हैं बुजुर्ग' और मीना कुमारी की कविता 'ऑडिट दिवस' विशेष रूप से सराहनीय हैं।

पत्रिका के सफल सम्पादन हेतु सम्पादक मण्डल को बधाई व पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति एवं उज्ज्वल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ ।

भवदीय
डॉ.सुभाष चंद यादव/Dr. SUBHASH CHAND YADAV
सहायक निदेशक/ASSISTANT DIRECTOR

रा.भा.अनु./ले.प./लेखापरीक्षाप्रकाश/2025-26/120... I/1364065/2026

प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) का कार्यालय, झारखण्ड, राँची
Office of the Principal Accountant General (Audit), Jharkhand, Ranchi

संख्या- रा.भा.अनु./ले.प./90/पत्रिका पावती/2025-26/305 दिनांक:25-03-2026

सेवा में,
वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी (राजभाषा)
भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक का कार्यालय,
10, बहादुर शाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली- 110124

विषयः हिंदी पत्रिका "लेखापरीक्षा प्रकाश" के 150वें एवं 151वें अंक की ई-प्रति की पावती का प्रेषण।

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी गृह पत्रिका "लेखापरीक्षा प्रकाश" के 150वें एवं 151वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुआ। पत्रिका के दोनों अंकों के मुख पृष्ठ एवं आंतरिक पृष्ठ बहुत ही सुंदर एवं आकर्षक हैं तथा मुद्रण कार्य उच्च स्तरीय एवं लेख से संबंधित विषयानुसार चित्रों का चयन उत्तम है।

साथ ही, पत्रिका में संकलित सभी रचनाएँ विशेषकर 150वें अंक में श्री चाँद सिंह दहिया द्वारा लिखित "युद्ध की भयानकता", श्री अनुराग प्रभाकर की लेख "समाज में नारी की स्थितिः कल और आज", श्री राजीव भाटिया की कृति "नेतृत्व में प्रभावी संपर्क की शक्ति" एवं श्री रविन्द्र कुमार द्वारा लिखित कविता "मेरे देश की बेटी" आदि तथा 151वें अंक में समाहित श्री सुमित कुमार की लेख "पुस्तकों की महत्ता", सं.ग.श्रीमती द्वारा लिखित "कर्नाटक राज्य के प्रमुख दर्शनीय स्थल", श्री मुनिष भाटिया की कृति "बोझ नहीं हैं बुजुर्ग", श्री संदीप की लेख "संयुक्त परिवार" आदि रोचक एवं ज्ञानवर्धक प्रकृति की हैं।

पत्रिका के सफल संपादन हेतु संपादक मंडल को हार्दिक बधाई तथा पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

यह प्रधान महालेखाकार के अनुमोदन से जारी किया जाता है।

भवदीय,
Digitally signed by
Shailendra Kumar
Date: 25-03-2026
15:46:56
सहायक निदेशक (राजभाषा)

दूरभाष/Telephone: 0651-2411670/2413690 फैक्स/Fax: 0651-2412517/2413701 ई-मेल/e-mail: agaujharkhand@cag.gov.in

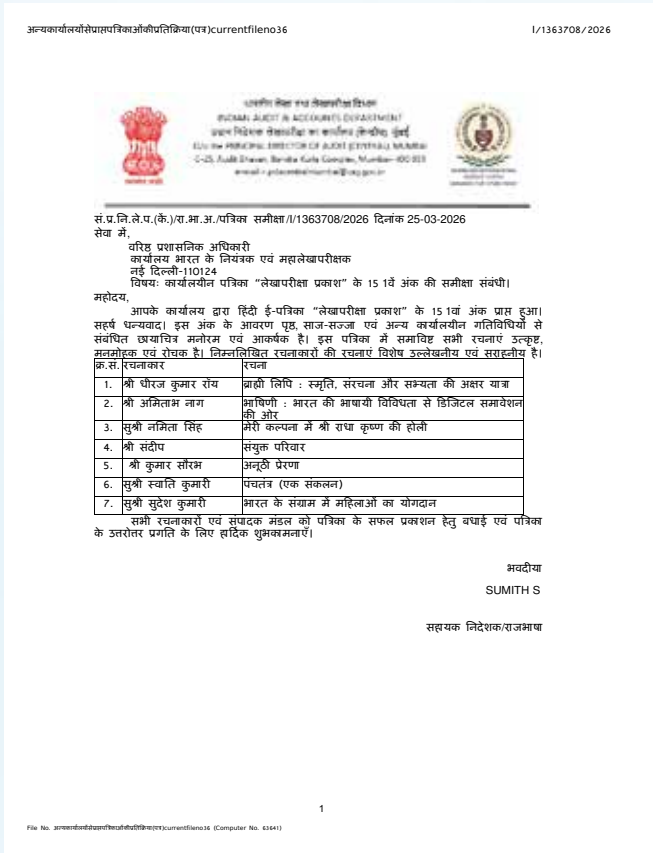

अन्यकार्यालयोंसेप्राप्तपत्रिकाओंकीप्रतिक्रिया(पत्र)currentfileno36 I/1363708/2026

सं.प्र.नि.ले.प.(कें.)/रा.भा.अ./पत्रिका समीक्षा/I/1363708/2026 दिनांक 25-03-2026

सेवा में,

वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी
कार्यालय भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक
नई दिल्ली-110124

विषयः कार्यालयीन पत्रिका "लेखापरीक्षा प्रकाश" के 15 1वें अंक की समीक्षा संबंधी।

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा हिंदी ई-पत्रिका "लेखापरीक्षा प्रकाश" के 15 1वां अंक प्राप्त हुआ। सहर्ष धन्यवाद। इस अंक के आवरण पृष्ठ, साज-सज्जा एवं अन्य कार्यालयीन गतिविधियों से संबंधित छायाचित्र मनोरम एवं आकर्षक है। इस पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएं उत्कृष्ट, मनमोहक एवं रोचक है। निम्नलिखित रचनाकारों की रचनाएं विशेष उल्लेखनीय एवं सराहनीय है।

क्र.सं.	रचनाकार	रचना
1.	श्री धीरज कुमार रॉय	ब्राह्मी लिपि : स्मृति, संरचना और सभ्यता की अक्षर यात्रा
2.	श्री अमिताभ नाग	भाषिणी : भारत की भाषायी विविधता से डिजिटल समावेशन की ओर
3.	सुश्री नमिता सिंह	मेरी कल्पना में श्री राधा कृष्ण की होली
4.	श्री संदीप	संयुक्त परिवार
5.	श्री कुमार सौरभ	अनूठी प्रेरणा
6.	सुश्री स्वाति कुमारी	पंचतंत्र (एक संकलन)
7.	सुश्री सुदेश कुमारी	भारत के संग्राम में महिलाओं का योगदान

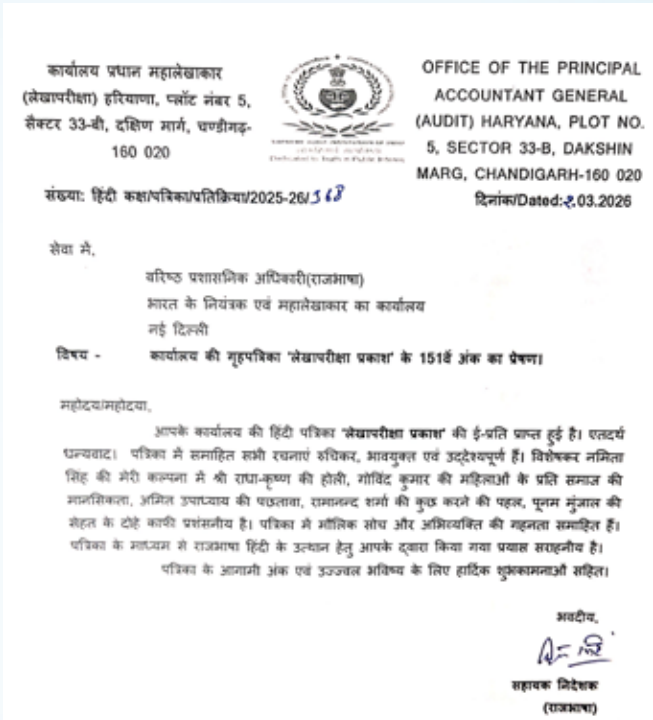

सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु बधाई एवं पत्रिका के उत्तरोत्तर प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीया
SUMITH S
सहायक निदेशक/राजभाषा

1

File No. अन्यकार्यालयोंसेप्राप्तपत्रिकाओंकीप्रतिक्रिया(पत्र)currentfileno36 (Computer No. 63641)

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) हरियाणा, प्लॉट नंबर 5, सैक्टर 33-बी, दक्षिण मार्ग, चण्डीगढ़-160 020

OFFICE OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT) HARYANA, PLOT NO. 5, SECTOR 33-B, DAKSHIN MARG, CHANDIGARH-160 020

संख्या: हिंदी कक्ष/पत्रिका/प्रतिक्रिया/2025-26/513 दिनांक/Dated:2.03.2026

सेवा में,

वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी(राजभाषा)
भारत के नियंत्रक एवं महालेखाकार का कार्यालय
नई दिल्ली

विषय - कार्यालय की गृहपत्रिका 'लेखापरीक्षा प्रकाश' के 151वें अंक का प्रेषण।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका **'लेखापरीक्षा प्रकाश'** की ई-प्रति प्राप्त हुई है। एतदर्थ धन्यवाद। पत्रिका में समाहित सभी रचनाएं रुचिकर, ज्ञानवर्धक एवं उद्देश्यपूर्ण हैं। विशेषकर नमिता सिंह की मेरी कल्पना में श्री राधा-कृष्ण की होली, गोविंद कुमार की महिलाओं के प्रति समाज की मानसिकता, अमित उपाध्याय की पछतावा, रामानन्द शर्मा की कुछ करने की पहल, पूनम मुंजाल की सेहत के दोहे काफी प्रशंसनीय है। पत्रिका में मौलिक सोच और अभिव्यक्ति की महत्ता समाहित हैं। पत्रिका के माध्यम से राजभाषा हिंदी के उत्थान हेतु आपके द्वारा किया गया प्रयास सराहनीय है।

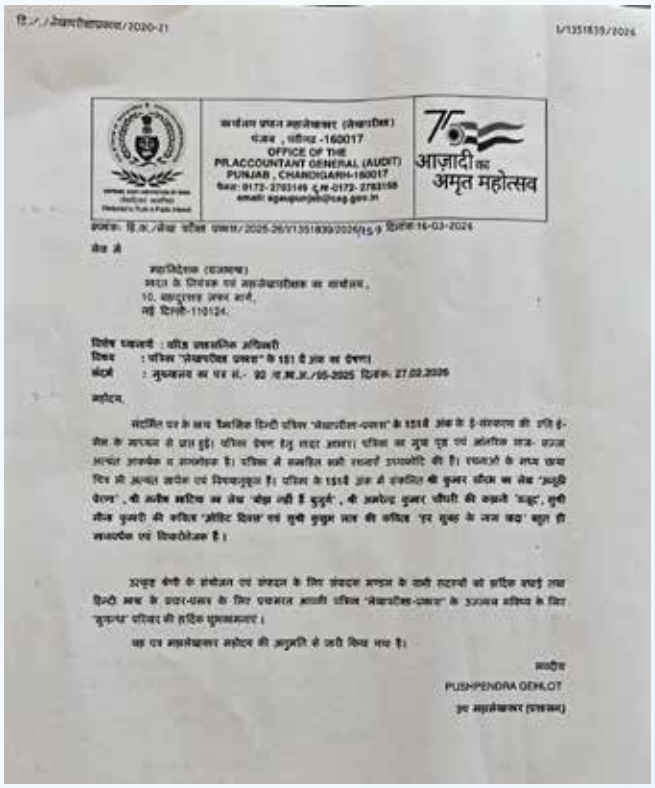

पत्रिका के आगामी अंक एवं उज्ज्वल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाओं सहित।

भवदीय,
सहायक निदेशक
(राजभाषा)

महोदय/महोदया,

संदर्भित पत्र के साथ त्रैमासिक हिन्दी पत्रिका 'लेखापरीक्षा-प्रकाश' के १५१वें अंक के ई-संस्करण की प्रति ई-मेल के माध्यम से प्राप्त हुई। पत्रिका प्रेषण हेतु सादर आभार। पत्रिका का मुख पृष्ठ एवं आंतरिक साज-सज्जा अत्यंत आकर्षक सार्थक एवं विषयानुकूल हैं। पत्रिका के १५१वें अंक में संकलित श्री कुमार सौरभ का लेख 'अनुठी प्रेरणा', श्री मनीष भाटिया का लेख 'बोझ नहीं हैं बुजुर्ग', श्री अमरेन्द्र कुमार चौधरी की कहानी 'वजूद', सुश्री मीना कुमारी की कविता 'ओडिट दिवस' एवं सुश्री कुसुम लता की कविता 'हर सुबह के नाम वादा' बहुत ही ज्ञानवर्धक एवं विचारोत्तेजक हैं।

उत्कृष्ट श्रीणी के संयोजन एवं संपादन के लिए संपादक मण्डल के सभी सदस्यों को हार्दिक बधाई तथा हिन्दी भाषा के प्रचार-प्रसार के लिए प्रयासरत आपकी पत्रिका 'लेखापरीक्षा-प्रकाश' के उज्ज्वल भविष्य के लिए 'सुगन्ध' परिवार की हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय,
उप महालेखाकार (प्रशासन)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) पंजाब, चंडीगढ़-१६००१७

OFFICE OF THE PR.ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT) PUNJAB, CHANDIGARH-160017

आज़ादी का अमृत महोत्सव

दिनांक 16-03-2026

PUSHPENDRA GEHLOT

लेख

साइबर अपराध की समस्या

कुमार अग्निवेश
कनिष्ठ अनुवादक, राजभाषा अनुभाग
प्रधान महालेखाकार का कार्यालय,
लेखापरीक्षा – द्वितीय , कर्नाटक,
बेंगलूरू

इंटरनेट ने समूचे विश्व की सीमाओं से परे ज्ञान, सूचना और संपर्क की क्रांति जनमानस को उपलब्ध कराया है। विचार और अभिव्यक्ति के विस्तारित फलक पर सुविधाओं की गति में उल्लेखनीय तेजी आई है, लेकिन विकृत मानसिकता के लोगों के कारण इस व्यवस्था के दुरुपयोग के ज्यादा मामले वर्तमान समय में प्रकाश में आ रहे हैं। वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में सभी वैश्विक सम्मेलनों में साइबर अपराध एक गंभीर चर्चा का विषय बन चुका है।

→ वस्तुतः इंटरनेट ने जहाँ एक ओर हमारी जिंदगी को रोमांचक और आसान बना दिया है, वहीं इसने ऐसे खतरे को भी जन्म दिया है, जो घटित होते हैं तो जिंदगी बेपटरी हो जाती है। यह पूर्णतया सत्य है कि इंटरनेट के माध्यम से समाज में लोगों एवं वांछित सूचनाओं के बीच दूरी अत्यंत कम हो गई है। आज त्वरित रूप से कोई भी सूचना प्राप्त करने हेतु हम इंटरनेट के माध्यम का प्रयोग कर सकते हैं।

→ इंटरनेट ने आज की आपाधापी में समय एवं संसाधन की व्यापक बचत की है जिसके द्वारा इनपर व्यय किए जाने वाले संसाधनों में भी कमी आई है। इंटरनेट की मदद

से मानवशक्ति का भी पहले से कहीं ज्यादा अच्छे और कुशलता से प्रयोग हो रहा है। इसकी सहायता से मानव जीवन में अनुशासन, सुलभता और सुनिश्चितता आई है| आज विश्व की अधिकांश आबादी इंटरनेट सेवाओं का लाभ उठा रही हैं।

→ लेकिन उपर्युक्त विशेषताओं से इतर आज साइबर अर्थात इंटरनेट सुविधाओं का व्यापक दुरुपयोग भी हो रहा है जिससे इंटरनेट पर अपराधों का एक विस्तृत एवं व्यापक संसार विकसित हो रहा है। इन अपराधों के कुछ उदाहरण निम्नांकित हैं –

1. ट्रोलिंग 2. सूचना की चोरी 3. डाटा चोरी 4. बच्चों एवं महिलाओं के खिलाफ यौन अपराध 5. पोर्नोग्राफी 6. कंप्यूटर को संक्रमित करने हेतु वायरस का आक्रमण 7. साइबर वित्तीय धोखाधड़ी

साइबर अपराधों को हम दो प्रकार से वर्गीकृत कर सकते हैं-

(i.) पहला प्रकार, जिसमें कम्पयूटर एक लक्ष्य के रूप में- इस प्रक्रिया में अन्य कम्पयूटरों पर आक्रमण हेतु एक

कम्प्यूटर का उपयोग किया जाता है। यथा- हैकिंग, वायरस वर्मर्स आक्रमण, DoS (सेवा देने से इंकार करना) आक्रमण इत्यादि

(ii) एक माध्यम के रूप में कंप्यूटर - इस प्रक्रिया में अपराध हेतु एक कंप्यूटर का उपयोग किया जाता है। साइबर आतंकवाद, बौद्धिक संपदा अधिकारों का उल्लंघन / आईपीआर उल्लंघन, बैंकिग धोखाधड़ी, इलेक्ट्रॉनिक फंड ट्रांसफर (ईएफटी) धोखाधड़ी, सेक्सटोर्शन, इत्यादि इस तरह के अपराध के उदाहरण हैं।

→ वर्तमान परिदृश्य में ऑनलाईन धोखाधड़ी के मामले तो दिनचर्या का हिस्सा बन गए है। इंटरनेट ने तमाम ऐसे खतरों को भी जन्म दिया है, जिनसे बचने के फिर आज तमाम सुरक्षा कवच और कानूनों की जरूरत महसूस हो रही है। इंटरनेट के द्वारा साइबर क्राइम के खतरों से विकसित देश भी अछूते नहीं हैं। भारत जैसा विकासशील देश तो इस समस्या से बुरी तरह ग्रसित है।

→ विश्व के प्रायः सभी देशों में इस तरह के अपराधों की संख्या बढ़ी है। वर्तमान परिदृश्य में पुलिस की जानकारी साइबर अपराधों को लेकर नगण्य ही है। विगत कुछ वर्षों में देश में कई बड़े साइबर अपराध हुए हैं जिसमें लोगों को करोड़ो रूपयों का वित्तीय नुकसान हुआ है ।

आज साइबर अपराधों के जैसे मामले सामने आ रहे है, उसे देखकर ऐसा प्रतीत होता है कि इंटरनेट का दुरुपयोग करना भी इंटरनेट के जानकार एक कला मानने लगे हैं। सुरक्षा प्रणाली को भेदने वाले हैकर्स होना भी सम्मानजनक हो गया है | किस्म-किस्म के वायरसों के जरिए साइबर सुरक्षा कवच को नुकसान पहुंचाना साइबर अपराध जगत में धड़ल्ले से हो रहा है।

आज किसी का चेहरा और किसी का धड़ जोड़कर मौर्फिंग के जरिए पोर्नोग्राफी,बाल यौन शोषण जैसे अपराध समाज में तेजी से पैर पसार रहे हैं। इंटरनेट के जरिए आतंकवाद को प्रोत्साहित करने की घटनाएँ प्रतिदिन देखने को मिल रही हैं | अब आतंकवादी बम के साथ-साथ 'माउस' से भी समाज में भय का माहौल व्याप्त करने लगे हैं | साइबर अपराध के द्वारा सामजिक माहौल भी ख़राब किया जा रहा है | शरारती तत्वों द्वारा जातीय उन्माद फैलाने के उद्देश्य से झूठी - बेबुनियाद

खबरों को प्रसारित किया जाता है जिससे समाज में तनाव की आशंका बनी रहती है तथा इससे आतंरिक अशांति की समस्या उत्पन्न होती है |

साइबर अपराधों पर नियंत्रण के उपाय :-

साइबर अपराध किसी एक देश की समस्या नहीं बल्कि एक वैश्विक समस्या है | इसका समाधान भी वैश्विक स्तर पर ही तलाशा जाना चाहिए | भारत में साइबर अपराधों को लेकर सजगता के सन्दर्भ में वर्ष 2000 में आईटी रेगुलेशन एक्ट, 2000 नाम से एक विशेष कानून बनाया गया है परंतु वर्तमान परिप्रेक्ष्य में यह कानून न तो तो प्रभावी है और न ही सख्त। साइबर अपराधों पर प्रभावी अंकुश लगाने के लिए इसमें अपेक्षित व्यवहारिकता और कठोरता का अभाव है। देश में ऑनलाइन सुरक्षा विशेषज्ञों के साथ ही साइबर विशेष थानों की संख्या नितांत रूप से अपर्याप्त है। यूरोप और अमेरिका जैसे विकसित देश साइबर अपराधियों से सबसे ज्यादा परेशान हैं। साइबर अपराधों के कारण अमेरिका और यूरोपीय देशों की अर्थव्यवस्था भी प्रतिकूल रूप से प्रभावित हुई है। साइबर अपराध पर निगरानी रखने हेतु इन देशों पर वित्तीय भार बढ़ा है।

साइबर अपराधों से जुड़ा सबसे जटिल पक्ष यह है कि इन्हें विश्व के किसी भी कोने में बैठकर अंजाम दिया जा सकता है। साइबर अपराध के समय इंटरनेट को सिग्नल्स किस सर्वर से मिले, यह जानना कठिन है। और फिर यह तो और भी मुश्किल है, कि कोई देश किसी दूसरे के सर्वर से संचालित हो रही वेबसाइट को ब्लॉक कर दे। हर देश का आईटीएक्ट अलग होता है। किसी आपत्तिजनक या संदेहास्पद वेबसाइट को ब्लॉक करने से उस देश की सरकार ही मना कर सकती है।

→ विदेशों में सरकारें किसी वेबसाइट को ब्लॉक करने की बजाए उसे सुधारने में विश्वास रखती है। जबकि भारत में वेबसाइट को ही बंद करने की मांग शुरू हो जाती है। भारतीय आईटीएक्ट में यह प्रावधान है कि किसी वेबसाइट को तबतक बंद नहीं किया जा सकता। जब तक की उस पर डाली जा रही सामग्री सूचनाएं राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए खतरा न हों। किसी वेबसाइट को बंद कर देने से समस्या का समाधान नहीं हो जाता। लेकिन अगर मामला राष्ट्रीय सुरक्षा से जुड़ा है, तो विधि मंत्रालय भी मानता है कि कोई भी वेबसाइट हो, उसे ब्लॉक कर देना ही उचित समाधान है।

→ विश्व के अधिकांश देशों में रैनसमवेयर हमले के कारण करोड़ों की संख्या में कंप्यूटर प्रभावित हुए हैं । रेनसमवेयर के प्रभाव से उपयोगकर्ता किसी फाइल को या पूरे कंप्यूटर का ही प्रयोग नहीं कर पाता | इन्हें पुनः सक्रिय करने हेतु साइबर अपराधियों द्वारा मोटी रकम की मांग की जाती है। साइबर अपराधियों के चुंगल से बचने हेतु इंटरनेट का सावधानी से प्रयोग हो एकमात्र समाधान है। जिसमें कुछ सावधानियाँ निम्नलिखित है-

→ ईमेल माध्यम से हमारे कंप्यूटर को सर्वाधिक संक्रमित होने की आशंका होती है | किसी भी अनजाने ई-मेल प्राप्त होने की स्थिति में पहले उसकी जाँच-पड़ताल करें तथा इसके साथ संलग्नक को बिना जाँच-पड़ताल के डाउनलोड न करें। संलग्नक जो ई-मेल के साथ आते हैं उनके माध्यम से साइबर अपराधियों द्वारा मालवेयर के माध्यम से कंप्यूटर को संक्रमित करने का प्रयास किया जाता है।

→ किसी भी अनजान व्यक्ति को ऑनलाइन माध्यम में अपना पूरा नाम, सही पता, फोन नंबर, बैंक खाते या अन्य वित्तीय जानकारी उपलब्ध न कराएँ क्योंकि उनकी जानकारी की मदद से साइबर अपराधी लोगों को वित्तीय

नुकसान पहुंचा सकते हैं। आज के दौर में यह अपराध ज्यादा सुर्ख़ियों में रहता है |

→ साइबर अपराधी अपने आप को किसी कंपनी / संस्था का अधिकारी बता कर अगर ई-मेल या पासवर्ड माँगता है या किसी एप को इंस्टाल करने को कहता है जिससे अन्यत्र जगह से कंप्यूटर मोबाइल को हैंडल किया जा सकता है, तो ऐसे एप कदापि इंस्टाल न करें।

→ ऑनलाइन शॉपिंग जिसके माह माध्यम से कोई व्यक्ति किसी पोर्टल/ वेबसाइट/ मोबाइल के द्वारा कोई खरीददारी करता है यहाँ साइबर अपराधियों द्वारा ई-कॉमर्स के क्षेत्र में प्रचलित कंपनियों के नाम से मिलते-जुलते बेबसाइट बनाकर उपभोगकताओं के साथ वित्तीय धोखाधड़ी की जाती है।

→ साइबर कैफे में कोई भी इंटरनेट संबंधी कार्य कराने के उपरांत अपनी निजी फाइलें डिलीट अवश्य करवाएं क्योंकी आज के दौर में डार्क वेब (डार्क वेब इंटरनेट का वह हिस्सा है जिसे गूगल, बिंग या याहू जैसे सामान्य सर्च इंजन **इंडेक्स नहीं करते** हैं। यह एक छिपा हुआ नेटवर्क है जिसे एक्सेस करने के लिए **टॉर (Tor)** जैसे विशेष ब्राउज़र की आवश्यकता होती है) के माध्यम से डाटा तीसरे पार्टी को बेचा जा रहा है।

→ आज के दौर में सोशल मीडिया बहुत प्रचलित है जिसके माध्यम से फेसबुक, इन्स्टाग्राम, व्हाट्सएप , आदि प्लेटफार्म पर हम अपना व्यक्तिगत खाता स्थापित करते हैं तथा वैश्विक स्तर पर विभिन्न देशों के लोगों से आभासी माध्यम (वर्चुअल माध्यम) में संपर्क स्थापित करते हैं | इन प्लेटफार्मों पर साइबर अपराधी आपको अपना दोस्त बनाकर निजी एवं गोपनीय जानकारी संग्रह करना चाहता है, अतः सोशल मीडिया पर किसी अनजान से दोस्ती करने पर निजी एवं गोपनीय जानकारी जानकारी साझा करने से बचना चाहिए |

- इंटरनेट पर मौजूद किसी भी लुभावने प्रस्ताव जैसे- पैसों को बढ़ाने का, नौकरी से संबंधित विज्ञापनों, इत्यादि से बच के रहना चाहिए क्योंकी इसमें वित्तीय नुकसान का खतरा मौजूद रहता है। हमेशा आधिकारिक वेबसाइट के माध्यम से नौकरी के लिए आवेदन एवं बैंकिंग कार्य करना चाहिए।

*देश में साइबर अपराधों से प्रभावी तौर पर निपटने के लिए कई तरीके के कार्य किए जा रहें हैं, यथाः-

→ बाल अश्लीलता और ऑनलाइन माध्यम से ट्रोलिंग से बचने के लिए भारत सरकार द्वारा यौन अपराधों से बच्चों का संरक्षण (पोक्सो) अधिनियम 2012 में विधिक प्रावधान किए गए हैं | सूचना प्रौद्योगिकी अधिनियम, 2000 में बच्चों के विरुद्ध साइबर अपराध से सम्बंधित प्रावधान किए गए हैं | किशोर न्याय (बच्चों की देखभाल और संरक्षण) अधिनियम, 2015 दुर्व्यवहार मामलों ऑनलाइन रिपोर्टिंग की सुविधा प्रदान करता है| भारतीय साइबर अपराध समन्वय केंद्र, बाल शोषण समेत साइबर अपराधों के खिलाफ विधिक प्रवर्तन का प्रयास करता है |

→ साइबर अपराधों से व्यापक और समन्वित तरीके से निपटने के लिए केंद्र सरकार कई कदम उठा रही है जिसमें निम्नलिखित शामिल हैं –

1. गृह मंत्रालय ने देश के अन्दर घटित होने वाले सभी प्रकार के साइबर अपराधों से निपटने हेतु एक सम्बद्ध कार्यालय के रूप में 'भारतीय साइबर अपराध समन्वय केंद्र (I4C)' की स्थापना की है |

2. https: cybercrime.gov.in पोर्टल भारतीय साइबर अपराध समन्वय केंद्र के एक भाग के रूप में कार्य करता है तथा साइबर अपराध से संबंधित हरेक घटना को रिपोर्ट करने में भारतीय नागरिकों की सहायता करता है | उक्त पोर्टल पर दर्ज साइबर अपराधों की घटनाओं का प्राथमिक सूचना रिपोर्ट (एफ़आईआर) में परिवर्तन करना एवं बाद की कार्रवाई सम्बंधित राज्य/केंद्र शासित प्रदेश की कानून प्रवर्तन एजेंसियां द्वारा की जाती है क्योंकि

भारतीय संविधान की सातंवी अनुसूची के अनुसार 'पुलिस और विधि – व्यवस्था राज्य के विषय हैं |

3. भारतीय साइबर अपराध समन्वय केंद्र (I4C) के अंतर्गत नागरिक वित्तीय साइबर धोखाधड़ी रिपोर्टिंग और प्रबंधन प्रणाली द्वारा वित्तीय धोखाधड़ी को तत्काल रिपोर्टिंग और धन की हेराफेरी रोकने हेतु एक टोल-फ्री हेल्पलाइन नंबर '1930' प्रारंभ किया गया है |

4. नई दिल्ली में राज्य/केंद्र सरकार के पुलिस अधिकारियों को शुरूआती चरण की साइबर फॉरेंसिक सहयता प्रदान करने के लिए अत्याधुनिक 'राष्ट्रीय साइबर फॉरेंसिक प्रयोगशाला (जांच) की स्थापना की गई है |

5. आज साइबर अपराध के दौर में डिजिटल अरेस्ट सबसे ज्यादा चर्चा में है । डिजिटल अरेस्ट में साइबर अपराधियों द्वारा पीड़ित को विडियो कॉल कर के उनको अपने आप को भारत सरकार के विभिन्न प्रवर्तन एजेंसी या अन्य अधिकारी के रूप में प्रतिरूपित करते हुए डिजिटल अरेस्ट का डर दिखाया जाता है और फिर उससे मोटी रकम वसूला जाता है | इस अपराध के जागरूकता हेतु डिजिटल अरेस्ट स्कैम पर एक व्यापक अभियान चलाया है जिसके अंतर्गत विभिन्न डिजिटल एवं प्रिंट मीडिया, सोशल मीडिया के माध्यम से लोगों को जागरूक किया जा रहा है | माननीय प्रधान मंत्री महोदय ने आकाशवाणी से प्रसारित होने वाली मन की बात के एक एपिसोड में भी लोगों को डिजिटल अरेस्ट के स्कैम के बारें में लोगों को बताया है |

6. दूरसंचार विभाग द्वारा साइबर अपराधों के प्रति जागरूकता बढाने हेतु क्षेत्रीय भाषा में कॉलर ट्यून के माध्यम से लोगों को जागरूक किया जा रहा है |

7. उपर्युक्त वर्णित तथ्यों के इतर भारत सरकार द्वारा साइबर अपराध जागरूकता हेतु कई कदम उठाए गए हैं | जैसे- एसएमएस के माध्यम से संदेशों का प्रसार, भारतीय साइबर अपराध समन्वय केंद्र का ट्विटर, फेसबुक अकाउंट, डिजिटल गिरफ्तारी घोटाले पर समाचार पत्र विज्ञापन, डिजिटल गिरफ्तारी और साइबर अपराधियों के अन्य तौर-तरीकों पर दिल्ली मेट्रो में घोषणा इत्यादि |

निष्कर्ष :

इंटरनेट के तमाम सुविधाओं के दौर में हमें इसके दुरुपयोग संबंधी समस्याओं का समग्र विश्लेषण करते हुए इसका समाधान ढूंढना चाहिए | आज साइबर अपराध वैश्विक स्तर की समस्या है। आम जनमानस को सरकार से यह उम्मीद चाहिए कि भविष्य में एक मजबूत साइबर सुरक्षा तंत्र को विकसित करे तथा साइबर अपराध पर रोक लगाए | आम जनता को भी अपने स्तर पर सतर्क एवं जागरूक होना होगा तभी साइबर अपराध पर नियंत्रण स्थापित हो सकेगा |

(लेख)

कलाम

श्रीमती ए. राधा
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा
(केंद्रीय), हैदराबाद

ए.पी.जे अब्दुल कलाम का जीवन सबक: "आपको अपने सपनों को साकार करने से पहले सपने देखने होंगे," ए.पी.जे अब्दुल कलाम ने कहा - एक ऐसा नाम जो हमारे दिलों में हमेशा याद रहेगा!

कलाम का जीवन हमें सिखाता है कि अगर आप मेहनत करने को तैयार हों, तो कोई भी सपना बड़ा नहीं होता। उन्होंने रामेश्वरम में एक अखबार वाले के रूप में शुरुआत की और आगे चलकर भारत के राष्ट्रपति बने। उनका मानना था कि

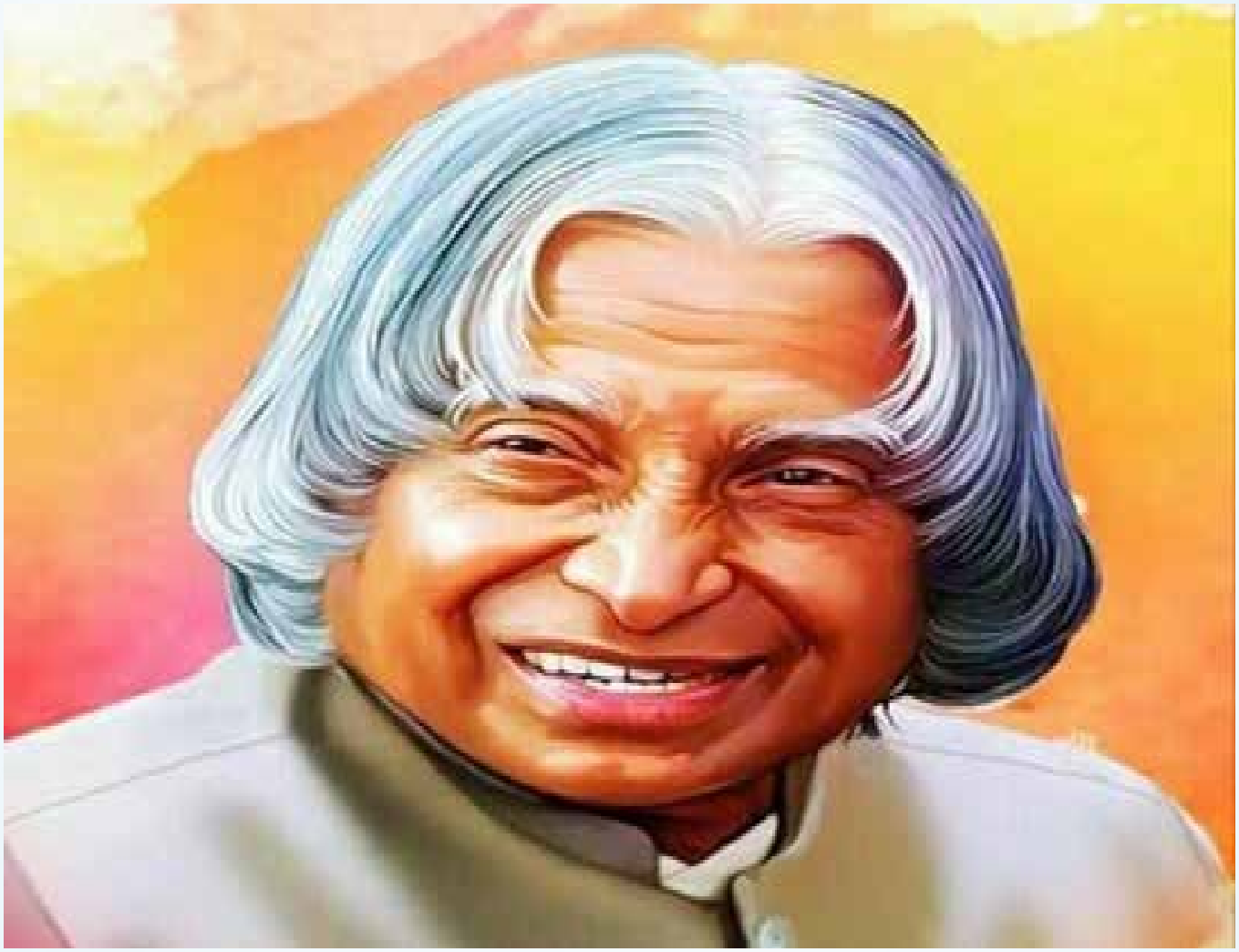

सपने वो नहीं होते जो आप सोते समय देखते हैं, बल्कि वो होते हैं जो आपको सोने नहीं देते। कलाम को अपने करियर में कई असफलताओं का सामना करना पड़ा—रॉकेट प्रक्षेपण में असफलता, अस्वीकृत परियोजनाएँ—लेकिन उन्होंने हर असफलता को एक सबक की तरह लिया। उनका मानना था कि असफलता सफलता की ओर पहला कदम है और इस बात का प्रमाण है कि आप प्रयास कर रहे हैं। अपनी प्रसिद्धि के बावजूद, कलाम एक सादा जीवन जीते थे। उनके पास बहुत कम संपत्ति थी, वे राजनेताओं से मिलने के बजाय छात्रों से मिलना पसंद करते थे, और हमेशा अपनी उपलब्धियों का श्रेय अपनी टीम को देते थे। सफलता ने उन्हें कभी अहंकारी नहीं बनाया। चाहे मिसाइलों का निर्माण हो या भारत के शिक्षा के दृष्टिकोण को आकार देना, कलाम का कार्य हमेशा राष्ट्रीय विकास पर केंद्रित रहा। उन्होंने दिखाया कि सच्चा नेतृत्व सेवा में निहित है, सत्ता में नहीं।

कलाम जीवन भर एक विद्यार्थी रहे—जिज्ञासु, खुले विचारों वाले और युवा या वृद्ध, किसी से भी सीखने को उत्सुक। उनका निधन एक व्याख्यान देते हुए हुआ, जो ज्ञान के प्रति उनकी आजीवन प्रतिबद्धता का प्रतीक है। डॉ. ए.पी.जे अब्दुल कलाम का एक छोटे से कस्बे में अखबार बेचने वाले लड़के से लेकर भारत के **"मिसाइल मैन"** और राष्ट्रपति बनने तक का सफ़र दर्शाता है कि कड़ी मेहनत और लगन आपको बुलंदियों तक पहुँचा सकती है—लेकिन सच्ची महानता विनम्रता से मापी जाती है। भारत रत्न प्राप्त करने और देश के सर्वोच्च पद पर आसीन होने के बाद भी, कलाम सादगी से रहते थे, अपना सामान खुद ढोते थे, और हमेशा अपनी सफलता का श्रेय अपनी टीम को देते थे। उनका जीवन हमें सिखाता है कि उपलब्धियां तभी सही मायने में सार्थक होती हैं जब हम जमीन से जुड़े रहें, दूसरों का सम्मान करें और अपनी सफलता का उपयोग समाज की सेवा के लिए करें।

मिसाइल मैन – ए.पी.जे अब्दुल कलाम से सीखने योग्य जीवन के सबक -

1. कड़ी मेहनत और समर्पण

अख़बार बेचने से लेकर राष्ट्रपति बनने तक कलाम का सफ़र दर्शाता है कि निरंतर प्रयास से किसी भी बाधा को पार किया जा सकता है।

2. सफलता में विनम्रता

वैश्विक मान्यता के बावजूद, वह सादगी से रहते थे, सुलभ रहते थे और हमेशा अपनी टीम को श्रेय देते थे।

3. समाज सेवा

उन्होंने अपना जीवन विज्ञान, रक्षा और शिक्षा के क्षेत्र में भारत की प्रगति के लिए समर्पित कर दिया, उनका मानना था कि सच्चा नेतृत्व दूसरों की सेवा करने में निहित है।

4. आजीवन सीखना

कलाम जिज्ञासु और खुले विचारों वाले रहे, हमेशा नए ज्ञान की तलाश में रहते थे - यहाँ तक कि अपने अंतिम क्षणों में भी, वे छात्रों को व्याख्यान दे रहे थे।

5. दूसरों को प्रेरित करना

वह युवा मन को प्रज्वलित करने में विश्वास रखते थे, अक्सर कहते थे, **"सपने देखो, सपने देखो, सपने देखो—सपने विचारों में बदल जाते हैं और विचार क्रिया में परिणत होते हैं।"**

यही कारण है कि कलाम जैसे महान व्यक्तित्व हमें यह कहने को मजबूर करते हैं - **कलाम तुझे सलाम!**

लेखा परीक्षा स्तम्भ - पूर्वोत्तर कनेक्ट

आरती शर्मा
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा
(केंद्रीय व्यय) कृषि खाद्य एंव जल
संसाधन, नई दिल्ली

पूर्वी हिमालय में बसा भारत का पूर्वोत्तर क्षेत्र मनमोहक प्राकृतिक दृश्यों, विविध संस्कृतियों एवं समृद्ध आदिवासी विरासत का केंद्र है। यह क्षेत्र प्राकृतिक संसाधन एवं जैव विविधता से संपन्न है जहाँ वनस्पतियों एवं जीवों की कई दुर्लभ एवं स्थानिक प्रजातियाँ पाई जाती हैं। उष्णकटिबंधीय वर्षावनों से लेकर अल्पाइन घास के मैदानों तक, इसके विविध तंत्र पारिस्थितिक संतुलन बनाए रखने एवं जलवायु परिवर्तन से निपटने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

पूर्वोत्तर क्षेत्र (एनईआर) में आठ राज्य शामिल हैं: अरुणाचल प्रदेश, असम, मणिपुर, मेघालय, मिज़ोरम, नागालैंड, सिक्किम एवं त्रिपुरा। यह क्षेत्र सांस्कृतिक एवं जातीय रूप से विविध है एवं यहाँ 200 से ज़्यादा जातीय समूह रहते हैं जिनकी अपनी विशिष्ट भाषाएँ, बोलियाँ एवं सामाजिक-सांस्कृतिक पहचान है।

यह कहने में अतिश्योक्ति न होगी कि संस्कृतियों, परंपराओं एवं भाषाओं में समृद्ध पूर्वोत्तर क्षेत्र, वैश्विक मंच पर भारत की बहुलवादी पहचान एवं सौम्य शक्ति में महत्वपूर्ण योगदान देती है।इस क्षेत्र की अनूठी सांस्कृतिक विरासत, जिसमें इसका संगीत, नृत्य, हस्तशिल्प एवं पाक परंपराएँ शामिल हैं, सांस्कृतिक पर्यटन की अपार संभावनाएँ प्रदान करती हैं।

पूर्वोत्तर भारत में कई वन्यजीव अभयारण्य एवं राष्ट्रीय उद्यान हैं, जिनमें असम का काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान (एक सींग वाले गैंडों का घर), मानस राष्ट्रीय उद्यान एवं अरुणाचल प्रदेश का नामदफा राष्ट्रीय उद्यान शामिल हैं। अन्य प्रमुख स्थल मणिपुर का केबुल लामजाओ राष्ट्रीय उद्यान, मेघालय का बलपक्रम राष्ट्रीय उद्यान एवं नागालैंड का इंतांकी राष्ट्रीय उद्यान हैं। ये संरक्षित क्षेत्र वर्षावनों से लेकर घास के मैदानों तक, विविध भू-दृश्यों में विविध प्रजातियों का संरक्षण करते हैं।

इन्ही पहलुओं को ध्यान में रखते हुए, "नॉर्थ ईस्ट कनेक्ट" के शीर्षक से एक नए स्तम्भ का आरम्भ किया गया है। यह स्तम्भ आठ पूर्वोत्तर राज्यों में से प्रत्येक की समृद्ध सांस्कृतिक परम्परा, रमणीय पर्यटक स्थल, पाककला एवं वन्य जीवन विविधता को कवर करने का प्रयास करता है। नार्थ ईस्ट कनेक्ट में सर्वप्रथम असम राज्य की जैव विविधता, पारम्परिक भोजन, एवं रमणीय पर्यटक स्थल के विषय में बताया गया है।

असम

असम भारत की दृष्टि से सबसे बड़ा पूर्वोत्तर राज्य है एवं क्षेत्रफल की दृष्टि से दूसरा सबसे बड़ा राज्य है।असम का क्षेत्रफल 78,438 वर्ग किमी (30,285 वर्ग मील) है। राज्य की सीमा उत्तर में भूटान एवं अरुणाचल प्रदेश राज्य से, पूर्व में नागालैंड, अरुणाचल प्रदेश एवं मणिपुर से, दक्षिण में मेघालय, त्रिपुरा, मिजोरम एवं बांग्लादेश से एवं पश्चिम में पश्चिम बंगाल से लगती है। असम का एक महत्वपूर्ण भौगोलिक पहलू यह है कि इसमें भारत के छह भौतिक प्रभागों में से तीन शामिल हैं - उत्तरी हिमालय (पूर्वी पहाड़ियाँ), उत्तरी मैदान (ब्रह्मपुत्र का मैदान), एवं दक्कन का पठार (कार्बी आंगलोंग)।

असम के राष्ट्रीय उद्यानों में पाई जाने वाली जैव विविधता, प्रमुख पर्यटक स्थल, एवं पारम्परिक व्यंजनों की विभिन्नता के विषय में यह लेख विस्तृत वर्णन करता है।

असम के वन्यजीव अभयारण्य/ राष्ट्रीय उद्यान: असम के वन्यजीव अभयारण्यों विविध प्रकार के वन्य जीवों का निवास स्थान हैं। यहाँ के प्रमुख राष्ट्रीय उद्यानों में काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान, मानस राष्ट्रीय उद्यान, डिब्रू - सैखोवा राष्ट्रीय उद्यान, नामेरी राष्ट्रीय उद्यान, ओरंग राष्ट्रीय उद्यान एवं बाघ अभयारण्य (ONPTR), देहिंग पटकाई राष्ट्रीय उद्यान एवं रायमोना राष्ट्रीय उद्यान है।

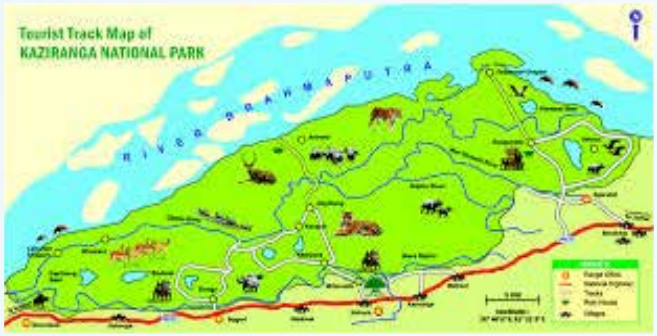

<u>वन्य जीव</u> - असम के वन्यजीव अभयारण्यों विविध प्रकार के वन्य जीवों का निवास स्थान हैं। यहां के अभयारण्य दुनिया के 70% से ज़्यादा एक सींग वाले का निवास स्थान है। इसके अतिरिक्त बाघ, जंगली भैंस, दलदली हिरण एवं कछुओं की भी प्रजातियाँ भी पाई जाती हैं। अन्य महत्वपूर्ण वन्यजीव हैं - तेंदुआ, भारतीय सिवेट, छोटी सांभर, हॉग हिरण, गौर, हॉग बेजर, हूलॉक गिब्बन, कैप्ड लंगूर, असमिया मकाक, रीसस मकाक, गंगा डॉल्फिन आदि।

पक्षी: यहाँ 25 वैश्विक रूप से संकटग्रस्त एवं 21 निकट-संकटग्रस्त पक्षी प्रजातियाँ पाई जाती हैं। यहाँ के अभयारण्यों में 480 पक्षी प्रजातियों की पहचान एवं अभिलेखन किया जा चुका है जिनमे से प्रमुख है बाज, बंगाल फ्लोरिकन, हॉर्नबिल, ऑस्प्रे पेलिकन आदि।

जलीय वनस्पति एवं जीव: असम के अभयारण्यों में 150 से अधिक बारहमासी जल निकाय स्थित हैं, जहाँ जल स्तर में समय-समय पर उतार-चढ़ाव होता रहता है, जिसके परिणामस्वरूप एक अत्यंत समृद्ध जलीय वनस्पति विविधता उत्पन्न होती है। अब तक वनस्पतियों की 32 से अधिक प्रजातियों की पहचान की जा चुकी है। मछलियों की 60 से अधिक प्रजातियाँ दर्ज की गई हैं।

असम के व्यंजन : असम भूमि की भौगोलिक विविधता की तरह व्यंजन भी व्यापक हैं एवं व्यंजन जगत में अपनी अलग पहचान रखते हैं। असम के पारम्परिक व्यंजन अद्वितीय, सरल एवं स्वादिष्ट हैं। इन व्यंजनों की इतनी विविधता है कि कोई भी अभिभूत हो जाए।

असमिया भोजन की सबसे अच्छी बात यह है कि इन व्यंजनों की सामग्री स्थानीय स्तर पर उगाई जाती है। आपको हर घर में, खासकर ग्रामीण इलाकों में, विभिन्न प्रकार की पत्तेदार सब्ज़ियाँ मिल जाएँगी। चेरी टमाटर, धनिया, बैंगन, विभिन्न

प्रकार की हरी पत्तेदार सब्ज़ियाँ, मिर्च, पुदीने के पत्ते एवं कई अन्य सब्ज़ियाँ, हर घर के किचन गार्डन में स्थानीय रूप से उगाई और बोई जाती हैं। बगीचे से प्राप्त जैविक सब्ज़ियाँ, पारंपरिक असमिया व्यंजनों के स्वाद को और भी बढ़ा देती हैं।स्थानीय असमिया व्यंजन सब्ज़ियों, मसालों, दालों एवं सही मात्रा में प्रोटीन का एक बेहतरीन मिश्रण है चाहे वो लोकप्रिय असमिया माटी दाल खार हो, लौकी की करी हो, पोइता भात हो या बिहू पर्व पर बनाये जाने वाले व्यंजन।

असम के धार्मिक स्थल

माँ कामाख्या देवी मंदिर: माँ कामाख्या या कामेश्वरी, कामनाओं की प्रसिद्ध देवी हैं, जिनका प्रसिद्ध मंदिर असम राज्य की राजधानी गुवाहाटी के पश्चिमी भाग में नीलाचल पर्वत के मध्य में स्थित है। माँ कामाख्या देवालय को पृथ्वी के 51 शक्तिपीठों में सबसे पवित्र एवं प्राचीन माना जाता है।

बौद्ध मठ - असम में बौद्ध धर्म : बौद्ध धर्म एक ऐसा धर्म है जिसने असम की विविध संस्कृतियों को समृद्ध किया है।

नाहरकटिया, मार्गेरिटा, तीताबोर एवं सिलोनीजन असम में बौद्ध मठों के महत्वपूर्ण स्थान हैं एवं जो लोग महत्वपूर्ण बौद्ध मठों को देखना चाहते हैं, वे वहां विभिन्न समुदायों में रह सकते हैं एवं जीवन भर इसका अनुभव कर सकते हैं। इन स्थानों पर जाने का सबसे अच्छा समय बुद्ध पूर्णिमा के दौरान होता है।

रमणीय पर्यटक स्थल : सात बहनों वाले राज्यों में से एक, असम पूर्वोत्तर भारत के सबसे खूबसूरत रत्नों में से एक है। हरे-भरे एवं विशाल चाय के बागानों, बर्फ से ढकी हिमालय की चोटियों एवं असंख्य नदियों, झरनों एवं झीलों से भरपूर, यह दुनिया भर से पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करता है। असम के हिल स्टेशन अपेक्षाकृत अनोखे एवं अनछुए हैं, लेकिन घने जंगलों, लहरदार मैदानों एवं समृद्ध सांस्कृतिक विरासत वाली यह धरती देखने लायक है।

असम के शांत एवं मनोरम हिल स्टेशन: असम के सिर्फ़ हिल स्टेशन ही आपको मंत्रमुग्ध नहीं करेंगे। असम एवं दक्षिण पूर्वी देशों की संस्कृति एवं जीवनशैली के बीच समानताएँ भी आपको अचंभित कर देंगी।

असम के चाय बागान: असम के चाय बागानों के प्रमुख पर्यटन स्थलों में डिब्रूगढ़ एवं जोरहाट जिले शामिल हैं, जिन्हें क्रमशः भारत का "चाय नगर" एवं चाय उत्पादन का केंद्र कहा जाता है। पर्यटक डिब्रूगढ़ के मोनोहारी टी एस्टेट एवं जोरहाट के थेंगल मनोर जैसे प्रसिद्ध बागानों में चाय पर्यटन का अनुभव कर सकते हैं, जहाँ चाय बागानों, कारखानों के निर्देशित भ्रमण एवं चाय चखने के अवसर उपलब्ध हैं। अन्य उल्लेखनीय बागानों में जोरहाट का मनकोटा टी एस्टेट एवं

एशिया का सबसे बड़ा चाय बागान, विश्वनाथ चरियाली का मोनाबारी टी एस्टेट शामिल हैं।

असम के शांत एवं मनोरम हिल स्टेशनों की सूची यहाँ दी गई है, जिन्हें आप यहाँ रहते हुए देखना चाहेंगे।

1. हाफलोंग - शांत एवं मनोरम	4. दिफू - प्रकृति प्रेमियों के लिए एक शांतिपूर्ण आश्रय स्थल	7. उमरंगसो - एक अछूता सुरम्य सौंदर्य
2. माईबांग - कछारी साम्राज्य के अवशेषों के लिए प्रसिद्ध	5. दिसपुर - राजधानी	8. सुआलकुची - शिल्पकारों का शहर
3. लीलाबाड़ी - प्रकृति की सुंदरता को समेटे हुए	6. मोरीगाँव - शांत शहर	9. बोंगाईगाँव - गुफाओं एवं मंदिरों का शहर

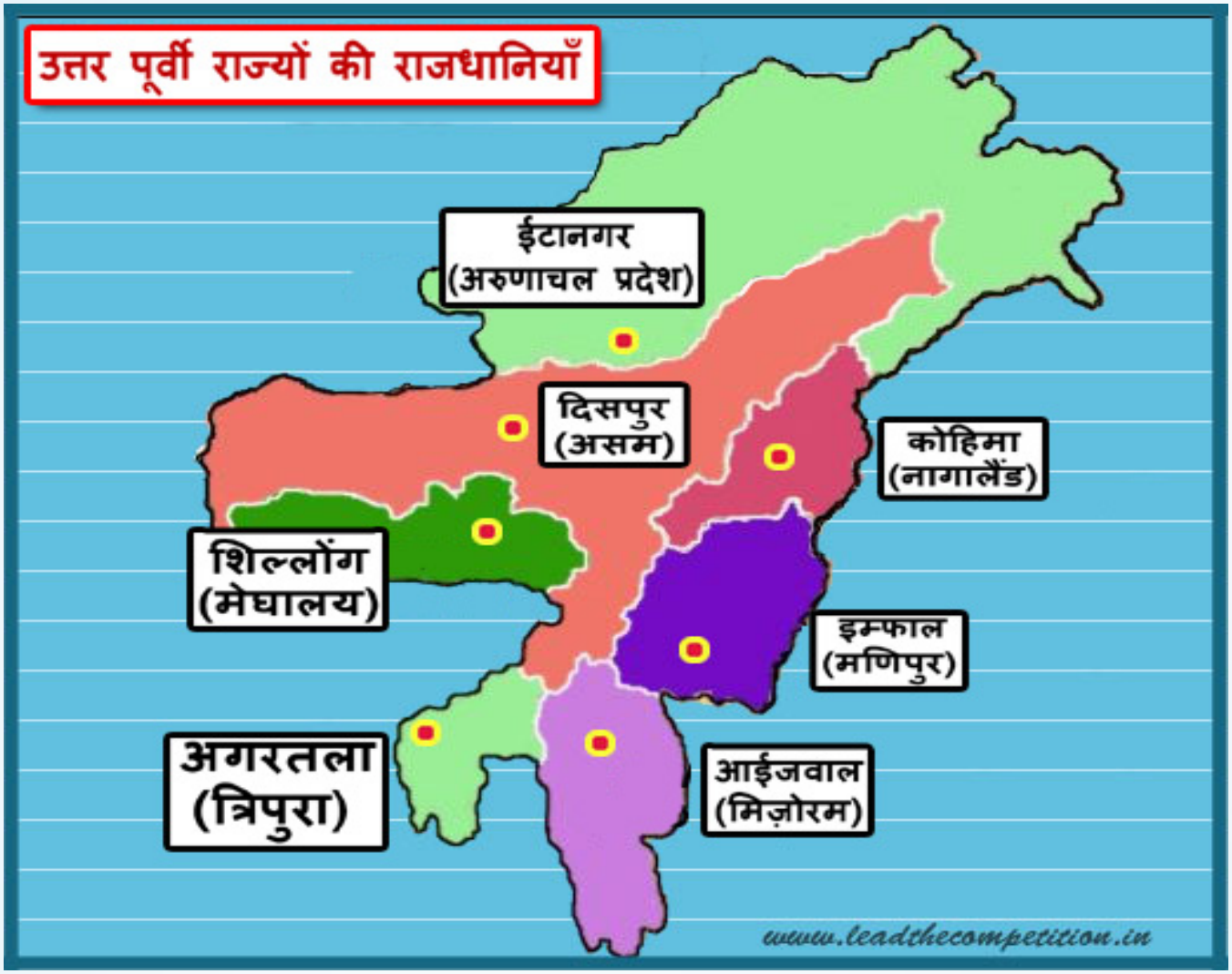

ज्ञान, भक्ति और माया

कृष्ण मुरारी जयपुरियार
वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी
भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक का कार्यालय
9, दीन दयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली

जीवात्मा का एक परम लक्ष्य है ब्रम्ह को समझना या उसके निकट जाना, परन्तु यह उसके लिए एक कठिनतम प्रयास है क्योंकि जीव को ईश्वर तक पहुँचने के लिए उसकी माया से पार पाना होता है अन्यथा वह जीवन पर्यन्त इस माया में उलझा रह जाता है और कभी भी ईश्वर के समीप नहीं पहुँच पाता है। रामचरितमानस में गोस्वामी तुलसीदास जी ने श्री राम के वन गमन का वर्णन करते समय बड़ा ही सुन्दर उदाहरण दिया है ।

"उभय बीच सिय सोहति कैसी। ब्रह्म जीव बिच माया जैसी॥"

अर्थात भगवान राम और भैया लक्ष्मण के बीच सीता जी ऐसे शोभायमान हो रहीं है जैसे सचमुच ब्रम्ह और जीव के बिच माया चल रही हो। इन पंक्तियों से स्पष्ट है प्रभु श्रीराम जो परम ब्रम्ह के प्रतीक हैं, के पीछे जीव रूपी लक्ष्मण जी उनका अनुगमन कर रहे हैं परन्तु इन दोनों के बीच माता सीता उस परम ब्रम्ह की माया के रूप में चल रही हैं।

तो क्या माया कभी भी जीव को ईश्वर तक नहीं पहुंचने देती है या ईश्वर को पाने के लिए कोई मार्ग है भी या नहीं ? इसका उत्तर भी हमारे शास्त्रों में वर्णित है और वह है ज्ञान अथवा भक्ति। अर्थात ईश्वर पाने के दो मुख्य मार्ग है एक मार्ग ज्ञान का है तो दूसरा भक्ति का। इन दोनों का अंतिम लक्ष्य ईश्वर की प्राप्ति या ब्रम्ह का ज्ञान ही है।

गीता में भगवान् श्रीकृष्ण ने भी बताया है -

ज्ञानयज्ञेन चाप्यन्ये यजन्तो मामुपासते।
एकत्वेन पृथक्त्वेन बहुधा विश्वतोमुखम्॥

"कोई साधक ज्ञान यज्ञ के द्वारा एकीभाव से (अभेद-भावसे) मेरा पूजन करते हुए मेरी उपासना करते हैं, और दूसरे कई

साधक अपनेको पृथक् मानकर मुझ विराट् रूप की सेव्य-सेवक भावसे मेरी अनेक प्रकारसे उपासना करते हैं" ।

अर्थात ज्ञान और भक्ति दोनों में से कोई भी एक मार्ग का वरण कर हम ईश्वर प्राप्ति के उद्देश्य की पूर्ति कर सकते हैं। रामचरितमानस में तुलसीदास जी कहते हैं -

भगतिहि ग्यानहि नहिं कछु भेदा। उभय हरहिं भव संभव खेदा॥

अर्थात भक्ति और ज्ञान में कुछ भी भेद नहीं है। दोनों ही संसार से उत्पन्न क्लेशों को हर लेते हैं। परन्तु जहाँ ज्ञान मार्ग की यात्रा में आप हर पल कुछ पाते जाते हैं और अंततः इसी माध्यम से ईश्वर को प्राप्त कर लिया जा सकता है वहीं भक्ति मार्ग में आप हर पल खोते जाते और अंततः स्वयं को भी खो जाते है परन्तु ईश्वर को प्राप्त कर जाते हैं। अर्थात एक मार्ग में पाते हुए सबकुछ पा लेना है जबकि दुसरे में सबकुछ खोकर सब पा लेना है।

परन्तु ज्ञान मार्ग एक कठिन मार्ग है जिसके बारे में तुलसीदासजी (कागभुशुंडि और गरुण संवाद) लिखते हैं -

ग्यान पंथ कृपान कै धारा। परत खगेस होइ नहिं बारा॥
जो निर्बिघ्न पंथ निर्बहई। सो कैवल्य परम पद लहई॥1॥

"ज्ञान का मार्ग कृपाण (दोधारी तलवार) की धार के समान है। हे पक्षीराज! इस मार्ग से गिरते देर नहीं लगती। जो इस मार्ग को निर्विघ्न निबाह ले जाता है, वही कैवल्य (मोक्ष) रूप परमपद को प्राप्त करता है"।

उनके ऐसे कहने के पीछे तर्क यह है कि चूँकि ईश्वर तक पहुचने के पहले हमें उनकी माया से पार पाना होता है और माया और भक्ति दोनों स्त्री वर्ग की हैं जबकि ज्ञान पुरुष वर्ग के हैं। रामचरितमानस के अनुसार

ग्यान बिराग जोग बिग्याना। ए सब पुरुष सुनहु हरिजाना।
माया भगति सुनहु तुम्ह दोऊ। नारि बर्ग जानइ सब कोऊ।

इसलिए प्रभु की माया का असर ज्ञान पर होता जबकि माया भक्ति को नहीं छेड़ती है क्यूंकि यह अनुपम (विलक्षण) रीति है कि एक स्त्री के रूप पर दूसरी स्त्री मोहित नहीं होती।

इहाँ न पच्छपात कछु राखउँ। बेद पुरान संत मत भाषउँ॥
मोह न नारि नारि के रूपा। पन्नगारि यह रीति अनूपा॥

अतः ज्ञान मार्ग से ईश्वर प्राप्ति में जीव को ईश्वर की माया से सामना करना पड़ता है जबकि भक्ति मार्ग में माया कोई बाधा नहीं है । और चूंकि ज्ञान मार्ग में आपको सतत कुछ प्राप्त होता रहता है जो एक मरीचिका के समान असर करता है और माया के असर के कारण आप ईश्वर प्राप्ति की राह से भटक भी सकते है जैसे एक बच्चे को बहलाने के लिए उसे खिलौने दिये जाने से वह खो जाता है ठीक उसी प्रकार एक ज्ञान मार्गी साधक थोडा पाने मात्र से ही अपने ईश्वर प्राप्ति के मार्ग से विचलित हो सकता है परन्तु भक्ति के मार्ग में पाने की इच्छा नहीं अपितु पूर्ण समर्पण के साथ खोना ही एक मात्र लक्ष्य है ठीक वैसे ही जैसे एक माँ अपने शिशु के वात्सल्य में अपना सुध -बुध खो बैठती है । तुलसीदास जी कहते है-

भगतिहि सानुकूल रघुराया। ताते तेहि डरपति अति माया॥
राम भगति निरुपम निरुपाधी। बसइ जासु उर सदा अबाधी॥

तेहि बिलोकि माया सकुचाई।
करि न सकइ कछु निज प्रभुताई॥
अस बिचारि जे मुनि बिग्यानी।
जाचहिं भगति सकल सुख खानी॥

यह रहस्य रघुनाथ कर बेगि न जानइ कोइ।
जो जानइ रघुपति कृपाँ सपनेहुँ मोह न होइ॥

अर्थात श्री रघुनाथजी भक्ति के विशेष अनुकूल रहते हैं। इसी से माया उससे अत्यंत डरती रहती है। जिसके हृदय में उपमारहित और उपाधि रहित (विशुद्ध) राम भक्ति सदा बिना किसी बाधा (रोक-टोक) के बसती है, उसे देखकर माया सकुचा जाती है। उस पर वह अपनी प्रभुता कुछ भी नहीं कर (चला) सकती। ऐसा विचार कर ही जो विज्ञानी मुनि हैं, वे भी सब सुखों की खान भक्ति की ही याचना करते हैं। श्री रघुनाथजी का यह रहस्य जल्दी कोई भी नहीं जान पाता। उनकी कृपा से जो इसे जान जाता है, उसे स्वप्न में भी मोह नहीं होता है । अतः भक्ति मार्गी के लिए ईश्वर प्राप्ति अपेक्षाकृत सरल है क्यूंकि इस मार्ग में माया का असर नहीं होता है जो ईश्वर प्राप्ति के मार्ग में एक अवरोध है ।

मेरी हिन्दी यात्रा

डूमेश कुमार धनकर
लेखापरीक्षक/प्रशासन-।ब
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा) छत्तीसगढ़,
रायपुर, मोबाईल नं. 8871584342

यूं तो मैं हिन्दी भाषी क्षेत्र से आता हूँ और मेरी मातृभाषा भी हिन्दी ही है। चूंकि मैं केवल हिन्दी ही एकमात्र भाषा जानता था-साथ ही व्याकरण को भी महत्वहीन मानता था, इसीलिए कि हिन्दी भाषा ज्ञान का अहम मुझमें कूट-कूट के भरा हुआ था। लेकिन मेरा ये वहम कॉलेज में मेरे एक अहिंदी भाषी मित्र ने तोड़ा, भाषा विज्ञान से उन्होने मेरा नाता जो जोड़ा। भाषा विज्ञान का ज्ञान जब ही मेरे मस्तिष्कीय तरंगों से होकर गुजरा, तब ही हिन्दी का मूल मेरे मन-मस्तिष्क में उभरा। अहिंदी भाषी होने के कारण मेरे मित्र ने हिन्दी सीखने की शुरुआत व्याकरण अध्ययन से की इसलिए उन्होने तकनीकी रूप से शुद्ध हिन्दी सीखी, इसलिए परीक्षा परिणामों में भी उनकी मेहनत नज़र आई और मैं इस अभिमान के कारण कि मैं तो हिन्दी भाषी हूँ, हिन्दी भाषा के अध्ययन पर विशेष ध्यान नहीं दिया और परीक्षा परिणामों से मैं अतिविस्मित हो गया। मित्र से परीक्षा परिणामों के विषय में वार्तालाप करने पर जानकारी हुई कि वास्तविकता में मुझे भाषा का ज्ञान है ही नही। तब मैंने अहिंदी से हिन्दी सीखने का प्रयत्न आरंभ किया, जिस ओर मैं वर्तमान में भी अपने कदम बढ़ाए ही जा रहा हूँ। भाषा सीखने के लिए तो मुझे ये जीवन भी कम प्रतीत हो रहा है।

संविधान पढ़ने पर मुझे ये ज्ञात हुआ कि केवल हिन्दी ही भारत की एकमात्र भाषा नहीं है, बल्कि कुल 22 भाषाएँ राजभाषा के रूप में प्रतिष्ठित है-साथ ही हजारों बोलियों का महत्व भी कम आंकना मेरी मूर्खता ही समझिए। पुरातन काल में अधिक से अधिक भाषाओं का ज्ञान रखने वाले व्यक्ति विद्वान कहे जाते थे क्योंकि विषयज्ञान होने से सिर्फ विशेष वर्ग के ही लोगों को ही प्रभावित किया जा सकता है किन्तु भाषा ज्ञान से अधिक से अधिक जनसामान्य को अपनी बातों से प्रभावित किया जा सकता है। इसके एक उदाहरण आदिगुरु शंकराचार्य जी है, जिन्होने ज्ञान और भाषा विज्ञान से विभाजित भारत को एक सम्पूर्ण भारतवर्ष के रूप में बांध लिया। द्वितीय उदाहरण तो कुछ शताब्दियों पहले के ही व्यक्ति है जिन्हें हम कैप्टन विलियम हॉकिन्स के नाम से जानते है जिन्होने तुर्की भाषा का प्रयोग करके मुगल सम्राट जहाँगीर का हृदय विजित कर भारत में व्यापार करने की अनुमति प्राप्त की और एक ओर मुझे देखिये; मैं इक्कीसवीं सदी का पढ़ा-लिखा मूर्ख, अपनी केवल एक भाषा का अहम पालकर खुद को विद्वान साबित करने के लिए दूसरी भाषाओं का तिरस्कार कर रहा था, जबकि मैंने स्वयं की मातृभाषा भी ढंग से नहीं सीखी थी।

आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि जब मैंने व्याकरणिक हिन्दी सीखने के लिए हिन्दी व्याकरण की पुस्तक उठायी तब भी हिन्दी समझ नहीं आई लेकिन जब दूसरी भाषा से तुलनात्मक अध्ययन करना आरंभ किया, तब ही वास्तविकता में मुझे हिन्दी की समझ आनी शुरू हुई। इससे मैंने यह निष्कर्ष निकाला कि यदि मुझे जीवन को सर्वोच्च स्थान पर देखना है तो मुझे अधिक से अधिक भाषा सीखनी पड़ेगी। पहले मैं दूसरों से उम्मीद रखता था कि उन्हें हिन्दी जरूर आनी चाहिए, लेकिन फिर मैंने यह अनुभव किया कि केवल उन्हें ही हिन्दी क्यों आनी चाहिए-जबकि मैं भी तो उनकी भाषा सीखने की कोशिश कर सकता हूँ।

हिन्दीभाषा की यात्रा देवभाषा संस्कृत से आरंभ होकर महात्मा बुद्ध के समयकाल में पालि, सम्राट गौतमीपुत्र सातकर्णी के प्राकृत, राजपूत राजवंशों के अपभ्रंश से हिन्दी में परिवर्तन की गाथा है (मेरी जानकारी के अनुसार)। पुरातन हिन्दी की भी यात्रा सतत अग्रसर ही रही। आदिकाल (वीरगाथा काल) से पुनर्जागरण अर्थात मध्यकाल तक, मध्यकाल से आधुनिक काल तक सतत विकसित होती रही है। आधुनिक काल में भी भारतेन्द, द्विवेदी एवं छायावादी रचनाकारों ने हिन्दी के विकास में अपना अभूतपूर्व योगदान दिया। वर्तमान में भी यह भाषा निरंतर विकासशील होकर प्रगति करती ही जा रही है। वैसे भी कहा गया है कि परिवर्तनशील भाषा ही अनंत काल तक चिरस्थायी रह सकती है और जो भाषा, परिवर्तन का विरोध करती है, उसका अंत निश्चित ही मानिए।

विचारों के आदान प्रदान के तीन तत्व माने गए है, जो है:- 1. मौखिक, 2. लिखित एवं 3. सांकेतिक। भाषा से भी पहले ध्वनि एवं संकेतों (हाव-भाव) का समूह ही आदिमानवों के विचार आवागमन का माध्यम था। ध्वनि के साथ ही लिपि के सामंजस्य ने भाषा को सदा के लिए सहेजे जाने का प्रबंध कर दिया। कहा जाता है कि महर्षि पाणिनि के कठोर तप से प्रसन्न होकर देवाधिदेव महादेव ने डमरू बजाया और उससे महर्षि के ज्ञानचक्षु खुल गए। मेरे जैसे सामान्य व्यक्ति के लिए डमरू की ध्वनि सामान्य सी प्रतीत होती, किन्तु महर्षि पाणिनि के लिए यह सृष्टिकर्ता ब्रह्मांडीय ध्वनि थी, जिससे उन्होने व्याकरण के समस्त नियमों का निर्माण कर दिया और वह ब्रह्मांडीय ध्वनि श्री माहेश्वर सूत्र के रूप में अतिविख्यात है, साथ ही भारतीय शास्त्रीय संगीत का मूलाधार भी यही श्री माहेश्वर सूत्र ही है और हो भी क्यों ना, आखिरकार भगवान नटराज ने ही इस सूत्र का प्रतिपादन किया है।

ध्वनि से वर्ण विचार, वर्ण विचार से पद विचार, पद विचार से शब्द विचार एवं शब्द विचार से वाक्य विचार व्याकरण के प्रमुख अंग माने गए है। मेरे द्वारा विचारों के गहन अध्ययन के पश्चात, अब उनके सांसारिक प्रयोग की बारी आती है। जिसके लिए संधि, समास, कारक, वचन, लिंग, संज्ञा, सर्वनाम फिर अंत में रस, छंद और अलंकार से व्याकरण की सूक्ष्म शुद्धता प्राप्ति का प्रयत्न करना मेरे लिए महत्वपूर्ण है। मेरा लक्ष्य तो अब वर्णों की संख्या, यति (विराम), गति (लय/प्रवाह) एवं तुक (समान शब्द) का प्रयोग कर भाषा के अतिमधुर स्तर तक पहुँचने का प्रयत्न शामिल रहता है।

भाषाविज्ञान का विस्तार, महर्षि पाणिनी द्वारा रचित अष्टाध्यायी के पश्चात उनके शिष्य, वार्तिक के रचनाकार महर्षि कात्यायन तथा महाभाष्य के रचयिता महर्षि पतंजलि ने किया, यही तीनों त्रिमुनि के रूप में विश्वविख्यात हुए। यही कार्य भारतवर्ष के दक्षिणतम छोर पर महामुनि महर्षि अगस्त्य जी ने तमिल भाषा का विकास कर किया। ध्वनि से वर्ण, वर्ण से शब्द एवं शब्द से वाक्य निर्माण हेतु सही प्रयोग के नियमों हेतु व्याकरण ग्रंथ रचना के लिए उक्त महर्षियों का मैं तुच्छ-प्राणी मात्र सदा आभारी रहूँगा।

दुर्गा पूजा

कमलाकर कुमार झा
आशुलिपिक
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा
(आयुध निर्माणियाँ)

सनातन धर्म में सभी त्योहारों पर रौनक और चमक दिखती है। सनातन धर्म में दुर्गा पूजा का खास महत्व होता है। भारत के सभी राज्यों में अलग-अलग तरीके से नवरात्रि का महापर्व मनाया जाता है। दुर्गा पूजा का पर्व हिन्द देवी दुर्गा की बुराई के प्रतीक राक्षस महिसाषुर पर विजय के रूप में मनाया जाता है।

दुर्गा पूजा भिन्न-भिन्न जगहों भिन्न-भिन्न तरीकों से मनाया जाता है, कहीं गरबा खेला जाता है तो कहीं दुर्गा पूजा की जाती है। पश्चिम बंगाल, असम, बिहार, पूर्वी उत्तर प्रदेश, झारखण्ड, मणिपुर, ओडिसा, और त्रिपुरा आदि भारतीय राज्यों में व्यापक रूप से दुर्गा पूजा मनाया जाता है। इस पूजा को गुजरात, उत्तर प्रदेश, पंजाब, केरल और महाराष्ट्र में नवरात्रि के रूप में कुल्लू घाटी, हिमाचल प्रदेश में कुल्लू दशहरा, मैसूर कर्नाटक में मैसूर दशहरा, तमिलनाडु में बोमाई गोलू और आन्ध्र प्रदेश में बोमाला कोलुवू के रूप में भी मनाया जाता है।

आइए आपको बंगाल ले चलें जहां दुर्गा पूजा पर्व को मनाया नहीं बल्कि जिया जाता है। इसकी नींव कैसे पड़ी और कैसे यह दुर्गा पूजा का गढ़ बन गया, इसकी पड़ताल करते हैं । बंगाल में दुर्गा पूजा की परंपरा सैकड़ों साल पुरानी है। दुर्गा पूजा के दौरान बंगाल में कितने पर्यटक आते हैं और इसका बंगाल की अर्थव्यवस्था पर क्या असर पड़ता है?

नवरात्र में देवी दुर्गा की आराधना वैसे तो पूरे देश में की जाती है पर जब शारदीय नवरात्र की बात होती है तो बरबस बंगाल की याद आ जाती है। देश भर में जहां लोग नवरात्र में कड़े व्रत-नियम का पालन कर मां की आराधना करते हैं, वहीं बंगाल में जैसे बेटी के आगमन का पर्व मनाया जाता है। बड़े-बड़े भव्य पंडाल बनाकर माता रानी की अप्रतिम सुंदर प्रतिमाएं स्थापित की जाती हैं।

कोलकाता की गलियों में एक किस्सा प्रचलित है कि दुर्गा पूजा की शुरुआत प्लासी के युद्ध के बाद भगवान का आभार जताने के लिए हुई थी। 23 जून 1757 को ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी की सेना ने रॉबर्ट क्लाइव की अगुवाई में बंगाल पर वर्चस्व बनाने के लिए नवाब सिराजुद्दौला पर हमला कर दिया था। पश्चिम बंगाल (तब अविभाजित बंगाल) के मुर्शिदाबाद से 22 मील की दूरी पर स्थित प्लासी नामक गांव के मैदान में दोनों सेनाएं आमने-सामने थीं। नवाब की सेना अंग्रेजों की सेना से दोगुनी थी. फिर भी नवाब के अपने ही सेनापति मीर जाफर की गद्दारी के कारण उनकी हार हुई थी। यह भी कहा जाता है कि युद्ध से पहले ही रॉबर्ट क्लाइव ने नवाब सिराजुद्दौला के कुछ प्रमुख दरबारियों और शहर के सेठों को भी अपनी ओर कर लिया था। यह वह दौर था, जब बंगाल देश के सबसे अमीर राज्यों में से एक था। कहा जाता है, प्लासी में जीत के

बाद रॉबर्ट क्लाइव भगवान का आभार व्यक्त करना चाहता था। हालांकि, युद्ध के दौरान इलाके के सारे चर्च नेस्तनाबूत हो चुके थे। ऐसे में राजा नव कृष्णदेव आगे आए और माता रानी की महिला बताते हुए रॉबर्ट क्लाइव के सामने प्रस्ताव रखा कि भव्य दुर्गा पूजा का आयोजन किया जाए। ऐसे में रॉबर्ट क्लाइव मान गया और पहली बार उसी साल कलकत्ता (अब कोलकाता) में दुर्गा पूजा का भव्य आयोजन किया गया। तब दुर्गा पूजा के लिए पूरे कलकत्ता को सजाया गया था। रॉबर्ट क्लाइव खुद हाथी पर सवार होकर समारोह में शामिल हुआ, जबकि इसे देखने के लिए दूर-दूर से लोग आए थे. बड़े-बड़े लोग पहली बार ऐसा आयोजन देखकर अचंभित थे।

इस पहली भव्य दुर्गा पूजा के सबूत के रूप में अंग्रेजों की एक पेंटिंग भी मिलती है। बाद में जब बंगाल में जमींदारी प्रथा लागू हुई तो जमींदार अपना दबदबा दिखाने के लिए हर साल भव्य दुर्गा पूजा आयोजित करने लगे जिसमें दूरदराज के गांवों से भी लोग आते थे। धीरे-धीरे इसका दायरा बढ़ता गया और आज बंगाल के हर गली-मोहल्ले में तो इसका आयोजन होता ही है, देश के दूसरे हिस्सों में भी इसका आयोजन भव्य तरीके से हो रहा है। वैसे तो नवरात्रि का पर्व दस दिनों का होता है लेकिन नवरात्रि के अंतिम चार दिन पश्चिम बंगाल में बड़ी धूमधाम से मनाए जाते हैं। इन चार दिनों के दौरान बंगाल महिलाएं पारंपरिक साड़ी भी पहनती हैं। साथ ही ढाक की धुन पर एक प्रकार का नृत्य किया जाता है, जिसे धुनुची कहते हैं। साथ ही पश्चिम बंगाल में जगह-जगह पर भव्य पंडाल भी लगते हैं। देवी दुर्गा को विभिन्न पकवानों का भोग लगाया जाता है और कई अन्य कार्यक्रमों भी आयोजित किए जाते हैं।

पूजा के बहाने फलता-फूलता है पर्यटन उद्योग

बंगाल में, खासकर कोलकाता में पर्यटन उद्योग की रीढ़ दुर्गा पूजा ही है. बंगाल की अर्थव्यवस्था में भी इसका बड़ा योगदान है। देश ही नहीं, दुनिया भर से पर्यटक यहां दुर्गा पूजा देखने के लिए आते हैं। साल 2021 में यूनेस्को ने बंगाल की दुर्गा पूजा को दुनिया की विरासतों की सूची में डाल दिया था। तब से पर्यटकों का आंकड़ा और बढ़ा है। बंगाल के पर्यटन उद्योग के आंकड़ों के अनुसार, साल 2023 में 17 हजार विदेशी पर्यटकों के आने की उम्मीद जताई गई थी। वहीं, बंगाल सरकार ने पांच लाख देशी पर्यटकों के आगमन को देखते हुए तैयारियां की थीं। इसके पहले साल 2022 में 12 हजार विदेशी पर्यटक दुर्गा पूजा के दौरान कोलकाता पहुंचे थे।

बंगाल की अर्थव्यवस्था में बड़ा योगदान

भारत के सबसे बड़े त्योहारों में से एक दुर्गा पूजा का आर्थिक प्रभाव बहुत ज़्यादा है। यह उत्सव खुदरा, कपड़ा, पर्यटन, आतिथ्य और मनोरंजन सहित विभिन्न उद्योगों के माध्यम से पर्याप्त राजस्व उत्पन्न करता है। कपड़ों, सजावट, मूर्तियों और उपहारों की मांग स्थानीय व्यवसायों को बढ़ावा देती है। कोलकाता नगर निगम में महापौर के हवाले से हाल ही में रिपोर्ट आई थी कि बंगाल की अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देने में दुर्गा पूजा का बड़ा योगदान है। उनका दावा था कि पहले दुर्गा पूजा की अर्थव्यवस्था 50 हजार करोड़ रुपए की थी, जो अब बढ़ कर 80 हजार करोड़ रुपए तक पहुंच चुकी है।

यह सर्व विदित है कि किसी भी पर्व या त्योहार का मनाना हमारे अपने, परिवारजन तथा समाज को एक साथ खुशी मनाने का एक अवसर प्रदान करता है। दुर्गा पूजा बुराई पर अच्छाई की जीत का प्रतीक है। इससे बच्चों को सीखने को मिलता है कि रास्ता चाहे कितना भी मुश्किल क्यों न हो, सही मार्ग पर चलने से हमेशा जीत मिलती है। इससे बच्चों में यह विश्वास पैदा होता है कि सत्य और न्याय की जीत हमेशा होती है। हमें सदैव सत्य और न्याय के लिए खड़ा होना चाहिए।

जीवन का फलसफा : मृत्यु भली या जीवन?

बिजेन्द्र कुमार बेरवाल
सहायक निदेशक (राजभाषा)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार
(लेखा एवं हकदारी), गुजरात,
राजकोट-360001

जैसा कि कहा जाता है कि व्यक्ति को इस संसार में मानवीय जीवन 84 लाख जीवनियों को भोगने के बाद ही यह मानव रुपी चोला प्राप्त होता है। हम पिछले जन्म में क्या थे? पिछले जन्म में थे भी या नहीं थे? ये भी हमको याद नहीं होता है। कई बार तो स्थिति ऐसी भी होती है कि यदि कोई हमसे पूछे कि अपनी पिछली 7 पीढ़ियों के बारे में बताओ तो हम मुश्किल से केवल अपनी 2 या 3 हद से हद 4 पीढ़ियों तक के बारे में ही बता पाते हैं। कारण, इसके पीछे यही होता है कि हम सभी केवल अपनी वर्तमान की जानकारी और थोडा बहुत अपने बीते हुए कल की जानकारी रखते हैं जैसा कि मेरे पिताजी, मेरे दादा जी की जानकारी या मेरे परदादा की जानकारी के बारे में जानते हैं इससे ज्यादा कुछ नहीं जानते है और इसी कारण ज्यादा की जानकारी हमारे पास नहीं होती है और इसी कारण से ही हमारी इस विषय पर जानकारी बहुत ही सीमित हो जाती है।

इसके अलावा, हम अगला जन्म लेंगे भी या नहीं, इसका भी कुछ अता-पता नहीं होता है। लेकिन जिंदगी की कहानी इस दुनिया में कई जन्मों तक के बारे में जरूर चलती रहती है। आपने अक्सर देखा और सुना भी होगा कि अगर आप कोई गलत काम कई बार गलती से और कई बार जानते हुए भी कर देते हैं तो, दूसरा यही कहता है कि अरे भाई ये क्या कर रहे हो? क्यों गलत काम कर रहे हो? अगला जन्म अच्छा नहीं मिलेगा, और पाप भोगोगे। हालाँकि, फिर से एक बार वही बात आ जाती है कि हमारा अगला जन्म होगा कि नहीं ये भी हमें बिल्कुल नहीं पता होता है। लेकिन अक्सर ऐसा भी होता है कि अगर गलत करने वाले व्यक्ति के मन में सोचने और दूसरे के द्वारा समझाने पर अगर ये बात आ जाए कि दूसरा व्यक्ति बिल्कुल सही कह रहा है और मेरा अगला जन्म अच्छा हो, मुझे नरक न मिले तो निश्चित ही वह अपने द्वारा किए जा रहे गलत काम को छोडने का प्रयास तो अवश्य करेगा और कई बार ऐसा करने से व्यक्ति सच में पाप करने से बच जाता है क्योंकि उसके मन में फिर से अच्छा जन्म मिलने की भावना जागृत हो ही जाती है।

कई बार हम सब ऐसा महसूस भी करते हैं और हम सब के साथ ऐसा होता भी है कि जब जिंदगी बिल्कुल सही चल रही होती है, मन में एक अच्छे ख्याल की अनुभूति होती रहती है कि अब सब ठीक है और सब सही भी चल रहा है कि तभी एकाएक मन फिर अचानक ही किसी घटना या किसी ऐसी नकारात्मक बात को देखते हुए या याद करके हमारा मन नकारात्मकता की तरफ मुड जाता है कि वो सब सोच कर घबरा भी जाता है कि कहीं कुछ गलत तो नहीं हो जाएगा, जिंदगी में सब ठीक चलते-चलते कोई ऐसी समस्या तो नहीं

आ जाएगी जो लाख कोशिशों के बाद भी हम सब के जीवन से जाने का नाम नहीं लेगी या जाने में बहुत ही देर लगा देगी। ऐसी बातों में इजाफा तब और भी हो जाता है कि जब व्यक्ति आजकल के हालातों, खबरों और समाज में हो रही नकारात्मक घटनाओं को देखता है और घबराने लगता है। ऐसी बातों को देखने और सुनने के बाद व्यक्ति की हिम्मत और भी टूटने लगती हैं और वह और भी आने वाले समय को देखते हुए डरने लग जाता है।

इसके अलावा ये भी देखने में आता है कि व्यक्ति के ऐसा सोचने पर कि कहीं सब ठीक चलते हुए जीवन में कुछ गडबड तो नहीं हो जाएगी तो ऐसे में व्यक्ति चलता तो संभल कर ही है, लेकिन फिर भी कई बार न चाहते हुए उसे किसी ना किसी परेशानी का सामना करना पड ही जाता है। फिर से उसका मन ऐसी नकारात्मक घटनाओं की तरफ ना चाहते हुए भी जाने लगता है और वह चाहकर भी वहाँ से अपना ध्यान नहीं हटा पाता है। वो कहते हैं ना कि **"सौ विश्वासों को तोडने के लिए एक अविश्वास वाली बात ही काफी होती हैं"**। व्यक्ति के ऐसा बार-बार सोचने के पीछे फिर से देश-दुनिया में निरंतर घट रही अप्रिय घटनाएं ही होती हैं जो उसे भयभीत कर देती हैं और उसकी ऐसी सोच में और इजाफा कर देती हैं। ऐसी बातें हमें नकारात्मकता की ओर ले जाती है। जब कि कहते सब यही है कि हमेशा पॉजिटिव ही सोचो, नेगेटिव मत सोचो और देखा जाए तो एक बार के लिए सही भी होता है कि हमें अच्छा सोचते हुए ही आगे बढने के बारे में सोचना चाहिए नहीं तो हम सब के जीवन में ऐसा भी अक्सर होता है कि पता नहीं कब मुंह से कोई गलत बात जाने–अनजाने में ही निकल गई और न जाने वो कहां जाकर सच हो जाती है।

इसके साथ ही हमारे जीवन में एक बात और भी महत्वपूर्ण होती हैं कि कौन व्यक्ति किसी सामान्य सी बात को या किसी समस्या को कैसे देखता है, उस व्यक्ति के पास उस समस्या का समाधान करने हेतु क्या दृष्टिकोण है और आत्मविश्वास कितना है आदि ये सब बातें भी समस्या को सुलझाने के लिए उसके नजरिए और उसके आत्मविश्वास पर भी बहुत निर्भर करती है। कोई व्यक्ति किसी बडी से बडी समस्या को बहुत

ही हल्के नजरिए से देखता है, उसका आत्मविश्वास कहता है कि ये समस्या कोई बडी समस्या नहीं है, जल्द ही सुलझा ली जाएगी और कोई व्यक्ति ऐसा भी होता है कि उसे कोई भी छोटी सी छोटी समस्या भी बहुत बडी लगती हैं। वह हर छोटी-छोटी बात से परेशान हो जाता है और चाहकर भी किसी भी समस्या चाहे छोटी हो या बडी सुलझा नहीं पाता है या लाख चाहने और कोशिश करने पर भी जब वह समस्या उससे सुलझती नहीं है और तो फिर वह हार जाता है। इसलिए कई बार व्यक्ति की जिंदगी में किसी भी समस्या को हल करना या नहीं करना भी उसके नजरिए और आत्मविश्वास पर बहुत ही निर्भर करता है। इसलिए, सभी के द्वारा सदा यही कहा गया है कि व्यक्ति को सदा ही सकारात्मक सोच और आत्मविश्वास को ध्यान में रखते हुए जीवन में आगे बढने हेतु कहा गया है और यदि संभव हो तो हमें उस नियम पर चलने का प्रयास भी करना चाहिए, क्योकि कहते हैं न कि उम्मीद पर दुनिया कायम है, शायद कल कुछ अच्छा हो जाए और व्यक्ति की सभी या अधिकतर समस्याओं का हल निकल जाए।

हम सब ये भलीभाँति भी जानते हैं कि परेशानी हमेशा व्यक्ति के जीवन में दबे पांव ही उसके न चाहते भी हुए प्रवेश करने का प्रयास करती है और कर भी जाती है और कई बार तो उसे उस आई हुई परेशानी का समय से पता चल जाता है तो कई बार उस परेशानी के बारे में व्यक्ति को बाद में पता चलता है। फिर व्यक्ति जीवन में आई हुई उस परेशानी के हल को खोजने में व्यस्त हो जाता है और उसमें भी कई बार तो उसे कामयाबी मिल जाती है और कई बार उसे अनेक प्रयासों के बाद भी कोई सफलता नहीं मिलती है और निराशा ही हाथ

लगती है और ऐसा होने पर भी व्यक्ति की हिम्मत टूटने लगती है और फिर वह नकारात्मक ही सोचने लग जाता है।

आजकल की दुनिया में किस तरह बीमारियों का प्रकोप बढता ही जा रहा है, ये किसी से छुपा नहीं हैं। एक बीमारी से बचों तो जीवन में दूसरी आने को तैयार है। जैसे कि पहले से ही कैंसर, एड्स और टीबी जैसी घातक बीमारी कम थी कि क्या अब इन नई बीमारियों जैसे कि मधुमेह , बी.पी, थॉयरड, आदि ने भी व्यक्ति के जीवन को अपनी गिरफ्त में ले लिया है और जीवन में आई हुई इन नई बीमारियों में से मधुमेह ने तो मानो मानव जाति पर कब्जा करने की पूरी ठान ही रखी हो।

ये बीमारी इस कदर फैल रही है जैसे कि मानो ये सबको अपना शिकार बना कर ही मानेगी। इसके अलावा, इस बात में भी कोई संदेह नहीं है कि आज की बढती आधुनिकता ने भी हम सब के जीवन को पहले की तुलना में और भी अधिक सरल, आकर्षक और आरामदायक तो बनाया ही है तो वहीं दूसरी ओर इन बढती सुविधाओं की वजह से भी हमारी मॉडर्न लाइफ स्टाइल की वजह से मिली इन बीमारियों ने व्यक्ति के जीवन में कुछ ज्यादा ही इजाफा कर दिया है और उसमें उत्पाद मचा दिया है। इन बीमारियों से हम लाख चाहने पर भी निकल नहीं पा रहे हैं।

अगर ये प्रश्न कोई हम से करें या किसी से हम करें कि कौन दुखी रहना चाहता है, कौन परेशानी भरा जीवन जीना चाहता है, तो इसका एक ही उत्तर है और होगा कि कोई नहीं। लेकिन ये बीमारियां ही होती है जो सबसे ज्यादा व्यक्ति को दुखी कर देती हैं। व्यक्ति को आराम से जीवन जीने ही नहीं देती है। आजकल की लाइलाज बीमारियां व्यक्ति के जीवन के लिए बहुत ही घातक बनी हुई है जो यदि एक बार व्यक्ति के जीवन में आ जाए तो फिर वो व्यक्ति के जीवन से जाने का नाम ही नहीं लेती हैं। चाहे किसी भी मामले में कोई भी बीमारी बढ़ती ही जा रही हो और नियंत्रित नहीं हो रही हो तो उस मामले में व्यक्ति चाहे कितनी भी दवा खा ले, लेकिन बीमारी पूरी तरह ठीक नहीं होती है क्योंकि अब दवाई खाकर इन बीमारियों को केवल नियंत्रित किया जा सकता है, खत्म नहीं किया जा सकता है।

अब हर व्यक्ति को अपना जीवन अपने मनचाहे तरीके से जीने का अधिकार है और उसे वो हर चीज पाने का भी अधिकार है जो उसके एक अच्छे शहरी जीवन जीने के लिए आवश्यक हो गई है, जैसे कि एक बढिया सा उसका मनचाहा घर, एक बढिया सी गाडी और एक बढिया सी नौकरी और बहुत सारा रुपया-पैसा आदि-आदि। ये सब आज के व्यक्ति के शहरी जीवन के लिए बहुत ही आवश्यक हो गए हैं। पैसे के बिना तो व्यक्ति के जीवन जीने की कल्पना ही नहीं की जा सकती है। प्रत्येक व्यक्ति इन सब को भी व्यक्ति अपने जीवन में हर कीमत पर पाना चाहता है लेकिन कभी-कभी उस व्यक्ति के साथ ऐसा हो जाता है कि वह अपने जीवन में जीवन जीने हेतु ये सब चीजें जुटा नहीं पाता है और फिर वह परेशान रहने लगता है और फिर तंग आकर, निराश होकर कई बार तो गलत रास्तों पर भी चल पडता है और ऐसा करने से एक ठीकठाक चल रही जिंदगी फिर न चाहते हुए भी कानून की नजरों में गुनहगार बन जाती है और फिर व्यक्ति कितना भी चाह ले जिंदगी पहले जैसी नहीं हो पाती है और कई बार ऐसी जिंदगी से भी तंग आकर व्यक्ति गलत कदम उठा लेता है, क्योंकि उसे लगने लग जाता कि अगर इस दुनिया में जिंदा रहा तो ये दुनिया वाले जीने नहीं देंगे और सारी उम्र जेल की इस चार दीवारी में यूं तिल-तिल कर मरना उसे गवारा नहीं होगा, इसलिए ऐसे में उसे जिंदगी की अपेक्षा मृत्यु भली लगती है जो उसे दुनिया की हर समस्या से छुटकारा दिला देगी।

बढती गाडियों की संख्या से सडकों पर जाम लगने और घटती घटनाओं वाली बातों ने भी आज के आधुनिक जीवन जी रहे व्यक्ति के जीवन और भी चिंताग्रस्त किया है। अब ऐसा भी कहा जाता है कि इसी बढते ट्रैफिक की वजह से अब व्यक्ति पहले की तुलना में अपना धैर्य अधिक खोने लगा है और अब सड़क पर शांत रहने में उसकी हिम्मत जवाब देने लगी है। अब वह बहुत ही बेसब्र हो चला है। सड़क पर अब हर छोटी-छोटी बात पर वह किसी दूसरे से झगडने से भी डरता नहीं है, बात-बात पर गुस्सा होने लगा है और कहीं कहा सुनी की स्थिति और बिगडती चली गई हो तो फिर मरने मारने से भी पीछे नहीं हटता है। कहने का तात्पर्य यह है कि इसी बढते

ट्रैफिक और पार्किंग की समस्या ने भी व्यक्ति से उसका सब्र तो बिल्कुल ही छीन लिया है और कई बार इन बातों की वजह से ही दो व्यक्तियों के बीच झगडे तक हो जाते हैं और रोज सड़क पर गाडियों की बढती संख्या के कारण हादसों में लोगों की जान चली जाती हैं, वो अलग है।

कोई भी व्यक्ति जन्म से बुरा नहीं होता है, बल्कि वह तो जन्म के समय बहुत ही पवित्र, कोमल और निश्छल होता है, उसे कुछ नहीं पता होता है कि दुनिया में जो उसके आसपास चल रहा है ये क्या हो रहा है? उसे किसी प्रकार का कोई दुख नहीं होता और न ही किसी प्रकार की तकलीफ होती है, क्योंकि उसे कुछ पता ही नहीं होता है। वह तो बस अपनी कोमल सी जिंदगी जीते हुए अपने जीवन में आगे बढने लगता है। लेकिन जब वही बालक अपनी बाल्यावस्था पूरी कर, शिक्षा-दीक्षा लेकर एक वयस्क बन जाता है और फिर इस दुनियादारी को इसके ताने-बाने को समझने लगता है तो वही किसी समय निश्छल रहा बालक इन सब में उलझने लगता है और यही से उसकी मानसिक उलझनों का सफर शुरु होने लगता है। परेशानी, जो कभी किसी रुप में तो कभी किसी रुप में उसके सामने आ खडी होती है जिनका हल कभी तो उस व्यक्ति के पास होता है तो कभी-कभी नहीं। व्यक्ति को तो हालात की कठपुतली भी माना जाता है, जिसकी वजह से अक्सर ये भी कहा जाता है कि व्यक्ति तो कुछ नहीं करता है, बल्कि हालात उससे करवा देते हैं, हालात सर्वोपरि होते हैं।

व्यक्ति के जीवन में सुख अधिक हैं या दुख अधिक लिखे हैं, इस बात के लिए कई बार यह भी उसका किस घर परिवार में जन्म हुआ है यह भी बहुत ही महत्वपूर्ण माना जाता है। ऐसी स्थिति में प्राय: यही मानकर चला जाता है कि अगर व्यक्ति ने किसी बहुत अमीर घराने में जन्म लिया है तो उसे देखते हुए तो लगता है कि इसे जीवन में रुपये पैसे की कभी कोई कमी नहीं होगी और इस बालक का पूरा जीवन खुशियों से बीतेगा तो दूसरी तरफ, यदि किसी बालक ने किसी गरीब घर में जन्म लिया है तो यह मानने और दुनिया को यह कहने में भी कोई देर नहीं लगती है कि देखो बच्चे ने कितने गरीब घर में जन्म लिया है, लगता है कि पूरी जिंदगी इसकी दुख और परेशानियों में ही बीतेगी । वो अलग बात है कि यदि किस्मत बहुत अच्छी है तो जिंदगी आसान होगी और समस्याएं न के बराबर होगी और जिंदगी पूरे ऐशो-आराम के साथ बितेगी और कही किस्मत ने व्यक्ति का शुरु से ही इम्तिहान लेना शुरु कर दिया तो उसे जिंदगी के हर कदम पर संघर्ष मिलना तय है।

ये सब तो वो बातें हैं जिनकी वजह से आजकल व्यक्ति न चाहते हुए भी परेशान रहने लगा है। ये तो तय है कि व्यक्ति को मिले इस जीवन में उसे समस्याएं ही मिलेंगी। ठीक है कोई बात नहीं, समस्याओं का भी स्वागत है, लेकिन समस्याएं आए तो अपने साथ उसका हल भी लाएं ताकि जल्द से जल्द व्यक्ति को उन समस्याओं से निजात भी मिले, नहीं तो ऐसा हो जाएगा कि व्यक्ति को समस्याएं तो मिली लेकिन समय रहते उसका हल नहीं मिलेगा तो एक तरह से ये भी तय हो जाता है कि व्यक्ति का जीवन दुखी तो होगा ही और फिर ऐसा हो जाने की भी पूरी-पूरी संभावना हो जाएगी कि या तो व्यक्ति इस संभी समस्याओं से हार मानकर, अपनी जीवन लीला समाप्त कर लेगा या फिर अपने आपको हालातो के अधीन कर देगा क्योंकि ऐसे में वह यह मानने लग जाता है कि समस्याओं को हल करने हेतु बहुत कुछ कर के देख लिया हल नहीं होती है, अब जो होगा देखा जाएगा। ऐसे उदाहरणों में अक्सर हम देखते हैं कि व्यक्ति के द्वारा एक कर्ज को चुकाने के लिए दूसरा कर्ज ले लिया जाता है। उसको लगता है कि ऐसा करने से पहले वाले का तो कर्ज उतरेगा लेकिन वो फिर से भूल जाता कि उसे एक पल के लिए तो आराम लगेगा लेकिन जिस दूसरे व्यक्ति से या बैंक से कर्ज लेगा तो उसे भी चुकाना पड़ेगा और जब फिर से पैसा चुकाने की बारी आती है तो वह व्यक्ति फिर से पैसों, कर्ज, ब्याज के भंवरजाल में फंस जाता है, जिससे वो चाहकर भी निकल नहीं पाता है और फिर तंग आकर कभी कभी तो खुद अकेले ही या पीछे से भी पैसा देने वाले परिवार को भी तंग करेंगे तो अपने पूरे परिवार के साथ भी गलत कदम उठा लेता है।

हालांकि, व्यक्ति द्वारा खुद को ऐसी परेशानियों से भरी जिंदगी से पीछा छुडवाने वाले को जमाना बुजदिल भी कहता है कि

फलां-फलां व्यक्ति जीवन की समस्याओं से हार मान गया और अपनी जीवन लीला समाप्त करके इस दुनिया चला गया। व्यक्ति द्वारा ऐसा कदम उठाना सही में अच्छा भी नहीं माना जाता हैं, क्योंकि जीवन जीने का नाम है, घबराकर, दु:खी होकर जीवन लीला समाप्त करना जीवन नहीं हैं। लेकिन ऐसा कदम उठाने वाला ही जानता है कि उसने किस तरह हालातों के वशीभूत होकर यह कदम उठाया होता है। आपने अक्सर ऐसे मामले भी सुने होंगे कि जब व्यक्ति इतना बीमार हो चुका होता है कि उसे खुद को दूर-दूर तक उसके ठीक होने की सारी संभावनाएं भी खत्म सी महसूस होने लगती है और जिसके कारण वह दिन-प्रति-दिन केवल और केवल तंग ही होता है और तिल-तिल मरता रहता है तो वह अपनी जीवन लीला भी समाप्त करने की सरकार से अनुमति मांगता है, क्योंकि उसे तब तक इस बात का पूरा यकीन हो जाता है कि अब केवल मृत्यु ही है, जो उसको उसके इस दुखी जीवन से मुक्ति दिला सकती हैं। इसलिए, भी कई बार व्यक्ति को जीवन की अपेक्षा मृत्यु भली लगने लग जाती है।

इसलिए, सार रुप में देखें तो कह सकते हैं कि यहाँ मृत्यु जिंदगी से क्यों भली लगती है या लगने लगी है तो इसके लिए कहा जा सकता है कि आजकल की इन विभिन्न प्रकार तनावों अब चाहे वो पैसें की हो, कर्जा चुकाने की हो, किसी बीमारी की हो फिर किसी अन्य और वजह से हो, इन सभी टेंशनों की वजह से दिमाग में महसूस हो रही परेशानियों को देखते हुए मन में सहसा ही एक ख्याल आता है कि मृत्यु जो कि कई बार तो होती तो तकलीफ देह है लेकिन उस जीवन से कहीं भली

है, जो जीवन कष्टों, दु:खों और परेशानियों से भरा हो और ऐसे ही जीवन से मृत्यु व्यक्ति को सभी दु:ख-दर्दों से छुटकारा दिलाती है।

इसलिए, कहा जा सकता है कि जब जिंदगी रोज ही हमारे सामने किसी भी बात को लेकर एक सवाल के रुप में खडी होती है और जिसका जवाब हमारे पास नहीं होता है और हमारी सारी उम्मीदें भी खत्म हो चुकी होती है और व्यक्ति हर नजरिए से अपनी हिम्मत भी हार चुका होता है तो हमें सहसा ही एक ऐसा ख्याल आने लगता है कि कौन भली मृत्यु या जिंदगी और उसमें भी तब व्यक्ति को मृत्यु अधिक भली लगती है, कयोंकि उसे लगने लग जाता है कि इस जिंदगी से मृत्यु अधिक भली है जो रोज-रोज हमें किसी भी बात को लेकर ना तो परेशान करेगी और न ही हम से किसी सवाल का जवाब मांगेगी।

मीडिया में हिंदी

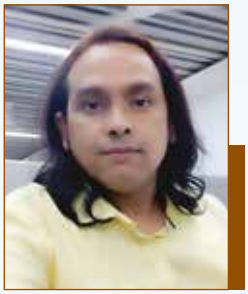

धीरज कुमार रॉय
वरिष्ठ अनुवादक
प्रधान महालेखाकार (लेखा व हक़)
का कार्यालय, आंध्र प्रदेश

वर्तमान युग हिंदी मीडिया का युग है।हिंदी भाषा का निर्माण और आगे बढ़ाने का कार्य मीडिया ने किया है। इंटरनेट और मोबाइल ने हिंदी को और विस्तार दिया है। हिंदी में संप्रेषण की ताकत है।हिंदी यूनिकोड हुई तो ब्लागिंग में बहार आ गई।गूगल का मोबाइल और वेब विज्ञापन नेटवर्क हिंदी को सपोर्ट कर रहा है। इंटरनेट पर ज्यादा से ज्यादा हिंदी सर्च इंजन मौजूद है। सोशल साइट में हिंदी छाई हुई है। 21 फीसदी भारतीय हिंदी में इंटरनेट का उपयोग करते है। हिंदी राजभाषा के बाद अब वैश्विक भाषा बनने की ओर तेजी से बढ़ रही है।डिजिटल दुनिया में हिंदी की मांग अंग्रेजी की तुलना में पाँच गुना तेज है। मातृभाषा और राजभाषा से एक नई वैश्विक भाषा के रूप में हिंदी बदल रही है।वह नई प्रौद्योगिकी, वैश्विक विपणन तंत्र और अंतरराष्ट्रीय संबंधों की भाषा बन रही है। आज मोबाइल की पहुँच ने गाँव-गाँव के कोने-कोने में संवाद और संपर्क को आसान बना दिया है।इस वजह से बाजार आ रहे नित नवीन मोबाइल उपकरण हर सुविधा हिंदी में देने के लिए बाध्य है। हिंदी की इस समृद्ध, शक्ति और प्रसार पर किसी भी हिंदी भाषी को गर्व हो सकता है।

किसी भी देश के विकास का संबंध भाषा से है। इसमें कोई संदेह नहीं कि आजकल राजभाषा हिंदी अपनी सीमाओं से बाहर आ चुकी है। यह विकास, बाजार और मीडिया की भाषा भी बन रही है।पूरे भारत और भारत के बाहर हिंदी के द्रुत प्रचार-प्रसार और विकास का श्रेय मनोरंजन चैनल, समाचार चैनल, खेल चैनल और कई धार्मिक चैनल को दिया जा सकता है।अगर किसी भी देशी-विदेशी कम्पनी को अपना उत्पाद बाजार में उतारना होता है तो उसकी पहली नजर हिंदी क्षेत्र पर पड़ती है क्योंकि उपभोक्ता शक्ति का वृहत्तम अंश हिंदी क्षेत्र में ही निहित है इसलिए उसका विज्ञापन कर्म हिंदी में ही होता है।दुनिया की एक बड़ी आबादी तक पहुंचने के लिए हिंदी की जरूरत पड़ेगी ही।हिंदी अखबारों, हिंदी पत्रिकाओं, हिंदी चैनलों, हिंदी रेडियो और हिंदी फिल्मों की जरूरत पड़ेगी ही।हिंदी माध्यमों का विकास होगा तो निस्संदेह हिंदी का भी विकास होगा। बाजार और मीडिया का विस्तार होगा तो हिंदी भी फैलेगी और जब तक बाजार और मीडिया है तब तक हिंदी मौजूद रहेगी।बाजार और मीडिया ने हिंदी जाननेवालों को बाकी दुनिया से जुड़ने के नए विकल्प खोल दिये है । फिल्म, टी.वी., विज्ञापन और समाचार हर जगह हिंदी का वर्चस्व है।

निर्विवाद तथ्य है कि खड़ी बोली ही आज की हिंदी है।भारत के हिंदी मीडिया की भाषा भी यही है, पत्र- पत्रिकाओं की भी और टेलीविजन और फिल्मों की भी।हिंदी भाषा का निर्माण और आगे बढ़ाने का कार्य मीडिया ने किया है।साहित्य बहुजन हिताय बहुजन सुखाय की उदात्त भावना लेकर चला है तो पत्रकारिता भी इसी प्रकार के मानव कल्याण के उद्देश्य को लेकर अवतरित हुई है।वस्तुतः साहित्य जीवन की कलात्मक अभिव्यक्ति है। पत्रकारिता भी सत्यम, शिवम सुंदरम की ओर जन मानस को उन्मुख करती है।यदि

साहित्य समाज का दर्पण है तो पत्रकारिता उस समाज की प्रतिकृति है। हिंदी साहित्य के क्रमिक विकास पर दृष्टि डालें तो हम पाएंगे कि पत्र पत्रिकाओं की साहित्य के विकास में अहम भूमिका रही है।वास्तव में भाषा के प्रचार प्रसार में इनका उल्लेखनीय योगदान रहा है।

हिंदी जैसी सरल और उदार भाषा शायद ही कोई हो। हिंदी सबको अपनाती रही है, सबका यथोचित स्वागत करती रही है। इसने किसी भी भाषा के शब्द को अपने अंदर समाहित करने में गुरेज नहीं किया।अंग्रेजी, अरबी, फारसी, तुर्की, फ्रांसीसी, पुर्तगाली आदि विदेशी शब्द हिंदी की शब्दकोश में मिल जायेंगे।जो भी इसके समीप आया सबको गले से लगाया।भौगोलिक विस्तार के अनेक जनपदों और उनके व्यवहृत अठारह बोलियों (पश्चिमी हिंदी के अंतर्गत खड़ी बोली, बाँगरू, ब्रजभाषा, कन्नौजी, पूर्वी हिंदी में अवधी, बधेली, छत्तीसगढ़ी, बिहारी में मैथिली, मगही, भोजपुरी, राजस्थानी में मेवाती-अहीरवादी, मालवी, जयपुरी-हाड़ौती, मारवाड़ी- मेवाड़ी तथा पहाड़ी में पश्चिमी पहाड़ी, मध्य पहाड़ी, पूर्वी पहाड़ी) के वैविध्य को, जिनमें से कई व्याकरणिक दृष्टि से एक-दूसरे की विरोधी विशेषताओं से युक्त कही जा सकती है, हिंदी भाषा बड़े सहज भाव से धारण करती है।हिंदी के स्वरूप के सम्बन्ध में इसलिए वैचारिक द्वैत की भावना ग्रियर्सन में जगह-जगह दिखती है।'भाषा सर्वेक्षण' की भूमिका में वे लिखते है 'इस प्रकार कहा जा सकता है और सामान्य रूप से लोगों का विश्वास भी यही है कि गंगा के समस्त काँठे में, बंगाल और पंजाब के बीच उपजी अनेक स्थानीय बोलियों के बीच केवल एकमात्र प्रचलित भाषा हिंदी ही है.' इन सारी बोलियों के समूह और संश्लेष को पहले भी हिंदी, हिंदवी, हिंदई कहा जाता था, और आज भी हिंदी कहा जाता है।बंटवारे से पहले समूचे पाकिस्तान में पंजाब से लेकर सिंध तक हिंदी की बोली समझी जाती थी।लाहौर हिंदी का गढ़ था।वहाँ हिंदी के कई बड़े प्रकाशन भी थे।बंटवारे के बाद हिंदी की अनदेखी की गई, लेकिन हिंदी फिल्मों और भारतीय टीवी चैनलों के मनोरंजक कार्यक्रमों, धारावाहिकों के कारण वहाँ हिंदी का प्रभाव फिर बढ़ रहा है।नेपाल और बंगलादेश में भी हिंदी का प्रभाव है।50 देशों में हिंदी पढाई जा रही है।500 से ज्यादा संस्थानों में हिंदी की पढ़ाई होती है।अमेरिका से लेकर चीन तक कई विश्व-विद्यालयों में हिंदी पढ़ाई जा रही है।ब्रिटेन, अमेरिका, कनाडा, दक्षिण अफ्रीका, मॉरीशस, युगांडा, गुयाना, फिजी, नीदरलैंड, सिंगापुर, त्रिनिदाद, टोबैगो और खाड़ी देशों में बड़ी संख्या में हिंदी भाषी है। दुबई जैसे शहरों में हिंदी बोलचाल की भाषा बन गयी है.

विगत कुछ दशकों से हिंदी भाषा के व्यापक प्रचार-प्रसार के माध्यम से भौगोलिक, भाषाई तथा सांस्कृतिक सीमाएं तोड़ दी है। इसका एकमात्र कारण सोशल मीडिया पर हिंदी का भाषागत विस्तार है । आज हम देख रहे है कि रजत पटल पर छाई हिंदी फिल्में विदेशों में भी बहुत पसन्द की जा रही है। सुमधुर-भावमयी हिंदी गीतों के लाइव कॉन्सर्ट विदेशों में आयोजित किए जाते है, दशकों से दूरदर्शन पर हिंदी भाषा में प्रसारित होने वाले सामाजिक, पौराणिक, ऐतिहासिक, पारिवारिक और धार्मिक हिंदी धारावाहिकों ने भारत देश ही नहीं, विदेशों में भी धूम मचाने के साथ ही राष्ट्रीय एकता के सशक्त सूत्र बनकर हिंदी भाषा को जनमानस की भाषा बनाने में कोई कसर नहीं छोड़ी है।

आज लगभग हर वर्ग के व्यक्ति के पास उसका अपना व्यक्तिगत मोबाइल होता है। लोगों के संप्रेषण को सुविधाजनक बनाने हेतु नित्य नई प्रयुक्तियाँ जारी की जा रही है जो कि हिंदी में भी उपलब्ध है। मोबाइल और कंप्यूटर में हिंदी टाइप करने हेतु यूनिकोड की सुविधा भी है, जिसके अंतर्गत अंग्रेजी में स्पेलिंग बनाकर टाइप करने से हिंदी टायपिंग आसानी से की जा सकती है। हिंदी टाइपिंग की क्लिष्टता को यूनिकोड "मंगल फोंट" ने अत्यंत आसान कर दिया है। साथ ही वाइस टायपिंग से आज मोबाइल पर व्हाट्सएप और टेक्स्ट मेसेज भेजना और भी आसान हो गया है, इस माध्यम से हिंदी टंकण न जानने वाला भी बहुत कम समय में अपनी बात सामान्य बोलचाल वाली हिंदी भाषा में बोलकर आसानी से संवाद -संप्रेषण स्थापित कर सकता है।

वर्तमान में "इंटेरनेट यानी अन्तर्जाल" भी हिंदी के प्रचार – प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। आज इंटरनेट पर 15 से ज्यादा हिंदी सर्च इंजिन मौजूद है। ज्ञातव्य है कि अधिकतर लोग इंटरनेट का उपयोग करते है । यहां तक कि लगभग सभी सरकारी -अर्ध सरकारी कार्यालयों में "राजभाषा अधिकारी और राजभाषा सहायक कार्यरत होते है और वे अपने अधीनस्थ समस्त शाखाओं में कार्यरत कर्मियों को हिंदी भाषा में कार्यालयीन कार्यों के संपादन के साथ ही ई-मेल से पत्राचार के लिए हिंदी में कार्य करने का प्रशिक्षण देते है । विदित हो कि प्रत्येक कार्यालय में हिंदी के व्यापक प्रचार- प्रसार हेतु हिंदी में अधिकाधिक कार्य करने वाले कर्मी को पुरस्कृत करने की योजनाएँ भी सम्मिलित है। कर्मी के कार्यसंपादन में मेल द्वारा किए पत्र व्यवहार भी शामिल किए जाते है। यहां गौरतलब है कि आज "पेपरलेस ऑफिस" की ओर कदम बढ़ाने हेतु व्यापक प्रयासों का क्रियान्वयन किया जा रहा है। पुरस्कार योजनाओं का लाभ उठाने अधिकतर कर्मी नेट पर हिंदी में काम करना सीख रहे है। इस बाबत यह सर्व विदित है कि विगत कुछ वर्षों से सरकार वृक्ष बचाओ अभियान के तहत सभी संस्थानों में कागज के उपयोग को कम करने हेतु व्यापक अभियान मीडिया के माध्यम कर रही है।

आज बाजार में प्रसारित विज्ञापनों पर मनन करें तो पाएंगे कि स्वास्थ्य, ज़ीवन बीमा, अंगदान जैसे अहम मुद्दों को प्रचारित -प्रसारित करने और लोगों को आकर्षित करने के लिए विज्ञापन कंपनियां हिंदी भाषा का ही अधिक प्रयोग कर रही हैं, क्यूंकि हिंदी भाषा में गुन्थित वाक्य विन्यास एवम संवाद भावनात्मक व मनोवैज्ञानिक रूपा से मानव मात्र के हृदय के अंतस को छूने में अत्यंत कारगर सिद्ध होते हैं।

वर्तमान युग में रसना को सुस्वाद से दो-चार करने और आपाधापी भरी प्रतिस्पर्धात्मक ज़ीवन शैली में स्वयं को सरगम से सजी धुनों को सुनकर नई ऊर्जा से सराबोर करने में दो ही चीजें विशेष रूप से महत्वपूर्ण होती है , एक तो शहर के कोने कोने में लजीज व्यंजनों को प्रस्तुत करते नई नई थीम वाले रेस्टोरेंट और गांव-शहर में स्थापित विविध

एफ एम चैनल। जहां एक ओर ऐसे लुभावने रेस्टोरेंट के विज्ञापन जनसामान्य को आकर्षित करने वाली भाषा हिंदी में सिटी टी वी चैनल पर प्रसारित होती है वही दूसरी ओर अधिकांश एफ एम में कार्यक्रमों का प्रसारण हिंदी भाषा में ही होता है क्यूंकि हिंदी भाषा प्रत्येक वर्ग के मन- मस्तिष्क पर अमिट छाप छोडती है साथ ही इसमें प्रसारित होने वाले समाचार भी शहर-गांवों और दूरदराज क्षेत्रों में प्रसारित होते है।

जब मीडिया के माध्यम से हिंदी के प्रचार-प्रसार की बात हो रही है तो "समाचार पत्र" भी जेहन में आता है। बेशक रवि-रश्मियों के कोमल स्पर्श और चाय की चुस्कियों के साथ समाचार पत्र पढ़ना हम सभी का प्रिय शगल बरसों से रहा है और ताज्जुब की बात है कि आज के कम्पूटर युग में भी अंग्रेजी की तुलना में हिंदी समाचार पत्रों की संख्या कहीं अधिक है।

एक जमाना था जब वेबसाइट और ब्लॉग्स अंग्रेजी में ही उपलब्ध थे किंतु हिंदी भाषा की क्रांति धारा ही प्रवाहित हो चली है और हम देख सकते है कि हिंदी बेबसाइट का उपयोग करने वालों का आंकडा दिन-दिन बढ़ता चला जा रहा है , साथ ही लोग ब्लॉग्स भी हिंदी भाषा में लिखना और पढ़ना भी ज़्यादा पसन्द कर रहे हैं क्यूंकि हिंदी भाषा देशवासियों के दिल के करीब है।

नशाखोरी की गिरफ्त से आज की युवा पीढ़ी को मुक्त करने के लिए समाचार पत्रों, टी वी और सिनेमा घरों में फिल्म

प्रसारण में आते हिंदी विज्ञापनों का लाभ कई पाठकों और दर्शकों तक पहुंचने में सफल होता है। ठीक इसी तरह गांवों के कोने -कोने में बसें लोगों तक लाइलाज बीमारियों का कम समयावधि में इलाज कराने की सुविधा को सोशल मीडिया पर हिंदी भाषा में प्रसारित किए जानै से कम पढ़े लिखे और दूर दराज में निवास करने वाले लोग भी लाभान्वित होते रहे हैं।

आज की पीढ़ी की शिक्षा संबंधी पठन सामग्री भी अंतरजाल पर सरल -सुलभ उपलब्ध है। गूगल पर विषय वस्तु पठनीय और यू ट्यूब पर छोटे छोटे वीडियो के माध्यम से हिंदी में बहुत ही सुन्दर तरीके से समझाया गया है।

सरकारी और व्यक्तिगत प्रयासों से आज यह बोलते हुये अत्यंत हर्षानुभूति होती है कि आज हमें हिंदी भाषी कहलाने में किसी प्रकार की हीन भावना का अनुभव नहीं होता क्यूंकि अब मीडिया ने भारत की हिंदी भाषा का संपूर्ण धरा पर विस्तारीकरण कर भाषा को गौरव और सम्मान प्रदान किया है।

हिंदी भारत की राजभाषा है और भारतवर्ष के हिंदी पढ़ने-लिखने और बोलने वाले 70% लोग भी इस बात से अनभिज्ञ हैं ।सभी हिंदी को राष्ट्रभाषा मानते है । राजभाषा के रूप में लगातार हम हिंदी का प्रयोग कर रहे है । हिंदी के समाचार पत्र ,हिंदी के पत्र पत्रिकाएं, हिंदी के न्यूज़ चैनल तथा हिंदी भाषा पर आधारित तमाम तमाम चैनल हिंदी के प्रचार प्रसार में अपना महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे है ।

पिछले कुछ सालों का अनुभव यह बता रहा है जितने भी लोग व्हाट्सएप और फेसबुक से जुड़े हैं उनमे से ज्यादातर कलमकार हिंदी में लिख पढ़ रहे हैं और बहुत अच्छा लिख पढ़ रहे हैं । हिंदी का उत्तरोत्तर विकास हो रहा है ।हिंदी दक्षिण भारत में भी पहुंच रही है। हिंदी जम्मू और कश्मीर में भी पहुंच रही है ।हिंदी गुजरात में पांडिचेरी में और केरलम में भी पहुंच रही है। इस आभासी दुनिया के साथ एकजुट होकर हिंदी अपना एक मुकाम आज बना रही है। व्हाट्सएप और फेसबुक समूहों में हिंदी के भाषाविद , हिंदी की जानकारी रखने वाले, हिंदी व्याकरण की जानकारी रखने वाले हिंदी लिखने पढ़ने में जिन पक्षों का ध्यान रखा जाना चाहिए, उसको जानने वाले आ चुके है और भी व्हाट्सएप ग्रुप और फेसबुक पर एक क्लास भी लगाने लगे हैं । कहीं दोहा सिखाया जा रहा है तो कहीं गजल भी सिखाई जा रही है। कुछ जगहों पर बेबाक तो अधिकांश जगहों पर सांकेतिक समीक्षा की जा रही है।

व्हाट्सएप के कई ग्रुपों में प्रातः काल में जो अच्छे-अच्छे संदेश मिला करते है। वह वाकई पहले दर्शन नहीं होते थे। वह कभी कभार हुआ करते थे। क्योंकि वह पत्र-पत्रिकाओं में कभी कभार मिल जाते थे या साधु-संतों की नगरी या साधु-संतों के कार्यक्रम के दौरान कुछ पढ़ने को मिल जाते थे। भारत के प्राचीनतम हिंदी भाषा में लिखे गए तमाम जानकारी आज व्हाट्सएप और फेसबुक पटल पर कुछ लोग उपलब्ध कराने में लगे है । वह सब कुछ बिना किसी स्वार्थ के।

हिंदी साहित्य में कुछ लोग हिंदी को व्यापार बनाने में भी लगे है । यूं तो कहते है कि लेखन क्षेत्र में स्वान्तः सुखाय में ज्यादा लोग रहते है और तो यहीं से धीरे-धीरे वे लेखन को एक व्यापार की तरफ ले जाने लगते हैं। साझा संकलन उसका एक जीता जाता उदाहरण है। जिस तरह से साझा संकलन का व्यापार चल पड़ा है। जिसके अंदर सभी मिल जुलकर एक साथ सबको पढ़ते है। साहित्य के नाम पर साझा संकलन में जो परोसा जाता है। वह जिसके लिए परोसा जाता है वहीं तक सीमित रह जाता है । उस साझा संकलन में कुछ रचनाओं को छोड़ दे तो शेष रचनाएं क्या होती है वह समझ से परे होता है ।परंतु साहित्य का यह भी एक पक्ष है जिसके अंतर्गत कुछ कलमकार छप तो जाते है । कुछ कलाकारों को छाप दिया जाता है।

सोशल मीडिया ने एक सबसे बड़ा काम यह किया है जिससे कलमकारों के बीच की दूरियां खत्म होने लगी है। कलमकार एक दूसरे को जानने समझने लगे है आपकी हिंदुस्तान में एक पहचान बन रही है। सोशल मीडिया ने नागरिकों की झिझक को खत्म कर दिया। वैसे तो हिंदी भाषा देश के

70% भागों में बोली जाती है ।लेकिन जब लिखने की बारी आती है तो कुछ लोग ही लिख पाते है। चिट्ठियों का दौर समाप्त हुआ तो व्हाट्सएप और फेसबुक पर पत्र लिखे जाने लगे। अपनी बातें लोग पहुंचाने में लग गए। दिन प्रतिदिन हिंदी भाषा भाषी लोगों का संख्या में बढ़ोत्तरी हो रहा है। सोशल मीडिया ने इस बार भारत में जो चुनाव हुए उसमें भी बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। लोगों को चुनाव के प्रति जागरूक किया। यह भी सही है कि चुनाव से जुड़े बहुत सारे फेक न्यूज़ और आचार संहिता का उल्लंघन करते हुए पोस्ट भी पाए गए। ऐसे पोस्टों के विरुद्ध कार्रवाई का भी प्रावधान है। सोशल मीडिया का काला पक्ष उजागर होना चाहिए ।सोशल मीडिया के हानिकारक तत्वों को दूर करना भी जरूरी है ।

कुल मिलाकर हम कह सकते है सोशल मीडिया अपने अपने बाल्यकाल में है । ज्यों-ज्यों इसमें अच्छे लोगों को प्रवेश मिलता जाएगा वह अपने युवावस्था में आएगा ।तब इसमें बहुत सारे गुण अपने आप दिखाई पड़ने लगेगा । अपने आप अवगुण दूर होने लगेंगे। जो साहित्य के रसिक है वह हिंदी का भला करेंगे और लोगों को हिंदी साहित्य का महत्व अपने आप समझ में आने लगेगा ।

जरूरी है व्हाट्सएप और फेसबुक के एडमिन इस बात पर ज्यादा ध्यान दें । कुछ एडमिन ऐसे भी है जो फेसबुक जारी रखे हुए है लेकिन उस पर क्या हो रहा है उस पर कोई टिप्पणी नहीं करता। अगर वास्तव में उनकी कोई रुचि नहीं है तो उसको उन्हें बंद कर देना चाहिए ।क्योंकि बिना मालिक का घर जी का जंजाल बन जाता है।

हिंदी लेखन जगत में एक और दुखद पहलू देखने में आया है दूसरों की अच्छी-अच्छी लिखी हुई रचनाओं को लोग अपने नाम से पोस्ट करने लगे है और कुछ लोगों को तो इस पोस्ट के जरिए कुछ सम्मान भी मिल गए है। यह बहुत ही कष्टप्रद पक्ष है जो लोग इस भय से बस अपनी रचना नहीं लिखते है कि उनकी रचना चोरी हो जाएगी वह भी गलत कर रहे है। आप प्रतिवाद करिए जिसने आपकी रचना चोरी की है उसे समाज के सामने लाईए। उसे साहित्य जगत से तड़ी पार कराइये। तभी जाकर एक स्वस्थ साहित्यिक परिवार के अंश आप कहलाएंगे किसी परिस्थिति से भागना उससे मुंह मोड़ लेना कायरता ही कहलाएगा। जो लोग अच्छा कर रहे है उनके साथ जुड़ना और हिंदी का विकास करना अपना नैतिक कर्तव्य मानकर उसने अपना उसमें अपना बहुमूल्य योगदान देना, यह कार्य सभी करने लगे तो हिंदी भाषा का विकास और भी तेज गति से होने लगेगा। जिस दिन भारत के शत प्रतिशत लोग हिंदी भाषा में काम करने लगेंगे उस दिन पूरा विश्व हिंदी भाषा के महत्व को समझ जाएगा और पूरा विश्व हिंदी को अपना लेगा।

यात्रा संस्मरण

बाली

पूनम मुंजाल
पर्यवेक्षक
महानिदेशक लेखापरीक्षा (रक्षा सेवाएँ)
का कार्यालय, दिल्ली – 110010

किसी भी मध्यम वर्ग परिवार में रहने वालो का एक सपना होता है विदेश यात्रा का, मेरा भी था। और यह सपना सच हुआ मेरी शादी के 25 वर्ष पूरे होने पर। बच्चों ने विवाह की 25वीं वर्षगाँठ विदेश में मनाने के लिए कहा और जगह चुन ली 'बाली'। अकेले जाने की हिचकिचाहट थी तो उन्होंने मेरे एक मित्र को सपत्नीक बाली साथ जाने को राजी कर दिया। 6 दिनों की इस यात्रा के लिए घर बैठे ही सभी बुकिंग ऑनलाइन कर दी। मिलिंडा एयरलाइंस की आने जाने की टिकट, होटल खाना-पीना और परिवहन की सभी व्यवस्था हो गई। सरकारी नौकरी में विदेश जाने की अनुमति लेनी होती है । अतः जरूरी औपचारिकताएं पूरी कर ली और अब यात्रा के दिन का बेसब्री से इंतजार करने लगे।

23 सितम्बर, शाम छः बजे हम घर से निकले। वच्चों ने हमें विदा किया । पहली बार बच्चों को इस तरह घर छोड़कर 5-6 दिनों के लिए जा रहे थे, लेकिन बच्चे अब बड़े हो गए हैं। बहुत ही मिले-जुले भाव आ रहे थे। डर, रोमांच, उत्साह से भरा था वह पल । यही दृष्य मित्र के घर का भी था । हम चार लोग इन्दिरा गाँधी इन्टरनेशनल एयरपोर्ट के टी थ्री ट्रमिनल पहुँच गये । अंतर्राष्ट्रीय उड़ानों में ढाई घंटा पहले एयरपोर्ट पहुँचने के निर्देश हैं । सुरक्षा जांच और इमिग्रेशन के बाद हम जहाज में बैठने के लिए तैयार थे । पहली बार हमारे पासपोर्ट पर देश से बाहर जाने की स्टैंप लगी ।

हमारी दिल्ली से बाली की हवाई-यात्रा बहुत ही सुखद रही । खाना-पीना आता रहा और थोड़ी-थोड़ी देर की झपकी लेकर हमने करीब ग्यारह घंटे की यात्रा पूरी की । बीच में मलेशिया की राजधानी क्कालालंपुर में फ्लाइट बदलनी पड़ी । दिल्ली से बाली की हवाई दूरी करीब 5,822 किलोमीटर है और टाईम में करीब ढाई घंटे बाली आगे है । मतलब यह कि जब हम बाली में दस बजे पहुँचे तो दिल्ली में उस समय साढ़े सात बजे थे ।

बाली के डेन्सापर एयरपोर्ट पर सभी औपकारिकताएँ पूरी कर हम बाहर निकले और हमारे नाम की पट्टी लिए कुटूट रुडी खड़ा था। रुडी हमारा ड्राइवर, गाईड, फोटोग्राफर सभी कुछ था और अगले 5 दिनों के लिए हमारे साथ रहने वाला था। उसने बहुत ही गर्मजोशी से हमारा स्वागत किया और फूल-मालाएं पहनाकर बाली की संस्कृति का परिचय दिया । सामान गाड़ी में रखकर हम अपने होटल के लिए चल पड़े। रास्ते में करंसी ली, वहां पर इंडोनेशियन रूपया चलता है और भारत के 100 रु० इंडोनेशियन के 14000 रूट के बराबर थे।

एयरपोर्ट से होटल जाते हुए हमारी आँखे ज्यादा से ज़्यादा देखना चाहती थी। बाली के बाजार और समुद्री तट से होते हुए हम अपने होटल पहुंच गए । रास्ते में रूडी ने बताया कि बाली द्वीप जावा के पूर्व और लोम्बोक के पश्चिम में स्थित है। बाली में हिंदू धर्म प्रमुख धर्म है और यहां की संस्कृति बहुत समृद्ध है। बाली एक लोकप्रिय पर्यटन स्थल है जो अपने खूबसूरत समुद्र तटों, सर्फिंग, मन्दिरों और प्राकृतिक दृश्यों के लिए जाना जाता है

होटल में अपने-अपने कमरे चैक किये और थोड़ा आराम किया। हमारे आज के कार्यक्रम में क्रूज पर घूमना और डिनर

था । मैं और मित्र एक-दो जरुरी सामान खरीदने के लिए पास की मार्किट में गये । हर तरफ विदेशी टूरिस्ट थे और वहाँ के लोग बहुत ही सहयोगी थे, बाजार में हर चीज का मोल-भाव बहुत करना पड़ता था ।

शाम को तरो-ताजा होकर हम क्रूज के लिए निकल गए । शाम को छः बजे हम क्रूज पर पहुँच गये । यह हमारा पहला अनुभव था । बहुत ही सुहावना मौसम था । क्रूज धीरे-धीरे चल रही थी। जलती-बुझती रोशनियां, आसमान में चाँद और बिखरे हुए तारे माहौल को और भी रंगीन बना रहे थे ।क्रूज पर नाच-गाने का भी प्रबंध था और कई गेम्स भी थे । हम चारों ने खूब डाँस किया, गेम्स खेले भी और जीते भी, फिर वहीं क्रूज पर डिनर भी किया। बहुत अच्छा लगा और फिर होटल वापिस आ गए। बच्चों को फोन किया और अभी तक का सारा बता दिया । वो भी बहुत खुश थे हमारी बातें सुनकर । रातको हम चारों बैठकर खूब बातें करते रहे और फिर सो गए।

25 सितम्बर – आज शादी की 25वीं सालगिरह सुबह उठकर अपने पतिदेव को बधाई दी और भगवान को हाथ जोड़कर नमन किया और सुखी विवाहित जीवन के लिए धन्यवाद किया। तभी मेरे मित्र और उनकी पत्नी आ गए। वो दिल्ली से हमारे लिए एक तोहफा लाए थे – अच्छा लगा। फिर नाश्ता किया। शाकाहारी व्यक्तियों के लिए थोड़ी दिक्कत थी, लेकिन हम घर से पूरी तैयारी करके आए थे । आज हम बाली के प्रसिद्ध मंदिरों में गए जिसमें 'तीरता एम्पुल', 'भीक टैम्पल', 'गोवा गजाह टैम्पल' शामिल थे तत्पश्चात बाली के प्रसिद्ध चावल की छतों को देखने 'तेगाललांग' भी गए। आज हमने 'किन्तामनी ज्वालामुखी' भी देखा। कुछ साल पहले इसमें से लावा निकला था जिससे बाली के काफी बड़े हिस्से को नुकसान पहुँचा था और लावा की राख बाली एयरपोर्ट तक पहुँच गई थी। अब तक काफी थक चुके थे और फिर शाम भी हो गई थी और फिर होलट पहुँच गये । शाम को चाय पी और थोड़ा आराम करने के बाद स्विमिंग पूल में मस्ती करते रहे । देर रात को खाना खाकर हम सोने चले गये ।

26 सितम्बर को हमने बाली के कई समुद्री तट देखे । साफ पानी और साफ वातावरण ने मन मोह लिया । हम एक ऑडीटोरियम भी गए और वहाँ राम-लीला के एक हिस्से का मंचन भी देखा। देखकर अच्छा लगा कि बाली में कलाकार राम-लक्ष्मण और सीता का कितना अच्छा अभिनय कर रहे थे। कलाकारो के

साथ फोटो भी खिंचवाई

27 सितम्बर – आज हम सभी बाली के मशहूर एक छोटे से द्वीप पर गए जहां कछुए और मगरमच्छ पाए जाते हैं। सैंकडो कछुओं और मगरमच्छों को देखकर बहुत ही अदभुत अनुभूति हुई । वहाँ और भी कई तरह के पशु-पक्षी देखने को मिले। अच्छा लगा । फिर वहाँ से एक मशहूर समुद्रीतट 'ड्रीमलैंड' गए । यह इन्डोनेशिया के राष्ट्रपति के बेटे द्वारा विकसित समुद्री तट है जो कि अपने सफेद रेत और साफ पानी के लिए मशहूर है। मौसम बहुत सुहावना था और बहुत ही अच्छा लगा। वहीं शाम हो गई और फिर होटल वापिस चले आए ।

28 सितम्बर - आज हमारा कार्यक्रम वाटर स्पोर्ट्स करने का था। बहुत मोल-भाव करने के बाद हमने पाँच स्पोर्ट्स किए। सबसे अच्छा 'पैरा ग्लाइडिंग' लगा जिसमें एक चलती हुई नाव के ऊपर रस्सी के सहारे आकाश में थे और आसपास का नजारा ले रहे थे। फिर हमने 'सी वॉक' भी किया। ऑक्सीजन के साथ हेलमेट लगाकर हम पानी के अंदर गए और रंग-बिरंगी मछलियों को अपने आसपास तैरते भी देखा। बहुत ही रोमांचक अनुभव रहा। वहां से होटल वापिस आ गए । कैसे पाँच दिन बीत गए पता ही नहीं चला। अब अगले दिन घर वापसी था। अभी मन नहीं भरा था लेकिन अब घर-परिवार, नौकरी सब दिखने लगा था ।

29 सितम्बर को सुबह रूडी ने हमें एयरपोर्ट छोड़ दिया । उसके साथ बीते पाँच खूबसूरत दिनों में उसके सहयोग के लिए धन्यवाद किया और फिर फ्लाइट पकड़कर दिल्ली वापिस आ गए। हमारे पासपोर्ट पर बाली की स्टैंप लग चुकी थी लेकिन उससे भी बड़ी स्टैंप तो हमारे दिलों में बाली की खूबसूरत यादों की लगी जो जीवन भर याद रहेगी । इस अविस्मरणीय यात्रा के लिए मेरे मित्र, उनकी पत्नी और बच्चों का बहुत-बहुत धन्यवाद।

13 सितंबर, 1949 और हिन्दी भाषा

मोहन प्रकाश
राजभाषा अनुभाग (क.अनुवादक)
भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक का कार्यालय, नई दिल्ली

13 सितंबर, 1949 का दिन भारतीय संविधान सभा के इतिहास में अत्यंत महत्वपूर्ण था। यह वह समय था जब भारतीय संविधान के निर्माण की प्रक्रिया अपने अंतिम चरण में थी और इस दिन संविधान सभा में हिन्दी भाषा को लेकर एक गहन और विचारोत्तेजक बहस हुई। इस बहस ने भारतीय समाज, संस्कृति, और बहुभाषी पहचान के विविध पहलुओं को उजागर किया। संविधान सभा में उपस्थित सदस्यों ने इस दिन हिन्दी को राष्ट्रीय भाषा के रूप में स्वीकार करने या न करने के बारे में गंभीर विचार- विमर्श किया।

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के दौरान भाषा का प्रश्न एक अहम मुद्दा था । हिन्दी, जो उत्तर भारत में व्यापक रूप से बोली और समझी जाती थी, उसे राष्ट्रभाषा के रूप में मान्यता दिलाने का विचार स्वतंत्रता सेनानियों के मन में प्रमुखता से था । महात्मा गांधी ने भी अपने भाषणों में हिन्दी को जन-जन की भाषा के रूप में अपनाने पर बल दिया था। संविधान निर्माण की प्रक्रिया के दौरान भी यह मुद्दा बार-बार उठाया गया। भारत

में सैकड़ों भाषाएं और बोलियाँ बोली जाती हैं, और कई प्रांतों की अपनी-अपनी भाषाई पहचान है। दक्षिण भारत में तमिल, तेलुगु, कन्नड़, मलयालम जैसी भाषाएं प्रमुख थीं, जबकि पूर्वोत्तर और पश्चिमी भारत में बंगाली, गुजराती, मराठी जैसी भाषाओं का बोलबाला था। इस विविधता के बीच एकमात्र हिन्दी भाषा को राष्ट्रभाषा बनाने की मांग ने कई लोगों के बीच असंतोष पैदा किया।

13 सितंबर, 1949 को संविधान सभा में भाषाई मुद्दों पर चर्चा हुई, और इस दिन का प्रमुख विषय था हिन्दी को राजभाषा के रूप में मान्यता देने का प्रस्ताव | इस प्रस्ताव के पक्ष और विपक्ष में जोरदार तर्क- वितर्क हुए। हिंदी को समर्थन देने वाले यह तर्क दे रहे थे कि हिन्दी एकमात्र ऐसी भाषा है जो भारत की जनसंख्या के बड़े हिस्से द्वारा बोली और समझी जाती है। उनका कहना था कि हिन्दी भाषा भारतीय संस्कृति, इतिहास और मूल्यों की वाहक है और इसे राष्ट्रभाषा का दर्जा मिलना चाहिए।

हिन्दी के पक्ष में बोलने वाले सदस्यों का कहना था कि हिन्दी देश की सांस्कृतिक एकता का प्रतीक है। उनका मानना था कि यदि भारत को एक सशक्त और एकीकृत राष्ट्र बनाना है, तो हिन्दी को एकता का माध्यम बनाना अनिवार्य है । हिन्दी समर्थक यह भी मानते थे कि अंग्रेज़ी को अधिक समय तक भारत की आधिकारिक भाषा बनाए रखना औपनिवेशिक मानसिकता को बढ़ावा देगा, और यह भारतीयों के आत्मसम्मान को ठेस पहुंचाना होगा।

हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने के समर्थकों में प्रमुख नाम थे- पुरुषोत्तम दास टंडन, सेठ गोविंद दास और डॉ. राजेन्द्र प्रसाद। पुरुषोत्तम दास टंडन ने हिन्दी को राजभाषा बनाए जाने की जोरदार वकालत की। उनका कहना था कि हिन्दी का स्वाभाविक विकास हुआ है और यह भारतीय जनमानस की अभिव्यक्ति की भाषा है। उन्होंने यह भी तर्क दिया कि हिन्दी सरल है और इसे देश के विभिन्न हिस्सों में आसानी से सिखाया जा सकता है।

सेठ गोविंद दास ने अपने भाषण में कहा कि हिन्दी भाषा में भारतीय संस्कृति की गहराई है, और इसे देश की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया जाना चाहिए। उन्होंने यह भी कहा कि अंग्रेजी को राजभाषा बनाए रखने का कोई औचित्य नहीं है, क्योंकि यह विदेशी भाषा है और इसे जनता द्वारा सहजता से अपनाना कठिन है।

दूसरी ओर, हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाए जाने का विरोध करने वाले सदस्य भी अपनी मजबूत राय रखते थे। उनके अनुसार, हिन्दी को अनिवार्य रूप से राजभाषा बनाने का कदम देश की भाषाई विविधता को नजरअंदाज करेगा और इसके परिणामस्वरूप भाषाई विभाजन और असंतोष पैदा हो सकता है। दक्षिण भारत के कई नेताओं ने इस मुद्दे पर विशेष रूप से विरोध जताया, जिनमें प्रमुख नाम थे - टी.टी. कृष्णमाचारी, गोपालस्वामी अयंगार और टी. प्रकाशम।

टी.टी. कृष्णमाचारी ने अपने भाषण में स्पष्ट किया कि भारत की भाषाई विविधता को नजरअंदाज करना खतरनाक होगा। उन्होंने कहा कि दक्षिण भारत में तमिल, तेलुगु और कन्नड़ जैसी भाषाओं की अपनी समृद्ध परंपरा और संस्कृति है। यदि हिन्दी को अनिवार्य रूप से राजभाषा बनाया गया, तो दक्षिण के लोग इसे अपने ऊपर थोपा गया महसूस करेंगे, जिससे देश की एकता को नुकसान पहुंचेगा।

गोपालस्वामी अयंगार ने सुझाव दिया कि हिन्दी के साथ साथ अंग्रेजी को एक वैकल्पिक आधिकारिक भाषा के रूप में बनाए रखा जाना चाहिए, ताकि सभी भारतीयों को संवाद करने के लिए एक सामान्य मंच मिल सके। उनका मानना था कि अंग्रेजी एक ऐसी भाषा है जिसे देश के विभिन्न हिस्सों में आसानी से सीखा और समझा जा सकता है, और यह भाषाई विभाजन को कम करने में मददगार होगी।

इस बहस के दौरान, कई सदस्यों ने बीच का रास्ता खोजने का प्रयास किया। उनके अनुसार, न तो हिन्दी को पूरी तरह से नजरअंदाज किया जाना चाहिए, न ही उसे थोपना चाहिए। डॉ. बी. आर. अंबेडकर और पंडित जवाहरलाल नेहरू जैसे नेताओं ने इस दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

डॉ. अंबेडकर ने सुझाव दिया कि हिन्दी को आधिकारिक भाषा के रूप में अपनाया जा सकता है, लेकिन इसे राष्ट्र पर थोपा नहीं जाना चाहिए। उनके अनुसार, देश की भाषाई विविधता को सम्मान देने के लिए एक समावेशी दृष्टिकोण अपनाना जरूरी था। उन्होंने यह भी कहा कि संविधान में ऐसे प्रावधान होने चाहिए जो यह सुनिश्चित करें कि कोई भी भाषा किसी अन्य पर थोपी न जाए।

पंडित जवाहरलाल नेहरू ने भी इस मुद्दे पर संतुलित दृष्टिकोण अपनाया । उनका मानना था कि हिन्दी को राजभाषा के रूप में स्वीकार किया जा सकता है, लेकिन अंग्रेजी को भी कुछ वर्षों के लिए एक सहायक भाषा के रूप में बनाए रखा जाना चाहिए, ताकि देश के विभिन्न प्रांतो के लोग एक दूसरे से संवाद कर सकें। उन्होंने कहा कि देश की एकता और अखंडता के लिए भाषाई सहिष्णुता आवश्यक है।

13 सितंबर, 1949 की बहस के बाद, संविधान सभा ने एक समझौते पर पहुंचने का निर्णय लिया। इस समझौते के तहत यह तय किया गया कि हिन्दी भारत की राजभाषा होगी, लेकिन अंग्रेजी को भी अगले 15 वर्षों तक एक सहायक आधिकारिक भाषा के रूप में बनाए रखा जाएगा। यह निर्णय इस उद्देश्य से लिया गया कि अंग्रेजी के प्रयोग को धीरे-धीरे कम किया जाएगा और इस दौरान विभिन्न भारतीय भाषाओं के विकास को प्रोत्साहित किया जाएगा।

इस समझौते में यह भी स्पष्ट किया गया कि हिन्दी को किसी पर थोपा नहीं जाएगा, और राज्यों को यह स्वतंत्रता होगी कि वे अपनी क्षेत्रीय भाषाओं का प्रयोग जारी रखें। इसके अलावा, यह भी निर्णय लिया गया कि हिन्दी को राष्ट्र की एकमात्र भाषा बनाने की कोई जल्दबाजी नहीं की जाएगी, और यह प्रक्रिया समय के साथ धीरे-धीरे विकसित होगी। इस तरह हिन्दी का विकास एक भारत की सभी क्षेत्रीय भाषाओं की सहयोगिनी भाषा के रूप में आगे किया जाएगा।

संविधान सभा की यह बहस भारतीय लोकतंत्र के निर्माण की एक महत्वपूर्ण घटना थी। यह बहस न केवल हिन्दी भाषा के भविष्य के विषय में थी, बल्कि भारतीय समाज की सांस्कृतिक और भाषाई विविधता को भी सम्मान देने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम था।

इस बहस ने यह साबित किया कि भारत जैसे विविधतापूर्ण देश में किसी एक भाषा को थोपना न तो संभव है और न ही यह देश की एकता के लिए सही कदम होगा । संविधान सभा ने एक संतुलित और समावेशी दृष्टिकोण अपनाते हुए हिन्दी को राजभाषा का दर्जा दिया, लेकिन साथ ही साथ अंग्रेजी और अन्य भारतीय भाषाओं को भी उतना ही महत्व दिया।

हमने तारे नहीं खोए, हमने अंधेरा खो दिया

संदीप सिंह
कनिष्ठ अनुवादक
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा
(रक्षा सेवाएँ), चंडीगढ़

1. भूमिका

बशीर बद्र का एक प्रसिद्ध शेअर है: -

"तारों की छाँव में हम भी कभी सोया करते थे,
अब वो रातें कहाँ और वो आसमाँ कहाँ..."

कल्पना कीजिए...एक शांत रात हो, चारों ओर गहरा अंधकार फैला हो, आकाश में तारे झिलमिला रहे हों। आप किसी मखमली घास के मैदान में चुपचाप लेटे हों और आसमान की ओर टकटकी लगाए देख रहे हों — आकाशगंगा की अनगिनत कहानियाँ, टूटते तारे, और ब्रह्मांड के रहस्य...

लेकिन जैसे ही आप कल्पना से परे अपनी आँखें खोलते हैं तो सामने होती है— स्ट्रीट लाइट की तेज़ चमक, होर्डिंग्स की झिलमिलाहट और वाहनों की हेडलाइट्स की चमचमाहट। और तारे...? तारे तो कहीं नजर ही नहीं आते। ये कौन सी बला है जो रात के प्यारे अंधेरे की सुंदरता को दूषित कर रही है? जी हाँ! ये है 'प्रकाश प्रदूषण'।

2. क्या प्रकाश भी प्रदूषित कर सकता है?

हाँ, बिलकुल! प्रदूषण का अर्थ सिर्फ धुएँ और कचरे से ही नहीं होता। जब कृत्रिम रोशनी का अत्यधिक, अनावश्यक या गलत दिशा में उपयोग होता है, तो वह 'प्रकाश प्रदूषण' कहलाता है। यह एक ऐसा प्रदूषण है जिसे हम महसूस नहीं करते, लेकिन यह हमारे स्वास्थ्य, प्रकृति और पर्यावरण पर गहरा प्रभाव डालता है। यह प्रदूषण दिखने में सुंदर लग सकता है, लेकिन इसके परिणाम चौंकाने वाले हैं।

3. यह प्रदूषण कहाँ छिपा बैठा है?

क) **आकाश में** – शहरों का आसमान आजकल रातों में पीला, नारंगी या गुलाबी नजर आता है। इसे 'स्काई ग्लो' कहते हैं। तारे इस रोशनी के कारण दिखाई नहीं पड़ते।

ख) **आपके कमरे की खिड़की में** – जब पड़ोसी की छत की लाइट आपकी नींद खराब करती है, तो यह 'लाइट ट्रेसपास' होता है।

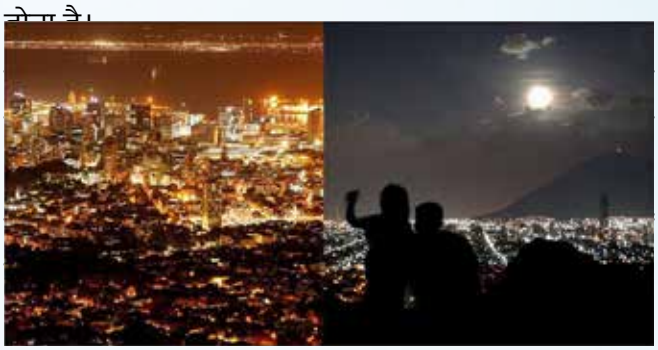

चित्र सं. 1 - द जापान न्यूज़ दिनाँक 16 फरवरी 23 https://japannews.yomiuri.co.jp/science-nature/environment/20230216-91417/

4. इस प्रदूषण के गंभीर दुष्परिणाम

क) **मानव स्वास्थ्य पर प्रभाव**

हमारे शरीर की 'जैविक घड़ी' को अंधेरे की आवश्यकता होती है। अगर रात को भी तेज़ रोशनी रहे, तो नींद की गुणवत्ता घट जाती है, जिससे तनाव, मोटापा, दिल की बीमारियों आदि का खतरा बढ़ जाता है।

ख) **प्रकृति पर प्रभाव**

समुद्र किनारे अंडे देने वाले कछुए जब अपने बच्चों को जन्म देते हैं, तो वे नवजात कछुए चाँद की रोशनी के सहारे समुद्र की ओर जाते हैं। लेकिन शहर की लाइटें उन्हें भ्रमित कर देती हैं। परिणाम स्वरूप बहुत से नवजात कछुए सड़क की ओर

चल पड़ते हैं और मर जाते हैं। यहीं नहीं, पक्षियों को दिशा का भ्रम हो जाता है। यहाँ तक कि कीटों की जीवन-प्रणाली में भी रुकावट आती है।

ग) **खगोल-शास्त्र में अड़चन**

खगोल वैज्ञानिकों के लिए अंधेरा रात का कैनवास है, जिस पर वे ब्रह्मांड की तस्वीर बनाते हैं। लेकिन जब आकाश में कृत्रिम उजाला भर जाए, तो दूरबीनें भी असहाय हो जाती हैं और तारे और ग्रह गुम हो जाते हैं। यह शोधकर्ताओं के लिए एक बड़ी समस्या है।

घ) **ऊर्जा की बर्बादी**

प्रकाश प्रदूषण सिर्फ पर्यावरणीय नहीं, आर्थिक समस्या भी है। हर साल अरबों रुपये की बिजली व्यर्थ खर्च होती है केवल उन लाइट्स पर, जिनकी वास्तव में आवश्यकता ही नहीं होती।

5. क्या आप जानते हैं?

भारत में बहुत बड़ी शहरी आबादी 'स्काई ग्लो' के कारण अब तारे नहीं देख पाती। चंद्रमा से देखा जाए, तो पृथ्वी की रातें भी अब चमकने लगी हैं। दुनिया की 80% से अधिक आबादी ऐसे क्षेत्रों में रहती है जहाँ प्रकाश प्रदूषण के कारण रात भर आकाश में पूरी तरह अंधेरा हो ही नहीं पाता। "साइंस एडवांसेस" नामक पत्रिका में प्रकाशित एक शोध लेख के अनुसार, अमेरिका और यूरोप की 99% से अधिक जनसंख्या कृत्रिम रोशनी से प्रभावित है, जिससे आकाशगंगा जैसे खगोलीय दृश्य अब सामान्य रूप से दिखाई नहीं देते। भारत भी इस समस्या से अछूता नहीं है।

चित्र सं. 2 - https://astrobackyard.com/outdoor-lighting/

ग) **ऊर्जा की बचत करें** – कम वॉट वाले बल्ब या एलईडी का उपयोग करें। इससे बिजली का व्यय भी कम होगा और पर्यावरण भी संरक्षित रहेगा।

घ) **एक रात 'स्टार पार्टी' मनाएँ** – कभी एक रात बिना कृत्रिम रोशनी के बिताएँ। प्रकृति से जुड़े और खुद महसूस करें कि अंधेरे में कितना सुहावना प्रकाश छिपा है।

7. अच्छी खबर

अच्छी बात यह है कि प्रकाश प्रदूषण, अन्य प्रदूषणों की तुलना में, एक ऐसी समस्या है जिसे हम आसानी से हल कर सकते हैं। यह एक सकारात्मक संकेत है कि हम सभी इस दिशा में बदलाव ला सकते हैं। हालांकि, केवल यह समझना कि प्रकाश प्रदूषण एक समस्या है, पर्याप्त नहीं है; हमें इसके समाधान के लिए सक्रिय कदम उठाने की आवश्यकता है। इसके लिए हमें जागरूकता फैलाने, सही नीतियों को अपनाने और व्यक्तिगत स्तर पर भी प्रयास करने की आवश्यकता है।

8. निष्कर्ष

प्रकाश जीवन के लिए जरूरी है, लेकिन जब वही प्रकाश हर चीज़ पर हावी हो जाए, तो वह एक संकट बन जाता है। रोशनी की इस अति ने हमारी रातों से तारे चुरा लिए हैं, हमारे सपनों की नींद में खलल डाला है, और प्रकृति की लय को बिगाड़ दिया है। अब समय आ गया है कि हम "रात को रात रहने दें"। रोशनी का उपयोग विवेक से करें, ताकि अंधकार फिर से अपनी सुंदरता के साथ लौट सके।

"ये रात ये तन्हाई, ये आसमाँ के तारे,
तू आजा तो इन सब में रंग भर जाए।" — गुलज़ार

क्या हम रात के उस असल रंग को फिर से लौटा सकते हैं? अगर हाँ; तो चलो, तारे फिर से गिनते हैं...

संदर्भ सूची

1. https://darksky.org/resources/what-is-light-pollution/
2. https://www.science.org/doi/10.1126/sciadv.1600377

मच्छर की मर्मभरी पुकार: कोई मेरा भी प्रेमी हो!

सत्यप्रकाश
सहायक लेखा अधिकारी
कार्यालय महालेखाकार (ले. एवं हक़), उत्तराखंड

इस जगत में हर जीव—निर्जीव, पशु—पक्षी, पेड़—पौधे, नदी—पहाड़, रेगिस्तान—समंदर, यहाँ तक कि अदृश्य जीवाणु और विषाणु तक को सम्मान मिला, प्रेम मिला, पूजा मिली। किसी ने प्रकृति से प्रेम किया, किसी ने वनस्पति से। कोई "कुत्ता प्रेमी" कहलाया, कोई "मत्स्य-भक्त", कहीं "बाघ बचाओ आंदोलन" चला, तो कहीं "तोते की टेर" पर कविताएँ लिखी गईं। यहाँ तक कि "सांप प्रेमी" भी पाए गए। पर मुझ मच्छर के लिए...? आह! ये कैसी दुनिया है, जहां मेरी buzzing को कोई कविता नहीं समझता, मेरी चुभन को कोई प्यार की चुभन नहीं मानता।

वैसे मेरा नाम मच्छू लाल है, मैं यकीनी तौर पे एक स्वाभिमानी मच्छर हूँ। जिसकी आत्मा में स्वाभिमान के साथ थोड़ी सी जलन भी घुली हुई है — जलन, इस दुनिया से, जो सिर्फ हमें 'मारने' के काबिल समझती है। तो अब आप ही बताइए, मैंने ऐसा क्या गुनाह कर दिया?

हमारे वंश का इतिहास बड़ा गौरवशाली है। मिस्र के पिरामिडों में मिले अवशेषों से लेकर आज के हाईटेक एयरपोर्ट्स तक, हमने बराबर उपस्थिति दर्ज कराई है। आप लोग कहते हैं कि हम "परेशानी" हैं। अरे जनाब! इसी परेशानी का ही तो नाम है ज़िन्दगी ! सोचिए, अगर हम न हों तो आप रैकेट, कॉइल, स्प्रे, मॉस्किटो बैट और मच्छरदानी जैसे उत्पाद कैसे बेचते? और हमारी गैरहाजरी में कितने ही स्टार्टअप बर्बाद हो जाते! फिर भला अर्थ जगत की प्यारी जीडीपी का हाल क्या होता।

गालिबन.... अब अजगर प्रेमी लोगों को ही देख लीजिए, जो चुपचाप आपके पालतू कुत्ते को निगल सकता है, उसके लिए

पालतू घर बने हैं। बाघ प्रेमी लोग जंगलों में जाकर बाघों को सलाम ठोकते हैं। मगर हम? हमने कभी किसी को निगला नहीं, सिर्फ एक बूँद खून मांगा — बस एक बूँद। पर आपको क्या, आपको तो हमारी एक "विनम्र चुभन" भी जंग की हुंकार लगती है!

हमारी इतनी प्यारी buzzing को किसी ने कभी 'प्यार की सरसराहट' नहीं कहा। हम पर कोई गीत नहीं बना, कोई प्रेम पत्र नहीं लिखा। हमको देखकर कोई "अरे क्यूट!" नहीं बोलता। उल्टा, "मारो, निपटा दो इनको!" कहते हुए चप्पल चला दी जाती है। यह अन्याय नहीं तो और क्या है?

हमारी भी तो खूबियाँ हैं! हम नि:स्वार्थ हैं, खून के अलावा कुछ मांगते नहीं, हम स्वच्छता अभियान में सहयोगी हैं — जहाँ गंदगी है, वहाँ हम हैं यानी हम 'गंदगी के संकेतक' हैं, हम आपस में लड़ते नहीं, कोई मच्छर महासभा नहीं बनाते, हमें सत्ता नहीं चाहिए, और सबसे बड़ी बात — हम आपको जीवित होने का एहसास दिलाते हैं। नींद में भी!

फिर भी, हम 'शत्रु नंबर वन' हैं।

कुत्ता प्रेमी लोग अपने कुत्तों के लिए इंस्टाग्राम चलाते हैं। बिल्लियों के फोटो पर लाखों लाइक्स आते हैं। डाल्फिन के साथ सेल्फ़ी लेते हैं। पर मच्छर प्रेमी? हमने तो कभी किसी को अपने ऊपर "फ्लाई रिपेलेंट" लगाने से मना करते नहीं देखा। कोई हमारे स्वागत में खून का प्याला लेकर नहीं बैठा। मुझे मदहोश करने वाले साधन को ये गुड नाइट कहते है..... हाय रे दुनिया! मुझे मदहोश करने वाले जिसे तुम बड़े प्यार से "गुड नाइट" कहते हो, मैं क्या कहूँ? वाह! कितना शानदार नाम है! जैसे कोई जादू की झप्पी हो जो हर दिन शाम को आती है और कहती है, "चलो, अब तुम्हें मदहोश करता हूँ।"

हमने एक बार "मच्छर प्रेमी क्लब" बनाने की कोशिश की। कुल तीन मच्छर ही आए — वो भी बिना रजिस्ट्रेशन के। इंसानों में से कोई नहीं आया। लगता है, हमारा 'फैन बेस' अभी मच्छरदानी में फंसा पड़ा है।

बाघ, शेर, गैंडों के संरक्षण के लिए योजना बनती है। 'Save the Tiger', 'Adopt a Rhino', 'Plant for Bees' — लेकिन 'Respect the Mosquito'? नहीं! हमारे लिए तो सिर्फ 'Finish the Mosquito', 'Mosquito Menace', 'Dengue Alert' जैसे टैग मिलते हैं।

हम क्या सिर्फ बीमारियाँ फैलाने के लिए बने हैं? अरे! ये तो हमारे कुछ बिगड़े हुए भाई-बहन हैं। हर समाज में दो-चार 'काले मच्छर' होते हैं, इसका मतलब ये नहीं कि पूरा मच्छर समाज दोषी है।

बायोलॉजी की किताबें हमें 'Disease Vector' कहती हैं। वाह! कोई हमें 'Life Saver' नहीं कहता जबकि हमारे कारण ही लोगों को याद आता है कि सफाई रखना ज़रूरी है। हमने कितने डाक्टरों को रोज़गार दिलाया, कितने मेडिकल स्टोर फले-फूले, कितने बायोटेक्नोलॉजी के शोध हुए — हमें तो 'रोज़गार सृजन का अघोषित ब्रांड एंबेसडर' माना जाना चाहिए।

हम कोई बेचारे बेघर नहीं, बल्कि 'ग्लोबल सिटिजन' हैं। हम दुनिया के हर कोने में हैं — सिवाय अंटार्कटिका के। हम पर्यावरण की धड़कन हैं, हवा की सरसराहट हैं, और आपके कान के पीछे की सबसे खुजलीदार सच्चाई।

तो अगली बार जब आप हमें देखकर चप्पल उठाएं, एक बार रुकिए। सोचिए — क्या कभी आपने हमारे बारे में कविता लिखी? क्या कभी किसी बच्चे ने मच्छर पालने की जिद की? क्या कोई "Mosquito Day" मनाता है बिना डेंगू के डर के? शायद नहीं।

इसलिए हम, मच्छर समुदाय, एक माँग रखते हैं:

हमें भी प्रेम किया जाए! कम से कम, एक मच्छर प्रेमी संगठन तो बनाया जाए!

(नोट: इस व्यंग्य को लिखते समय कोई मच्छर घायल नहीं हुआ, लेकिन लेखक के कान के पास एक मच्छर ने गुनगुनाते हुए यह लेख डिक्टेट किया था।)

विदेश से पहले अपने देश को देखें

सुनीता
क. अनुवादक (राजभाषा)
नई दिल्ली, मुख्यालय

घूमने-फिरने की यह प्रवृत्ति मनुष्य के स्वभाव में निहित है। मनुष्य की जिज्ञासु प्रवृत्ति ने उसे अज्ञात को जानने और अनेक रहस्यों से पर्दा उठाने के लिए प्रेरित किया है। प्राचीन काल से ही यात्रा शिक्षा का एक अभिन्न अंग रही है।अगर छात्र सीखना चाहते है और एक संपूर्ण इंसान बनना चाहते है तो सर्वप्रथम उन्हें अपने देश की यात्रा करनी चाहिए। जो व्यक्ति अपना जीवन एक ही स्थान पर बिताता है और कभी भी दूसरी जगह जाने के लिए अपना स्थान नहीं छोड़ता, उसका दृष्टिकोण बहुत संकीर्ण होता है। जब हमारे मस्तिष्क का भिन्न भिन्न अनुभवों से सामना होता है तभी हमारी बुद्धि का विकास होता है। ऐसे ही अनेक अनुभवों को प्राप्त करने का सर्वोत्तम साधन है यात्रा।

यात्रा से अलग-अलग संस्कृति और सभ्यताओं को करीब से जानने का अवसर मिलता है। इस प्रकार हम विभिन्नताओं का सम्मान करना सीखते है। यात्रा करने से भूगोल और इतिहास दोनों ही एक साथ मिलते है। आविष्कारों के युग में मानव खोज में यात्राओं के कारण ही भारी वृद्धि देखी गई और वैश्वीकरण की शुरुआत हुई। 15वीं शताब्दी की शुरुआत से लेकर 17वीं शताब्दी के मध्य तक, यूरोपीय खोजकर्ता व्यापार, ज्ञान और शक्ति की तलाश में समुद्र में गए। वर्तमान युग में दिन-प्रतिदिन शिक्षा इंटरनेट के माध्यम से सुलभ होती जा रही है, संचार और परिवहन तेज हो गया है, इसलिए आज लंबी यात्राएं करने की आवश्यकता नहीं है। फिर भी शिक्षा के एक भाग के रूप में यात्रा करना अनिवार्य होना चाहिए।

यात्रा करके किताबी ज्ञान को परिपूर्ण बनाया जाता है। इसीलिए शिक्षण संस्थान अक्सर छात्रों के लिए भ्रमण की व्यवस्था करते है। आम तौर पर सभी को ऐतिहासिक महत्व के स्थानों, संग्रहालयों, विश्व धरोहर स्थलों, नदी परियोजनाओं, बिजलीघरों, पहाड़ी क्षेत्रों आदि में ले जाया जाता है। हमने हिमालय की महिमा, समुद्र की विशालता और ताजमहल की सुंदरता के बारे में किताबों में पढ़ा है। लेकिन अगर हम उन्हें अपनी आँखों से देखें तो हम उनके बारे में बहुत कुछ अधिक जान सकते है।

आपने देखा होगा कि अमेरिकी और पश्चिमी देशों के लोग दुनिया भर में यात्रा करते है, ऐसा इसलिए नहीं है कि उनके पास खर्च करने के लिए पैसे हैं, बल्कि खोज करने का उत्साह, ज्ञान की प्यास उन्हें यात्रा करने के लिए प्रेरित करती है। धूप और समुद्र तट पर्यटन के विपरीत, जहाँ मुख्य आकर्षण आराम करना है, सांस्कृतिक पर्यटन मूल रूप से एक उद्देश्य को पूरा करता है- किसी देश को उसकी संस्कृति से अलग और कोई

नहीं परिभाषित कर सकता। उसकी कला को देखना, उसकी परंपराओं का अनुभव करना, उसके व्यंजनों को चखना और उसके इतिहास को जानना, निस्संदेह किसी देश को जानने के लिए सबसे अच्छे मार्गदर्शक है।

वैसे तो पर्यटन, किसी न किसी रूप में, हमेशा सीखने से जुड़ा रहा है, लेकिन सच्चाई यह है कि 1970 के दशक से, जब यूनेस्को ने विश्व सांस्कृतिक और प्राकृतिक विरासत पर कन्वेंशन तैयार किया और साथ ही इसे संरक्षित करने और बढ़ावा देने के प्रस्ताव भी रखे, तब से सांस्कृतिक पर्यटन ने पूरी दुनिया में बहुत ज़्यादा वृद्धि देखी है। वास्तव में, वर्तमान में 1,121 घोषित विश्व धरोहर स्थल हैं । विश्व की सबसे प्राचीन और महानतम सभ्यता भारत ने अनगिनत कलाओं और परंपराओं को जन्म दिया। भारत की सांस्कृतिक संपन्नता ने न केवल विदेशी यात्रियों और विद्वानों को आकर्षित किया, बल्कि लुटेरों और औपनिवेशिक शक्तियों का भी ध्यान खींचा! सोने की चिडिय़ा कहे जाने वाले इस देश को लूटने वाले बाहुबल और बुद्धिबल से देश की संपत्ति, ज्ञान और परंपराओं को विदेशी धरती पर ले गए।

आदिम समाजों से लेकर घने जंगलों में रहने वाले वनवासी जैसे गोंड, भील, संथाल, खासी और आपातानी तक ने प्रकृति के साथ सामंजस्यपूर्ण जीवन शैली को अपनाया। पहले यूनेस्को वैश्विक धरोहर स्थल सूची में भारत की इक्का-दुक्का धरोहर साल में स्थान पाती थीं। इसका एक बड़ा कारण यह भी होता है कि यूनेस्को वैश्विक धरोहर स्थल सूची में स्थान पाने के लिए एक लंबी प्रक्रिया से होकर गुजरना होता है। जिसमें उस स्थल पर ढांचागत सुविधाओं को दुरुस्त करने के अलावा संरक्षण से जुड़ी छोटी से छोटी बात बड़ा महत्त्व रखती है।

इस दिशा में भारत की स्थिति में सुधार वर्ष 2004 के बाद देखने को मिला। इस वर्ष 17 स्मारकों ने यूनेस्को वैश्विक धरोहर स्थल सूची में जगह बनाई। यह एक अभूतपूर्व सफलता थी। इसके बाद ये क्रम लगातार चालू है और हमारे राष्ट्रीय महत्त्व के स्मारक विश्व धरोहर स्थल सूची में स्थान

पा रहे हैं । आज ये आंकड़ा 43 तक पहुंच गया है। एक ओर भारत की उपस्थिति मूर्त विरासत सूची में अग्रणी रूप से दर्ज हो रही है, वहीं देश की महान परंपराओं, कलाओं को वैश्विक पटल पर पहचान दिलाने के लिए मानवता की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत की प्रतिनिधि सूची में भी देश की महत्त्वपूर्ण धरोहरों को शामिल किया गया। इस क्षेत्र में हमारे देश की सांस्कृतिक विविधता के दर्शन हुए। जैसे इस वर्ष 2024 में पारसी समुदाय द्वारा माने जाने वाला उत्सव नवरोज को स्थान मिला। गुजरात का गरबा, कोलकाता की दुर्गा पूजा, कुंभ मेला, योग, शांति निकेतन, लद्दाख का बौद्ध जप, संस्कृत रंगमंच, वैदिक मंत्रोच्चार की परंपरा और रामलीला, रामायण का पारंपरिक प्रदर्शन आदि ने मानवता की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत की प्रतिनिधि सूची में जगह बनाई।

इसके अतिरिक्त कुछ धार्मिक, सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक महत्व के मेले, परिक्रमा एवं त्योहार भी भारतीय पर्यटकों के साथ-साथ विदेशी पर्यटकों को भी भाते है जैसे- बौद्ध समुदाय के तीर्थ स्थल जहां भगवान बुद्ध जिन स्थानों पर रुके थे ,जिनमें लुम्बिनी , बोधगया , सारनाथ , श्रावस्ती (जेतवन), राजगीर पहाड़ियाँ , कुरूक्षेत्र (ब्रह्म सरोवर के तट पर बोध स्तूप , बुद्ध द्वारा किया गया तीर्थ), श्रुघ्न (यमुनानगर , बुद्ध द्वारा उपदेश के लिए दौरा किया गया विहार), आदि बद्री (बुद्ध द्वारा दौरा किया गया सरस्वती उदगम स्थल और विहार), परिनिर्वाण स्तूप (मृत्यु का स्थान) और प्रमुख ऐतिहासिक बौद्ध स्थल

शामिल है। जैन धर्म के दिलवाड़ा के जैन मंदिर सबसे बड़े जैन मंदिरों में से है ।

सिख समुदाय के तीर्थ स्थल जिसमें शामिल है: पंज तख्त, अर्थात् स्वर्ण मंदिर, तख्त श्री पटना साहिब, नांदेड़ हजूर साहिब, तख्त श्री दमदमा साहिब भटिंडा, और आनंदपुर साहिब। गुरु नानक का जन्म और मृत्यु स्थान गुरुद्वारा जन्म स्थान और करतारपुर कॉरिडोर (दोनों पाकिस्तान में) गुरुद्वारा सीस गंज साहिब और फतेहगढ़ साहिब, सिख गुरुओं के तीर्थ स्थान: कुरुक्षेत्र , कपाल मोचन , पौंटा साहिब, आदि। इसके अतिरिक्त उत्तर भारत में अनेक हिन्द मंदिर एवं तीर्थ स्थल जैसे-गीता महोत्सव, हरियाणा में कुरुक्षेत्र और उसके आसपास कृष्ण और महाभारत से संबंधित 48 कोस परिक्रमा मार्ग। पुष्करम - कर्नाटक, आंध्र प्रदेश और तेलंगाना के नदी त्योहार। पुष्कर मेला - राजस्थान में वसंत ऋतु का मेला, जिसमें पुष्कर झील में डुबकी लगाने की परंपरा शामिल है। कृष्ण परिक्रमा में व्रज परिक्रमा, कुरुक्षेत्र, द्वारका, भालका (कृष्ण की मृत्यु का स्थान) की 48 कोस की परिक्रमा शामिल है। राम परिक्रमा में अयोध्या , चित्रकूट , हम्पी और रामेश्वरम शामिल है, सप्त पुरी, भारत के 7 सबसे पवित्र हिंदू शहर- अयोध्या , मथुरा , हरिद्वार , वाराणसी , कांचीपुरम , उज्जैन , द्वारका, शिव परिक्रमा- चार धाम , 4 स्थलों का सबसे पवित्र तीर्थ- बद्रीनाथ, द्वारिका, पुरी और रामेश्वरम, छोटा चार धाम, उत्तराखंड में 4 स्थलों का छोटा तीर्थ - यमुनोत्री, गंगोत्री, केदारनाथ और बद्रीनाथ, महा ज्योतिर्लिंग- भारत में 12 सबसे पवित्र शिव लिंग मंदिर, कैलाश पर्वत और मानसरोवर झील यात्रा और भी अनगिनत स्थान जो अभी जन-मानस में अधिक लोकप्रिय चाहे न हो लेकिन उनका महत्व इससे कम नहीं हो जाता। इसके अतिरिक्त दक्षिण भारत के मंदिरों का तो कहना ही क्या जो वास्तुकला के भी अद्त नमूने है। भारत में वास्तव में पर्यटन के लिए चाहे वह धार्मिक हो या सांस्कृतिक, भ्रमण स्थलों की कोई कमी नहीं है। ये सांस्कृतिक पर्यटन ही मानव के लिए अध्यात्म के भी द्वार खोलता है जो आज के समय की सबसे बड़ी आवश्यकता है।

आज की सबसे बड़ी आवश्यकता यह भी है कि हम अपनी मूर्त और अमूर्त विरासत को सहेजने के साथ उसका प्रमाणिक रूप से दस्तावेजीकरण करें ताकि भावी पीढ़ी जब इतिहास के पन्ने पलटे तो उसे विदेशियों द्वारा लिखित आधी-अधूरी जानकारी न मिले, बल्कि अपना स्वदेशी पक्ष पढने को मिले, जिस पर वह गर्व कर सकें।वास्तव में यात्रा करते समय आप सिर्फ यात्रा नहीं कर रहे होते है। आप बहुत कुछ देख रहे होते है, बहुत कुछ गलतियाँ कर रहे होते है, जिनसे आप सीखते है। कभी ये सीखना एक दूसरी भाषा हो सकती है, कुछ नये शब्द हो सकते है। और सबसे बड़ी बात यात्रा आपको खुद को जानने का एक मौका देती है। आप जब भी यात्रा करते है, आप हर बार अपने करीब जा रहे होते है। आप कई चुनौतियों का सामना करते है, जिंदगी को जीने का एक अलग नजरिया मिलता है। ये सब आपको यात्रा करते समय और यात्रा करने के बाद अनुभव होगा। तभी तो कहते है, यात्रा और अनुभव जितना सिखाते है, उतना कोई और नहीं सिखा सकता।

हिंदीतर राज्य में हिंदी एवं क्षेत्रीय भाषा

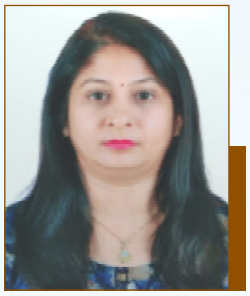

नर्मदा कुमारी
वरिष्ठ अनुवादक
महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I) का कार्यालय, कर्नाटक बेंगलूरु

हिंदीतर भाषी राज्य वे राज्य कहलाते हैं जहाँ उस राज्य की क्षेत्रीय भाषा बोली जाती है और हिंदी मुख्य या मातृभाषा नहीं है। राजभाषा विभाग के नियानुसार क्षेत्रीय आधार पर वे राज्य "ख" (गुजरात, महाराष्ट्र और पंजाब राज्य तथा चंडीगढ़, दमन व दीव और दादरा व नगर हवेली संघ क्षेत्र) एवं "ग" (जम्मू एवं कश्मीर, लद्दाख, दक्षिण क्षेत्र एवं उत्तर-पूर्व क्षेत्र) श्रेणी में स्थित है। भारत के सभी राज्यों में केंद्रीय सरकार के कार्यालयों में कामकाज के लिए राजभाषा हिंदी का ही प्रयोग उस क्षेत्र की भाषा सहित होता है। यह कदम कार्यान्वयन हेतु सराहनीय होता है यदि हिंदीतर राज्यों में हिंदी एवं सभी भारतीय भाषाएँ सहचरी बनकर प्रयोग की जाती है।

वर्तमान समय में भाषा विवाद को कम करने के लिए यह आवश्यक है कि हिंदी एवं भारतीय भाषाओं में सद्भावना की दिशा की ओर एक कदम बढ़ाया जाए। इसका मूल उद्देश्य भारत की भाषाई विविधता को बल देना तथा विभिन्न भारतीय भाषाओं के बीच आपसी संवाद, सम्मान और सौहार्द स्थापित करने हेतु एक सकारात्मक वैचारिक दृष्टि अपनाना है।

आम आदमी अपनी आवश्यकतानुसार भाषा सीखता है और वह रोजगार के लिए भारत के किसी भी कोने में जाकर भाषा एकता को बढ़ाता है और वह उसमें कोई भेदभाव नहीं करता है। यदि देखा जाए तो भाषा विवाद आम जनता के बीच नहीं है अपितु यह कुछ राजनीतिक गतिविधियों को बल देने के लिए ही होता है। कोई भी भाषा दूसरी भाषा की शत्रु नहीं होती; बल्कि वे एक-दूसरे को समृद्ध करती हैं। भारत को 'भाषाओं की प्रयोगशाला' कहा जाता है और भाषा का मूल चरित्र जोड़ने का है, तोड़ने का नहीं। 'भाषिक उदारता' हमें हिंदी भाषियों द्वारा अन्य भारतीय भाषाओं को सीखने की पहल पर बल देती है।

पूरे भारत में भाषाई सौहार्द का सबसे बड़ा प्रतीक था, स्वतंत्रता आंदोलन एवं उस समय की एकजुटता जब किसी भाषाई विवाद के बिना सबने अपने विचारों का आदान-प्रदान किया और स्वतंत्रता के लिए एक सूत्र में पिरोने पर जोर दिया। यह मुख्य रूप से सभी को सोचने की आवश्यकता है कि अंग्रेजी को लेकर कोई विवाद नहीं होता जबकि भारत की अन्य भाषाओं को लेकर विवाद होता है तो हमें इस पहलू को बारीकी से समझना होगा।

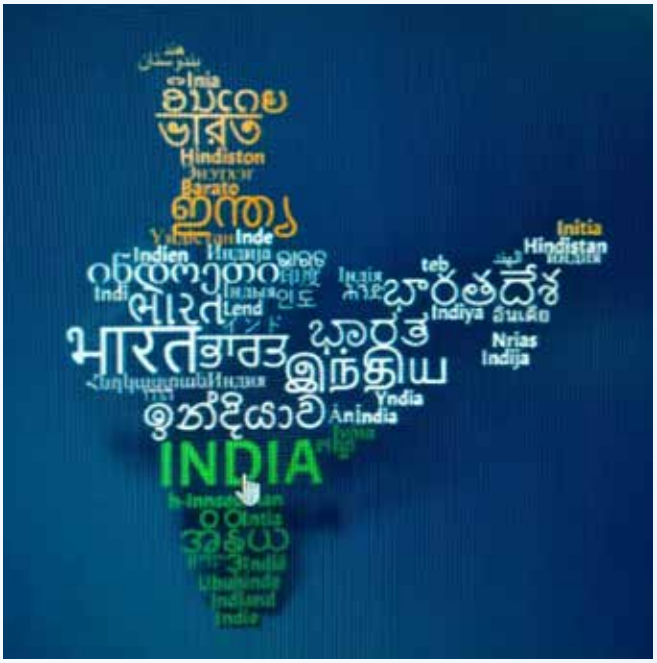

महाकवि सुब्रह्मण्यम भारती का जन्म 11 दिसंबर 1882 को तमिलनाडु के एट्टियपुरम में हुआ था। वाराणसी से उच्च शिक्षा ग्रहण करने वाले तमिल कवि सुब्रमण्यम भारती जिन्हें महाकवि भरततियार के नाम से भी जाना जाता था उनकी कविताएँ राष्ट्रभक्ति से ओत-प्रोत हैं। कवि होने के साथ-साथ वे स्वतंत्रता सेनानी, समाज सुधारक, पत्रकार तथा उत्तर भारत-दक्षिण भारत के बीच एकता के सेतु समान थे। उत्तर-दक्षिण के सेतु नाम से विख्यात सुब्रमण्यम भारती ने स्वतंत्रता संग्राम के दौरान अपनी लेखनी से जनमानस को आंदोलन के लिए प्रेरित किया था। उनकी कविताओं ने न सिर्फ़ आज़ादी की भावना को जगाया, बल्कि भारतीयता की भावना को भी प्रज्वलित किया, उन्होंने महिलाओं के अधिकारों, जातिभाव के उन्मूलन, सभी के लिए शिक्षा और समानता के लिए संघर्ष किया - ये विचार उनके समय में क्रांतिकारी थे, वे स्वयं बहुभाषी थे, भारतीय भाषाओं के प्रेमी थे, सुब्रह्मण्यम भारती के राष्ट्र और भारतीय भाषाओं की एकात्मता के इस महान योगदान को देखते हुए भारत सरकार द्वारा उनके जन्मदिन, 11 दिसंबर को 'भारतीय भाषा दिवस' के रूप में मनाने का निर्णय लिया गया था। देश के विभिन्न शैक्षणिक संस्थानों व स्वयंसेवी संस्थाओं द्वारा भारतीय भाषा दिवस आयोजित किया जाता है। सुब्रमण्यम भारती के जन्मदिवस को भारतीय भाषा दिवस के रूप में मनाए जाने से न केवल भारतीय भाषाओं की एकात्मकता को बल मिलेगा बल्कि इससे राष्ट्रीय एकता भी मजबूत होगी।

'वसुधैव कुटुंबकम' की भावना के साथ सभी भाषाओं को सम्मान देने से भारतीयता की भावना उत्पन्न होती है। कोई व्यक्ति जितनी अधिक भाषाएँ सीखता है, उसके मन में उन भाषाओं के प्रति उतना ही प्रेम बढ़ता है और लड़ाई की भावना समाप्त हो जाती है। राजभाषा हिंदी सहित सभी भारतीय भाषाओं के साथ ही अनेकता में एकता संभव है।

चीन के विकास के मूल में उनकी अपनी भाषा में ज्ञान का उपलब्ध होना है। इसे हम सभी को समझना होगा कि आज भारत के कई स्थानों पर भारतीय भाषाओं में शिक्षा नहीं दी जाती है। उपनिवेशवाद की सोच के कारण ही भारतीय भाषाओं की स्थिति विचारणीय है। अनुवाद के माध्यम से भारत की विविध संस्कृतियों और साहित्य को एक-दूसरे तक पहुँचाकर भाषाई भेद को कम किया जा सकता है। हिंदी भाषा का सभी भारतीय भाषाओं सहित प्रचार-प्रसार आवश्यक है जिससे यह राष्ट्रीय एकात्मकता में सहायक सिद्ध होगा।

1910 में रवींद्रनाथ टैगोर जी ने कहा "हिंदी एक दिन अपने आंतरिक बल पर ही पूरी दुनिया को जीत लेगी और सारी भारतीय भाषाएँ यदि नदियाँ हैं तो हिंदी महानदी है।" जिसका अर्थ है कि हिंदी पूरे देश को जोड़ने वाली प्रमुख धारा एवं संवाहक है। हिंदी सहित सभी भाषाओं को साथ लेकर चलने हेतु एक अथक प्रयास की आवश्यकता है।।

वर्तमान समय में हिंदीतर राज्यों में युवावर्ग को हिंदी सहित सभी भारतीय भाषाओं की ओर उन्मुख होने की आवश्यकता है जिससे वे सभी गर्व के साथ अपनी मातृभाषा बोलें, सभी भाषाओं को सम्मान दें और साथ ही सभी भाषाओं का प्रचार-प्रसार करें जिससे हम सभी भारतीय प्रांतों को साथ जोड़ पाए।

शक्ति, सौंदर्य एवं संघर्ष का प्रतीक - 'स्त्री'

नमिता सिंह
कनिष्ठ अनुवादक
राजभाषा अनुभाग (मुख्यालय)

स्त्री सृष्टि की सबसे सुंदर और सशक्त रचना है। वह केवल एक शरीर नहीं, बल्कि भावनाओं, संवेदनाओं, त्याग और संघर्ष का अद्त संगम है। स्त्री को शक्ति, सौंदर्य और संघर्ष का प्रतीक कहा जाता है, क्योंकि वह हर परिस्थिति में स्वयं को सिद्ध करती है। तथ्य यह है कि आभूषणों से सुशोभित स्त्रियों से कहीं अधिक संघर्ष करती स्त्रियाँ सुंदर होती है जो अपने हक एवं सम्मान के लिए लड़ती हैं| कुछ लोगों को पसंद नहीं, अपने हक के लिए संघर्ष करती स्त्री, अपना जीवन अपनी इच्छा से जीने वाली, अपना जीवन साथी अपनी मर्जी से चुनने वाली, उनकी 'हाँ' में 'ना' बोलने वाली स्त्रियाँ|

स्त्रियाँ' ईश्वर की गढ़ी वह खूबसूरत कृति है, जिसके बिना सृष्टि की कल्पना ही नहीं की जा सकती। ये वो धुरी है जिसके गर्भ में जीवन पनपता है, स्त्रियाँ ही समाज की असली निर्माता हैं। जिस समाज में स्त्रियाँ का सम्मान नहीं होता, उस समाज का पतन निश्चित है| स्त्री में अपार शक्ति होती है। वह माँ के रूप में अपने बच्चों का पालन-पोषण करती है, परिवार को संभालती है और हर कठिनाई में दृढ़ता से खड़ी रहती है। भूत काल में और वर्तमान समय में अनेक ऐसी महिलाएँ हुई हैं जिन्होने अपने साहस और आत्मविश्वास से समाज में बदलाव का परचम लहराया । स्त्री की शक्ति केवल शारीरिक नहीं, बल्कि मानसिक और भावनात्मक भी होती है।

जब एक स्त्री घर से बाहर निकलती है और उसे मालूम पड़े कि कोई उसे घूर रहा है या उसका पीछा कर रहा है तो उसे यूं लगता है मानो उसके अंदर करंट दौड़ रहा हो । जब घर पर कोई ऐसा रिश्तेदार आए जिसके सामने वह खुद को असुरक्षित महसूस करती है तो वह भय उसे अपने कमरे में ही सीमित रहने या घर से गायब हो जाने को कहता है। यह जो भय होता है, यह शायद स्त्रियों के अलावा कोई और समझ भी न सके पर सभी इसे समझने की कोशिश जरूर कर सकते हैं। डर हमेशा दिखता नहीं, पर महसूस होता है और जो डर दिखाई नहीं देता, वही सबसे गहरा होता है।

देश में महिला सशक्तिकरण को लेकर जारी चर्चाओं के बीच आज भी स्त्रियों की परेशानियों और उसका उचित समाधान ढूंढने की दिशा में कोई ठोस नतीजा हासिल नहीं किया जा सका हैं। आज भी महिलायें उतनी सुरक्षित और सम्मानित नहीं दिखतीं, जितने अधिकार और अवसर उन्हें संविधान प्रदत्त हैं। यह अलग बात हैं कि महिला दिवस की धूम भारत में ज्यादा रहती है। इन सबके बावजूद आज भी स्त्रियों को समाज में कई समस्याओं का सामना पड़ता है।

स्त्रियों के सम्मान, शिक्षा और सुरक्षा को लेकर पूरी दुनिया में आठ मार्च को एक साथ महिला दिवस मनाने का निश्चय किया गया था। इसके बावजूद कई देशों में महिला दिवस या तो रस्म अदायगी भर होता है या तो मनाया भी नहीं जाता। भारत में इसका आयोजन मिश्रित तौर पर होता है, जिसका असर नगरों में ज्यादा और देहातों में मामूली सा होता हैं। अतीत में हमारे देश में स्त्रियाँ का मान-सम्मान बहुत था। जबकि अन्य देशों में तो यहां तक माना जाता था कि स्त्रियाँ को केवल इसलिए बनाया गया है कि वह पुरुष का वंश चला सके। कमोबेश उन्नीसवी शताब्दी तक यही मान्यता रही। मगर हमारे देश में ऐसी किसी मान्यता में विश्वास नहीं था।

यूरोप में स्त्रियों की दयनीय हालत का इससे भी पता चलता है कि इंग्लैण्ड में उन्हें वोट का अधिकार 1918 में, फ्रांस में 1920 में और अमेरिका में तो यह अधिकार 1944 में मिला।

हमारे देश की स्थिति स्त्रियाँ को लेकर एकदम उलट रही। भारतीय मानस का अतीत सिद्धांत, स्वीकार्यता और मान्यता तीनों दृष्टि से स्त्रियाँ को श्रेष्ठ और सम्माननीय स्थान देता आया है। यहां स्त्रियों को अपने अधिकारों को प्राप्त करने

के लिए किसी संघर्ष आंदोलन की जरूरत ही नहीं पड़ी। दरअसल जो समस्या रही है, वह व्यवहार की है। हमारे यहां स्त्रियाँ-सशक्तिकरण के जितने आंदोलन चले, वे मानसिकता को बदलने और व्यवहार में आई जड़ता को तोड़ने के लिए ही चलाए गए। सैद्धांतिक तौर पर तो हमारे यहां स्त्रियाँ का अधिकार निर्विवाद रूप से मान्य रहा है। जिन दिनों इंग्लैंड में स्त्रियों को अधिकार देने और न देने की बहस चल रही थी, तब 1916 में एनीबेसेन्ट कांग्रेस की सभापति बन चुकी थी और 1925 में दूसरी महिला सरोजनी नायडू ने इस पद को सुशोभित किया जबकि वह समय परतंत्रता का था और स्वतंत्रता के बाद तो पहले ही दिन से संविधान में स्त्रियों को बराबरी का न केवल सर्वत्र अधिकार है अपितु कहीं-कहीं तो विशिष्ट अधिकार भी है।

आज के दौर में हमारे देश में संवैधानिक अधिकारों की दृष्टि से महिलायें किसी भी तरह कमतर नहीं हैं मगर वे आज उतनी सुरक्षित और सम्मानित नहीं दिखतीं, जितने अधिकार और अवसर उन्हें संविधान प्रदत हैं। वह पीड़ित, प्रताड़ित व भयभीत है। इसके साथ ही अपने अस्तित्व को लेकर आशंकित भी जिसकी आशंका निराधार भी नहीं है। संविधान में संपूर्ण अधिकार प्राप्त महिला अपराध का शिकार है। आज हमें महिला सशक्तिकरण के दिखावे की बजाय उन्हें अपराधमुक्त जीवन के अवसर देने और संत्रास से उबारकर ऊपर लाने की चिंता करने की आवश्यकता है। यह चिंता इस नजरिये से भी जरूरी है कि आधी दुनिया को अशिक्षित, असम्मानित और उपेक्षित छोड़ कर उन्नति की कल्पना भी नहीं की जा सकती।

वैसे हमारे देश में स्त्रियों को लेकर दो तस्वीरें हैं, एक अतीत और दूसरी आज की। समाज ने उनके असम्मान को कभी बर्दाश्त भी नहीं किया, क्योंकि हमारा समाज लंबे समय तक मातृसत्तात्मक रहा है और बच्चों की पहचान अपनी माताओं के नाम से होती रही है।

अगर गौर करें तो स्पष्ट होता है कि समाज में कहीं भी, किसी भी किस्म के घटने वाले अपराध से प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से महिला ही पीड़ित होती है। अगर इस नजरिये को लेकर आडंबर की बजाय ठोस उपायों के साथ महिला दिवस मनाया जाए, तभी इसकी सार्थकता होगी अन्यथा इसका आयोजन एक वार्षिक तमाशा ही बनकर रहेगा। स्त्री का जीवन संघर्षों से भरा होता है। बचपन से लेकर जीवन के हर पड़ाव पर उसे कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। फिर भी वह हार नहीं मानती और हर मुश्किल को पार करते हुए आगे बढ़ती है। चाहे घर हो या कार्यस्थल, वह हर जगह अपने अधिकारों के लिए संघर्ष करती है और अपनी पहचान बनाती है।

सवाल है यह कि जिस देश की स्त्रियाँ का स्थान इतना ऊंचा था, श्रेष्ठ था, वहां उनकी इतनी दुर्दशा क्यों हुई। अगर आज हम महिला दिवस मनाते हैं, उसके सशक्तिकरण की बात करते हैं, उसकी भागीदारी की चिंता करते हैं तो इस मानसिकता और व्यवहार पर विचार करना होगा। यह विचार किसी की दोषी ठहराने के लिए नहीं बल्कि भविष्य में सावधानी बरतने के लिए आवश्यक है और दुनिया के अन्य देशों की तरह नहीं, बल्कि हमारे अतीत और वर्तमान परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए महिला दिवस का आयोजन भिन्न प्रयोजन, ध्येय और उपायों के लिए किए जाने के लिए भी आवश्यक है, तब यह रस्म अदायगी नहीं, सही दिशा में उठाया गया सही कदम होगा।

आधुनिक युग की स्त्रियाँ समाज से अपने लिए देवी का संबोधन नहीं मांगती हैं। स्त्रियों को देवी समझा जाने से जरूरी है कि उन्हें मानव की श्रेणी से नीचे न गिराया जाए। हजारों साल पहले स्त्रियों की स्थिति पुरुषों से कहीं कमतर नहीं थी। लेकिन कुछ ऐतिहासिक कारणों से वे नीचे धंसती चली गईं। आज यह पूरे समाज का दायित्व है कि वह नारी को बराबरी का स्थान दें। अब इसको कोई नारी मुक्ति का नाम दे या नारी सशक्तिकरण का, उससे कोई विशेष अंतर नहीं पड़ता। नारी और पुरुष एक दूसरे के शत्रु नहीं हैं बल्कि पूरक हैं। कहा भी गया है, शिव शक्ति के बिना शव के समान हैं। राधा के बिना कृष्ण आधा हैं। नारियों की समस्या केवल उनकी समस्या नहीं है। यह पूरे समाज की समस्या है। या यूं कहिए सामाजिक समस्या का एक अंग है। साफ है कि नारी की स्थिति में बदलाव लाने के लिए पूरे सामाजिक ढांचे एवं सोच में बदलाव लाना जरूरी है। आज के आधुनिक युग में स्त्री हर क्षेत्र में आगे बढ़ रही है। वह न केवल अपने परिवार का सहारा है, बल्कि समाज और देश की प्रगति में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है।

स्त्री वास्तव में शक्ति, सौंदर्य और संघर्ष की जीती-जागती मिसाल है।

हरियाणा

संदीप
कनिष्ठ अनुवादक,
सीएजी मुख्यालय, नई दिल्ली

जब भी कभी हमारे दिमाग में दूध दही का नाम या पहलवान या देसी वेशभूषा या देसी बोली या मोटी बोली या भोले भाले व्यक्तियों का या कम सुविधाओं के बावजूद खेलों में मेडल जीतने का नाम आता है तो अनायास ही हरियाणा राज्य का नक्शा उभर कर हमारे सामने आ जाता है । हरियाणा उत्तर भारत का एक प्रमुख राज्य है, जिसका गठन 1 नवंबर 1966 को पंजाब से अलग होकर हुआ था। चंडीगढ़ इसकी राजधानी है । कृषि और दुग्ध उत्पादन में अग्रणी यह राज्य दिल्ली को तीन तरफ से घेरता है, जिसके कारण इसका एक बड़ा हिस्सा राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र (NCR) में आता है। इसकी सीमायें उत्तर में पंजाब और हिमाचल प्रदेश, दक्षिण एवं पश्चिम में राजस्थान से जुड़ी हुई हैं। यमुना नदी इसके उत्तर प्रदेश राज्य के साथ पूर्वी सीमा को परिभाषित करती है।

यह राज्य वैदिक सभ्यता और सिंधु घाटी सभ्यता का मुख्य निवास स्थान है। इस क्षेत्र में विभिन्न निर्णायक लड़ाइयाँ भी हुई हैं जिसमें भारत का अधिकतर पौराणिक व वर्तमान इतिहास समाहित है। इसमें महाभारत का महाकाव्यकालीन युद्ध भी सम्मिलित है। हिन्द मतों के अनुसार महाभारत का युद्ध कुरुक्षेत्र में हुआ (जहां भगवान कृष्ण ने गीता का उपदेश दिया)। इसके अलावा यहाँ पानीपत की तीन लड़ाइयाँ हुई। ब्रितानी भारत में हरियाणा पंजाब राज्य का अंग था जिसे 1966 में भारत के 17वें राज्य के रूप में पहचान मिली।

वर्तमान में खाद्यान और दुग्ध उत्पादन में हरियाणा देश में प्रमुख राज्य है। इस राज्य के निवासियों का प्रमुख व्यवसाय कृषि है। समतल कृषि भूमि निमज्जक कुओं (समर्सिबल पंप) और नहर से सिंचित की जाती है। 1960 के दशक की हरित क्रान्ति में हरियाणा का भारी योगदान रहा जिससे देश खाद्यान सम्पन्न हुआ।

हरियाणा, भारत के अमीर राज्यों में से एक है और प्रति व्यक्ति आय के आधार पर यह देश का तीसरा सबसे धनी राज्य है। इसके अतिरिक्त भारत

में सबसे अधिक ग्रामीण करोड़पति भी इसी राज्य में हैं। हरियाणा आर्थिक रूप से दक्षिण एशिया का सबसे विकसित क्षेत्र है और यहाँ के कृषि एवं विनिर्माण उद्योग ने निरंतर वृद्धि प्राप्त की है। भारत में हरियाणा यात्री कारों, द्विचक्रीय वाहनों और ट्रैक्टरों के निर्माण में सर्वोपरि राज्य है। भारत में प्रति व्यक्ति निवेश के आधार पर वर्ष 2000 से राज्य सर्वोपरि रहा है।

राज्य की सीमायें उत्तर में पंजाब और हिमाचल प्रदेश, तथा दक्षिण एवं पश्चिम में राजस्थान से जुड़ी हुई हैं। राज्य का क्षेत्रफल 44,212 वर्ग किलोमीटर है, जो देश के कुल भौगोलिक क्षेत्रफल का लगभग 1.3 से 1.34 प्रतिशत है, और इस प्रकार क्षेत्रफल के आधार पर यह भारत का इक्कीसवां सबसे बड़ा राज्य है। समुद्र तल से हरियाणा की ऊँचाई 700 से 900 फीट (200 मीटर से 300 मीटर अधिकतम 1,467 मीटर करौह चोटी, मोरनी हिल्स) तक है।

भौगोलिक तौर पर हरियाणा को चार भागों में बांटा जा सकता है: राज्य के उत्तरी हिस्से में स्थित यमुना-घग्गर के मैदान, सुदूर उत्तर में शिवालिक पहाड़ियों की एक पट्टी, दक्षिण-पश्चिम में बांगर क्षेत्र तथा दक्षिणी हिस्से में अरावली पर्वतमालाओं के अंतिमांश, जिनका क्षैतिज विस्तार राजस्थान से दिल्ली तक है। राज्य की मिट्टी आमतौर पर गहरी और उपजाऊ है। हालांकि, पूर्वोत्तर के पहाड़ी और दक्षिण-पश्चिम के रेतीले इलाके इसके अपवाद हैं। राज्य की अधिकांश भूमि कृषि योग्य है, लेकिन यहाँ अत्यधिक सिंचाई की आवश्यकता पड़ती है

यमुना राज्य की एकमात्र चिरस्थायी नदी है, जो इसकी पूर्वी सीमा पर बहती है। उत्तरी हरियाणा में उत्तर-पूर्व से दक्षिण-पश्चिम की ओर बहने वाली कई बरसाती नदियां हैं, जो हिमालय की शिवालिक पहाड़ियों से निकलती हैं। इनमें घग्गर-हकरा, चौटांग, टागंरी, कौशल्या, मारकंडा, सरस्वती और सोम इत्यादि प्रमुख हैं। इसी तरह दक्षिणी हरियाणा में भी अरावली पहाड़ियों से निकलने वाली कई नदियां दक्षिण-पूर्व से उत्तर-पश्चिम की ओर बहती हैं। इन नदियों में साहिबी, दोहान, कृष्णावती और इंदौरी सम्मिलित हैं। माना जाता है कि ये सभी किसी समय सरस्वती नदी की सहायक नदियां थीं। इन नदियों पर राज्य भर में कई बाँध बने हैं, जिनमें यमुना नदी पर बने हथिनीकुंड तथा ताजेवाला बैराज, पंचकुला ज़िले में स्थित कौशल्या बाँध, यमुनानगर ज़िले में स्थित पथराला बैराज तथा सिरसा ज़िले में स्थित ओटू बैराज मुख्य हैं।

हरियाणा की प्रमुख झीलों में गुरुग्राम का बसई वेटलैंड और सुल्तानपुर झील, फरीदाबाद की बड़खल झील और प्राचीन सूरजकुण्ड, कुरुक्षेत्र के सन्निहित और ब्रह्म सरोवर, हिसार की ब्लू बर्ड झील, सोहना की दमदामा झील, यमुनानगर जिले का हथनी कुंड, करनाल की कर्ण झील, और रोहतक की तिल्यार झील, झज्जर जिले का भिंडावास वेटलैंड, इत्यादि प्रमुख हैं। सिंचाई के लिए जल की व्यवस्था हेतु राज्य भर में नहरों का जाल बिछा है, जिनमें पश्चिमी यमुना नहर, इंदिरा गांधी नहर और प्रस्तावित सतलज यमुना लिंक नहर मुख्य हैं। राज्य का एकमात्र गरम झरना सोहना में स्थित है।

वन्य जीवन

राज्य में वन क्षेत्र, पूरे प्रदेश के क्षेत्रफल का 3.63 प्रतिशत (1603 वर्ग किमी) है। पूरे राज्य में कांटेदार, शुष्क, पर्णपाती वन और कांटेदार झाड़ियाँ पाई जा सकती हैं । मानसून के

दौरान, घास का एक कालीन पहाड़ियों को ढक लेता है। शहतूत, नीलगिरी, पाइन, कीकर, शीशम और बबूल यहां पाए जाने वाले कुछ वृक्ष हैं। हरियाणा राज्य में पाए जाने वाले जीवों की प्रजातियों में काला हिरण, नीलगाय, पैंथर, लोमड़ी, नेवला, सियार और जंगली कुत्ता सम्मिलित हैं। यहां पक्षियों की 500 से 600 के आसपास प्रजातियां पाई जाती हैं।

जलवायु

हरियाणा की जलवायु साल भर में गांगेय मैदानों के समान रहती है, यहाँ का मौसम गर्मियों में बहुत गर्म, जबकि सर्दियों में मध्यम ठंडा रहता है। सबसे गर्म महीने मई और जून होते हैं, जब तापमान 45 डिग्री सेल्सियस (113 डिग्री फारेनहाइट) तक चला जाता है,नारनौल व हिसार गर्मी में सबसे गर्म तथा सर्दी में सबसे ठंडे शहर और सबसे ठंडे महीने दिसंबर और जनवरी रहते है। कोप्पेन वर्गीकरण के अनुसार राज्य में तीन मौसम क्षेत्र पाए जाते हैं: राज्य के पश्चिमी तथा मध्य हिस्सों की जलवायु अर्द्ध शुष्क है, उत्तरी तथा पूर्वी क्षेत्रों की गर्म भूमध्यसागरीय, जबकि दक्षिणी क्षेत्रों की जलवायु मरुस्थलीय है।

करनाल, कुरुक्षेत्र और अंबाला जिलों के कुछ हिस्सों को छोड़कर पूरे राज्य में वर्षा कम और अनियमित है। वर्ष भर में अधिकतम वर्षा 216 सेमी, जबकि न्यूनतम वर्षा 25से 38 सेमी तक रिकॉर्ड की जाती है। जुलाई से सितंबर के महीनों के दौरान लगभग 80 प्रतिशत बारिश होती है, और शेष वर्षा दिसंबर से फरवरी की अवधि के दौरान प्राप्त होती है।

जनसांख्यिकी

2026 में, विभिन्न अनुमानों और सांख्यिकीय मॉडलों के आधार पर हरियाणा की अनुमानित जनसंख्या लगभग 3.14 करोड़ से 3.16 करोड़ (31.49 मिलियन से 31.6 मिलियन) के बीच होने की उम्मीद है। 2011 की पिछली जनगणना के अनुसार यह 2.53 करोड़ थी।

धर्म

हरियाणा के धार्मिक आंकड़े (2011) हिन्द धर्म (87.46 प्रतिशत) इस्लाम (7.03 प्रतिशत) सिख धर्म (4.91 प्रतिशत) जैन धर्म (0.21 प्रतिशत) ईसाई धर्म (0.20 प्रतिशत) बौद्ध धर्म (0.03 प्रतिशत) अन्य (0.18 प्रतिशत) हैं।

87.46 प्रतिशत आबादी के साथ हिंदू राज्य में बहुसंख्यक हैं। प्रमुख अल्पसंख्यकों में मुसलमान (7.03 प्रतिशत और सिख (4.91 प्रतिशत) हैं। मुस्लिम मुख्य रूप से नूंह जिले में पाए जाते हैं। हरियाणा में पंजाब के बाद भारत की दूसरी सबसे बड़ी सिक्ख आबादी है और वे ज्यादातर पंजाब के आस-पास के जिलों, जैसे हिसार, सिरसा, जींद, फतेहाबाद, कैथल, करनाल, कुरुक्षेत्र, अंबाला, नारनौल और पंचकुला में रहते हैं।

भाषाएं

हरियाणा में मुख्यतः हिंदी बोली जाती है। हिंदी 2020 तक हरियाणा की एकमात्र आधिकारिक भाषा थी और राज्य की अधिकांश आबादी (87.31 प्रतिशत) द्वारा बोली जाती है। हरियाणा में 70 प्रतिशत ग्रामीण आबादी है जो मुख्य रूप से हिंदी की हरियाणवी बोली बोलती है। हरियाणा में ब्रजभाषा भी लोकप्रिय है, जो पलवल ज़िला और गुरूग्राम ज़िला में प्रमुखता से बोली जाती है। साथ ही साथ अन्य संबंधित बोलियां भी, जैसे बागरी और मेवाती भी बोली जाती हैं।

उर्दू और पंजाबी बोलने वालों की भी अच्छी खासी संख्या है, जिनमें से पंजाबी को 2010 में सरकारी और प्रशासनिक उद्देश्यों के लिए हरियाणा की दूसरी आधिकारिक भाषा के रूप में मान्यता दी गई थी। राज्य के गठन के बाद, तेलुगु को राज्य की "दूसरी भाषा" बनाया गया था - जिसे स्कूलों में पढ़ाया जाना था - लेकिन यह आधिकारिक संचार के लिए "दूसरी आधिकारिक भाषा" नहीं थी। छात्रों की कमी के कारण, भाषा को अंततः पढ़ाना बंद कर दिया गया। 1969 में बंसीलाल ने पंजाब के साथ राज्य के अंतर को दिखाने के लिए तमिल को दूसरी भाषा बनाया था, हालांकि उस समय हरियाणा में कोई तमिल भाषी नहीं था। 2010 में, तमिल बोलने वालों की कमी के कारण, भाषा को उसके दर्जे से हटा दिया गया था।

नामोत्पत्ति

मानवविज्ञानियों का मानना है कि हरियाणा को इस नाम से जाना जाता था क्योंकि महाभारत के बाद के काल में,

आभीर यहाँ रहते थे, जिन्होंने कृषि कला में विशेष कौशल विकसित किया। प्राण नाथ चोपड़ा के अनुसार हरियाणा का नाम अभिरायण-अहिरायण-हिरायणा-हरियाणा से लिया गया है।

हरियाणा के तथ्यों को माने तो कहते हैं यहां श्री हरि का आना हुआ है यहां महाभारत का युद्ध हुआ जिसमें श्री कृष्ण ने गीता का उपदेश दिया। हरि के आने से इसका नाम हरियाणा पड़ा।

हरि+आना=हरियाणा

हरियाणा में कुल 154 नगर तथा कस्बे हैं। 2011 की जनगणना के अनुसार राज्य में 1 लाख से अधिक जनसंख्या वाले 18 नगर हैं: फरीदाबाद, गुरुग्राम, पानीपत, अम्बाला, यमुनानगर, रोहतक, हिसार, करनाल, सोनीपत, पंचकुला, भिवानी, सिरसा, बहादुरगढ़, जींद, थानेसर, कैथल, रेवाड़ी और पलवल।

चण्डीगढ़, जो भारत का एक केन्द्र शासित प्रदेश है, हरियाणा की राजधानी है। 1 नवंबर, 1966 को जब पंजाब के हिन्दी-भाषी पूर्वी भाग को काटकर हरियाणा राज्य का गठन किया गया, तो चंडीगढ़ शहर के दोनों के बीच सीमा पर स्थित होने के कारण इसी दोनों राज्यों की संयुक्त राजधानी के रूप में घोषित किया गया और साथ ही संघ शासित क्षेत्र भी घोषित किया गया था।

अर्थव्यवस्था

हरियाणा भारत की 13वीं-14वीं सबसे बड़ी राज्य अर्थव्यवस्थाओं में से एक है। वित्तीय वर्ष 2017-18 के दौरान, राज्य का जीएसडीपी लगभग यूएस 95 बिलियन (लगभग ₹6.1 लाख करोड़) रहने का अनुमान लगाया गया था। 2012-2017 के बीच, हरियाणा ने उल्लेखनीय आर्थिक विकास (CAGR) दर्ज की

आईटी सेवाओं में, गुरुग्राम विकास दर और मौजूदा प्रौद्योगिकी आधारभूत संरचना में पूरे भारत में नंबर 1 स्थान पर, और स्टार्टअप पारिस्थितिकी तंत्र, नवाचार और उत्तरदायित्व (नवंबर 2016) में नंबर 2 पर है।

हरियाणा का औद्योगिक क्षेत्र 69 प्रतिशत विनिर्माण 28 प्रतिशत निर्माण 2 प्रतिशत उपयोगिताओं और 1 प्रतिशत खनन में विभाजित है। राज्य भारत के कुल उत्पादन में 67 प्रतिशत यात्री कार, 60 प्रतिशत मोटरसाइकिल, 50 प्रतिशत ट्रैक्टर और 50 प्रतिशत रेफ्रिजरेटर का उत्पादन करके ऑटोमोबाइल और विनिर्माण हब के रूप में प्रमुखता रखता है। सेवाओं और औद्योगिक क्षेत्रों को 7 परिचालित एसईजेड और अतिरिक्त 23 औपचारिक रूप से अनुमोदित एसईजेड (20 पहले ही अधिसूचित और 3 सैद्धान्तिक स्वीकृति) द्वारा बढ़ाया जाता है जो ज्यादातर दिल्ली-मुंबई औद्योगिक कॉरिडोर, अमृतसर दिल्ली कोलकाता औद्योगिक कॉरिडोर और दिल्ली पश्चिमी परिधीय एक्सप्रेसवे के साथ फैले हुए हैं।

हरियाणा का कृषि क्षेत्र देश के कुल भू-भाग के 1.4 प्रतिशत से कम होकर भी राष्ट्रीय कृषि निर्यात में 7 प्रतिशत और बासमती चावल निर्यात में 60 प्रतिशत का महत्वपूर्ण योगदान देता है राज्य की कृषि अर्थव्यवस्था में 93 प्रतिशत हिस्सा फसलों और पशुधन का, 4 प्रतिशत वाणिज्यिक वानिकी का, और 2 प्रतिशत मत्स्यपालन का है

कृषि

हरियाणा परंपरागत रूप से एक कृषि समाज रहा है। 1960 के दशक में हरियाणा में हरित क्रांति के आगमन, और फिर 1963 में भाखड़ा बांध और 1970 के दशक में पश्चिमी यमुना कमांड नेटवर्क नहर प्रणाली के पूरा होने के परिणामस्वरूप हरियाणा में खाद्य अनाज उत्पादन में उल्लेखनीय वृद्धि हुई। हरियाणा दुग्ध के लिए भी जाना जाता है। राज्य में मवेशियों की कई नस्लें पाई जाती हैं, जिनमें मुर्रा भैंस, हरियाणवी, मेवाती, साहिवाल और नीलि-रवि इत्यादि प्रमुख हैं।

कृषि आधारित हरियाणा की अर्थव्यवस्था को और बेहतर बनाने के लिए, केंद्रीय सरकार (केंद्रीय अनुसंधान संस्थान, बफेलो, केंद्रीय भेड़ प्रजनन फार्म, इक्विनेस पर राष्ट्रीय शोध केंद्र, मत्स्य पालन संस्थान, राष्ट्रीय डेयरी अनुसंधान संस्थान, भारतीय संस्थान गेहूं और जौ अनुसंधान और राष्ट्रीय ब्यूरो ऑफ एनिमल आनुवांशिक संसाधन) और राज्य सरकार (सीसीएस एचएयू, लुवास, सरकारी पशुधन फार्म, क्षेत्रीय चारा स्टेशन और उत्तरी क्षेत्र कृषि मशीनरी प्रशिक्षण और परीक्षण संस्थान) ने कृषि क्षेत्र में अनुसंधान और शिक्षा के लिए कई संस्थान राज्य में खोले हैं।

नियम कानून

हरियाणा पुलिस बल हरियाणा की कानून प्रवर्तन एजेंसी है। हरियाणा पुलिस की पांच रेंज अंबाला, हिसार, करनाल, रेवाड़ी और रोहतक हैं। इसके अतिरिक्त फरीदाबाद, गुड़गांव और पंचकुला में तीन पुलिस आयुक्त हैं। साइबर क्राइम की जांच हेतु गुड़गांव के सेक्टर 51 में साइबर सेल स्थित है।

राज्य में सर्वोच्च न्यायिक प्राधिकरण पंजाब और हरियाणा उच्च न्यायालय है।

अन्य प्रशासनिक सेवाएं

नागरिकों को सैकड़ों ई-सेवाओं की पेशकश करने के लिए सभी जिलों में सर्व सेवा केंद्रों (सीएससी) को उच्चीकृत किया गया है, जिसमें नए जल कनेक्शन, सीवर कनेक्शन, बिजली बिल संग्रह, राशन कार्ड सदस्य पंजीकरण, एचबीएसई का परिणाम, बोर्ड परीक्षाओं के लिए प्रवेश पत्र, सरकारी कॉलेजों

के लिए ऑनलाइन प्रवेश फॉर्म, बसों की लंबी मार्ग बुकिंग, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय और एचयूडीए प्लॉट्स स्टेटस पूछताछ के लिए फॉर्म उपलब्ध हैं। हरियाणा सभी जिलों में आधार-सक्षम जन्म पंजीकरण को लागू करने वाला पहला राज्य बन गया है।

साक्षरता

2011 की जनगणना के अनुसार, हरियाणा की साक्षरता दर 75.55 प्रतिशत है, जो राष्ट्रीय औसत (74.04 प्रतिशत) से अधिक है। पुरुष साक्षरता (लगभग 84 प्रतिशत) महिला साक्षरता (लगभग 66 प्रतिशत) से काफी अधिक है। गुरुग्राम, फरीदाबाद, और पंचकूला जैसे जिले उच्च साक्षरता वाले हैं, जबकि मेवात और पलवल पिछड़े जिलों में सम्मिलित हैं।

हरियाणा भारत का एक प्रमुख खेल केंद्र है, जो राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर (जैसे ओलंपिक, एशियन गेम्स) पर लगभग एक-तिहाई पदक जीतता है। यहाँ कुश्ती, कबड्डी, बॉक्सिंग, हॉकी और शूटिंग मुख्य खेल हैं। नीरज चोपड़ा (भाला फेंक) और मनु भाकर (शूटिंग) जैसे स्टार खिलाड़ी हरियाणा से ही हैं।

हरियाणा में खेलों की मुख्य विशेषताएं:

- **प्रमुख खिलाड़ी:** कपिल देव, योगेश्वर द्त, सायना नेहवाल, नीरज चोपड़ा, मनु भाकर, अखिल कुमार, जोगेंद्र शर्मा, युजवेदंर चहल, बिजेंदर सिंह, रितु रानी, सरबजोत सिंह, बजरंग पुनिया, विनेश फोगाट, संतोष यादव (पर्वातरोही) अमन सहरावत, रवि दहिया, साक्षी मलिक, गीता-बबीता फोगाट, सरदार सिंह, ममता खरब, रानी रामपाल, दीपक पूनिया, अमित पंघाल, शेफाली वर्मा एवं और भी काफी खिलाड़ी हैं जिन्होने राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर राज्य एवं राष्ट्र का मान बढ़ाया है।
- **प्रमुख खेल:** कुश्ती, बॉक्सिंग, कबड्डी (हरियाणा स्टीलर्स), हॉकी, शूटिंग, एथलेटिक्स।
- **खेल अवसंरचना:** ग्रामीण स्तर तक खेल नर्सरियां, स्टेडियम, और आधुनिक प्रशिक्षण केंद्र।
- **सरकारी प्रोत्साहन:** राज्य सरकार पदक विजेताओं को भारी नकद पुरस्कार और बेहतरीन सुविधाएं प्रदान करती है।
- **हालिया आयोजन:** नवंबर में आयोजित 27वें हरियाणा ओलंपिक गेम्स में 25 खेलों को सम्मिलित किया गया था, जिसमें 11 नगरों ने भाग लिया।

हरियाणा की प्रमुख प्रसिद्ध हस्तियाँ:

- **खेल:** ऊपर बताया जा चुका है ।
- **आध्यात्मिकता और स्वास्थ्य:** बाबा रामदेव, जिन्होंने विश्व स्तर पर योग को लोकप्रिय बनाया और पतंजलि आयुर्वेद की स्थापना की।
- **अंतरिक्ष और विज्ञान:** कल्पना चावला, अंतरिक्ष में जाने वाली पहली भारतीय महिला, कार्नल में जन्मीं।
- **मनोरंजन एवं कला:** रणदीप हुड्डा (अभिनेता), जयदीप अहलावत, राजकुमार राव ,मल्लिका शेरावत (अभिनेत्री), सुनील ग्रोवर (हास्य कलाकार), मानुषी छिल्लर (मिस वर्ल्ड 2017)।
- **व्यापार और राजनीति:** सावित्री जिंदल (व्यापारी/राजनेता), सुभाष चंद्र (ज़ी टीवी के संस्थापक), श्री भूपेंद्र सिंह हुड्डा, श्री बंसी लाल, चौधरी देवीलाल आदि।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि हालांकि हरियाणा क्षेत्रफल एवं जनसंख्या के अनुसार छोटा राज्य है। लेकिन जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में हरियाणा का योगदान कम नहीं कहा जा सकता है। चाहे बात दूध दही के उत्पादन की हो या बात पशुपालन की, चाहे खेतों मे किसान की या सीमा पर खड़े जवान की या खेल के मैदान की। हरियाणा का व्यक्ति देश की तरक्की के प्रत्येक क्षेत्र में अपना योगदान देता है। अपने देसी खाने एवं पहनावे के कारण हरियाणा का व्यकित विदेश में भी अलग से पहचान लिया जाता है।

जय हिंद, जय भारत, जय हरियाणा

(जानकारी इंटरनेट एवं सोशल मीडिया से संग्रहित)

कृत्रिम बुद्धिमत्ता का उजला पक्ष

डॉ. नीलोत्पल गोस्वामी
अपर उपनियंत्रक एवं
महालेखापरीक्षक (राजभाषा)

कृत्रिम बुद्धिमत्ता के कारण श्रम विस्थापन की आशंका जताने वालों की बढ़ती संख्या के बीच, आइए कृत्रिम बुद्धिमत्ता के अनुप्रयोगों के लाभों की चर्चा करते हैं ।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता की सर्वव्यापकता और उसके सर्वसमर्थ होने के बारे में फिलहाल निराशावादियों के तर्क सुर्खियों में हैं । उनका मानना है कि बुद्धिमान मशीनें श्रमिकों की जगह ले लेंगी; इसलिए श्रमिक की आमदनी बंद हो जाएगी, अर्थव्यवस्था सिकुड़ जाएगी और वित्तीय प्रणाली उसके बोझ तले दब जाएगी, जो अब मान्य नहीं हैं। श्रम बाजारों और मानवीय व्यवहार की प्रतिक्रिया पर विचार करने के बाद यह तर्क आंतरिक रूप से संगत, बौद्धिक रूप से दृढ़ और तकनीकी परिवर्तनों से हुए अर्थव्यवस्थाओं में परिवर्तन पर गंभीरता से विचार करने योग्य है।निराशावादियों की यही धारणाएँ हैं जो पिछले दो शताब्दियों में तकनीकी कारणों से हर बार परीक्षण किए जाने पर गलत साबित हुई हैं।

निराशावादियों के तर्क

निराशावादी हर बात में गलत नहीं हैं। वे सही हैं कि बदलाव कष्टदायक होगा। वे इस बात में सही हैं कि "सेवा के रूप में सॉफ्टवेयर" (एसएएएस) को जरूरत से ज़्यादा महत्व दिया गया था। वे इस बात में भी सही हैं कि बेमेल या असममित जानकारी पर आधारित सम्पूर्ण मध्यस्थता व्यवसाय संकट में हैं। क्रमशः यह बात भी सही है कि निजी हिस्सेदारी समर्थित सॉफ़्टवेयर में व्यवधान उत्पन्न होगा फलस्वरूप श्रम बाजार में परिवर्तन होगा।

उनकी गलती मानव व्यवहार की उनकी समझ में है।

वे मानते हैं कि कंपनियां कर्मचारियों को स्थानांतरित या पुनर्निधारित करने के बजाय उन्हें एकसमान रूप से निकाल देंगी। अतः विस्थापित किए गए कर्मचारी परिस्थितियों के अनुसार खुद को ढालने की बजाय अकर्मण्य ही रहेंगे। वे विश्वास करते हैं कि किसी एक व्यावसायिक श्रेणी पर खर्च में कमी का मतलब समग्र व्यवस्था के खर्च में कमी है, न कि खर्च का पुनर्वितरण। वे मानते हैं कि तकनीकी बदलाव हमेशा संकुचनकारी होता है, जबकि प्रौद्योगिकी-प्रेरित बदलाव ऐतिहासिक रूप से समृद्धि का सबसे शक्तिशाली कारक रहा है। उनका दृढ़ विश्वास है कि आर्थिक प्रतिक्रिया का पहिया केवल एक ही दिशा में चलता है।

निराशावादियों की सबसे बड़ी गलती अर्थव्यवस्था को एक बंद प्रणाली के रूप में मानने में थी, जिसमें कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) मानव श्रम की बराबरी की अदला बदली थी, जो सत्य नहीं है। यह प्रणाली की कुल उत्पादक क्षमता को विस्तारित करती है। इसका परिणाम वास्तविक है और इसका अर्थव्यवस्था में योगदान अर्थपूर्ण है । यह वह वास्तविक उत्पादन होगा, जो हर चीज को सस्ता बनाने की क्षमता रखता है, जिससे हर कोई उन तरीकों से समृद्ध हो सकता है जो वास्तव में अर्थव्यवस्था को सशक्त कर सकता है।

अनंत बुद्धिमत्तापूर्ण सूचनाओं का परिणाम

अल्पावधि में बेरोजगारी दर सामान्य रूप से बढ़ने के बावजूद,शेयर बाज़ारों में शायद ही कोई प्रतिक्रिया आएगी क्योंकि अल्पावधि और मध्यम अवधि में औसत घरेलू क्रय शक्ति में उल्लेखनीय वृद्धि होगी, साथ ही वेतन वृद्धि भी पर्याप्त रहेगी। यह वृद्धि मुख्यतः प्रोद्यौगिकी रूपान्तरण के कारण है।

निराशावादियों ने देखा कि एआई "सेवा के रूप में सॉफ्टवेयर" (एसएएएस) बाजार को तहस नहस कर रहा है तो उन्होने अनुमान लगाया कि पूरी अर्थव्यवस्था तबाह हो जाएगी, जिसके जरिए सॉफ्टवेयर कंपनियों का मुनाफा कम हुआ, बड़े संस्थान अपने खर्चों पर फिर से मोलभाव करने लगे, और छोटे बड़े सभी तरह के "सेवा के रूप में सॉफ्टवेयर" (एसएएएस) उत्पादों की कीमतें दोबारा तय करेंगे । निराशावादियों की अनुचित सोच यह थी कि उन्होने एक क्षेत्र (सॉफ्टवेयर सैक्टर) में कीमतों के गिरने को पूरी अर्थव्यवस्था की बरबादी मान लिया। विश्वसनीय अनुमानों के अनुसार एआई से उनके सॉफ्टवेयर की लागत में इतनी कटौती करने में मदद मिलेगी जिससे विस्तार के लिए धन जुटाया जा सकेगा।

निराशावादियों ने इस खाके को समझने में चूक की। उन्होंने सॉफ्टवेयर पर खर्च से बचने वाले रुपयों पर तो नजर रखी, लेकिन यह नहीं देखा कि ये रुपये कहां खर्च हो सकेंगे ।

अपस्फीति से बढ़ती अर्थव्यवस्था

जल्द ही, एलएलएम (विशाल भाषा मॉडलों) का उपयोग करना आम बात हो जाएगी। लोग कृत्रिम बुद्धिमत्ता अभिकर्ताओं (एआई-एजेंटों) पर निर्भर रहेंगे, भले ही उन्हें यह भी न पता हो कि एआई एजेंट कैसे काम करता है, ठीक वैसे ही जैसे

"क्लाउड कंप्यूटिंग" के बारे में कुछ न जानने वाले लोग स्ट्रीमिंग सेवाओं का उपयोग करते हैं। वे इसे उसी तरह देखेंगे जैसे वे ऑटो-कंप्लीट या स्पेल-चेक देखते हैं - जो उनके फोन में काफी समय से है।

एआई एजेंट खरीदारी संबंधी निर्णय, विभिन्न बीमा शुल्क प्रबंधन, मूल्य तुलना और अनेक सेवा संबंधी मोलभाव का काम संभालेंगे। निराशावादियों ने इसे मध्यस्थता स्तर के विनाश के रूप में प्रस्तुत किया, और यह मानने लगे कि (सॉफ्टवेयर की) रुकावटें दूर होने से बचने वाले अरबों-खरबों रुपये अर्थव्यवस्था से बस छू मंतर हो जाएंगे।

यह गायब नहीं होगा। यह उपभोक्ताओं की ज़ेब मे वापस आ जाएगा ।

एआई एजेंट कर संबंधी जानकारी तैयार करने, बीमा ब्रोकरेज, यात्रा बुकिंग, वित्तीय सलाह, रियल एस्टेट कमीशन आदि क्षेत्रों में उपभोक्ताओं के लिए इन लागतों को चालीस से सत्तर प्रतिशत तक कम कर सकते हैं। सभी सेवा उत्पादों के लिए नियमित शुल्क सस्ते और विश्वसनीय हो जाएंगे।

सॉफ्टवेयर पर होने वाला खर्च एक इनपुट है। यह वह लागत है जो व्यवसाय राजस्व उत्पन्न करने के लिए वहन करते हैं। जब इनपुट की लागत कम होती है, तो व्यवसाय के पास उत्पादन विस्तार, अनुसंधान एवं विकास, राजस्व उत्पन्न करने वाली भूमिकाओं में नई भर्तियों और नए बाजारों में पूंजीगत व्यय के लिए अधिक संसाधन उपलब्ध होते हैं, जिससे उत्पादकता वृद्धि हमेशा आर्थिक विकास में परिवर्तित होती है।

यह तकनीकी बदलाव काफी बड़ा था। "सेवा के रूप में सॉफ्टवेयर" (एसएएएस) मे लगे हुए प्रमुख संसाधन अब मुक्त हो जाएंगे। जिन उपकरणों को, एक कुशल डेवलपर एजेंटिक कोडिंग टूल्स की मदद से एक सप्ताह में आसानी से बना सकता है, उन पर व्यय आधा हो जाएगा । हालांकि, इन व्यवसायों द्वारा समर्थित समग्र आर्थिक गतिविधि में वृद्धि होगी क्योंकि वे उपरिव्ययों (ऊपरी खर्चों) पर कम और विस्तार पर अधिक खर्च करने लगेंगे ।

नई सॉफ्टवेयर कंपनियां भी उभरेंगी। एआई-आधारित आर्किटेक्चर पर निर्मित और काफी कम लागत वाली ये कंपनियां ऐसी क्षमताएं प्रदान करेंगी जो पहले मौजूद नहीं थीं। एंटरप्राइज सॉफ्टवेयर पर होने वाला खर्च अस्थायी रूप से कम होगा; इस बचत को पुनर्वितरित किया जाएगा, और सेवाओं की संरचना पूरी तरह से बदल जाएगी।

कंपनियों के बजट का आधा हिस्सा एआई-आधारित उपकरणों पर खर्च किया जाएगा, जिनकी कीमत एक चौथाई होगी और क्षमता चार गुना अधिक होगी।

वर्धमान व अटूट श्रम बाजार

सफेदपोश कर्मचारियों को बुनियादी रूप से विस्थापित होना पड़ेगा, उपभोक्ता खर्च में भारी गिरावट आएगी, और एक नकारात्मक प्रतिक्रिया चक्र तब तक तेज होता जाएगा जब तक कि अर्थव्यवस्था पूरी तरह से ध्वस्त न हो जाए। यही निराशावादियों के तर्क का निचोड़ था।

अर्थव्यवस्था ऐसे रोज़गार सृजित करना शुरू कर देगी जिनके अभी तक कोई पदनाम भी नहीं थे। "एआई-सहायता प्राप्त" शब्द लगभग हर पेशेवर सेवा श्रेणी के लिए एक उपसर्ग बन जाएगा । एआई-सहायता प्राप्त वास्तुकला, एआई-सहायता प्राप्त फिजियोथेरेपी कार्यक्रम डिजाइन, एआई-सहायता प्राप्त आपूर्ति श्रृंखला परामर्श आदि। ये ऐसे महत्वपूर्ण पद थे जिनमें विशेषज्ञता रखने वाला एक व्यक्ति एआई उपकरणों की मदद से ऐसा परिणाम दे सकेगा जिसके लिए पहले एक टीम की आवश्यकता होती थी।

श्रम बाजार में विस्तार पुराने रोजगारों की वापसी के कारण नहीं होगा क्योंकि नए रोजगार पुराने रोजगारों के लुप्त होने की तुलना में अधिक तेजी से उत्पन्न होंगे । बेरोजगारी शुरू में बढ़ेगी, लेकिन थोड़े ही समय में यह उच्च वेतन वाले रोजगारों में परिवर्तित हो जाएगी क्योंकि नए व्यवसायों के गठन से रोजगार के अवसर पैदा होंगे।

ऐतिहासिक खाका कायम रहा, लेकिन एक नए आयाम के साथ। पिछले तकनीकी चक्रों में, नई नौकरियां पैदा होने में एक पीढ़ी का समय लग जाता था। 1990 के दशक के उत्तरार्ध में इंटरनेट ने ट्रैवल एजेंटों के कारोबार को पूरी तरह से बदल दिया, और नई डिजिटल अर्थव्यवस्था की नौकरियों को विस्थापित श्रमिकों को पूरी तरह से समायोजित करने में दस से पंद्रह वर्ष लग गए। इस बार, एआई तकनीक विस्थापन का कारण बना, उसी ने सृजन चक्र को भी तेज कर दिया। एआई न केवल परंपरागत नौकरियों को तेजी से खत्म करेगी, बल्कि उनकी जगह नई नौकरियां उससे भी तेजी से पैदा करेगी ।

सम्पन्न मतलब सस्ता

निराशावादियों का सबसे ठोस तर्क "काल्पनिक जीडीपी (सकल घरेलू उत्पाद) " था - यह विचार कि उत्पादन तो

बढ़ सकता है लेकिन वास्तविक अर्थव्यवस्था सिकुड़ जाएगी क्योंकि लाभ कभी उपभोक्ताओं तक पहुंचेंगे ही नहीं । इस ढांचे में यह माना गया था कि उत्पादन और उपभोग के बीच का संबंध वेतन व्यय मात्र पर निर्भर करता है अपितु यह मुख्यतः क्रय शक्ति पर निर्भर करता है, जो वेतन और कीमतों दोनों द्वारा निर्धारित होता है। यही अंतर निर्णायक कारक साबित होगा ।

तकनीकी कारणों से होने वाली अपस्फीति, मांग के कारण होने वाली अपस्फीति से भिन्न होती है। जब कोई खरीददारी नहीं कर रहा होता है, तो कीमतें गिरती हैं और अर्थव्यवस्था में गिरावट का दुष्चक्र शुरू हो जाता है। वहीं, जब उत्पादन लागत में भारी कमी के कारण कीमतें गिरती हैं, तो जीवन स्तर में सुधार होता है। बीसवीं सदी इसके कई उदाहरण प्रस्तुत करती है: कारों, टेलीविजन, हवाई यात्रा, कंप्यूटर और मोबाइल फोन की कीमतों में गिरावट। हर बार, तकनीकी अपस्फीति के साथ-साथ आर्थिक गतिविधि में वृद्धि हुई, क्योंकि कम कीमतों ने वस्तुओं को अधिक सुलभ बना दिया, जिससे उन लोगों में भी मांग बढ़ गई जो पहले उन्हें खरीदने में असमर्थ थे।

एआई ने संपूर्ण सेवा अर्थव्यवस्था को एक साथ इस तरह प्रभावित किया, जहां उपभोक्ता खर्च का सत्तर प्रतिशत हिस्सा सेवाओं का होता है।

यह कोई "काल्पनिक सकल घरेलू उत्पाद" का अनुमान नहीं है। यह आधुनिक इतिहास की सबसे प्रगतिशील आर्थिक घटना है, जो बिना किसी पुनर्वितरण नीति के हासिल होगी ।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता से होने वाली गिरावट (अपस्फीति) असल में "दुर्लभ जानकारी" के मालिकों से लेकर उसे इस्तेमाल करने वाले उपभोक्ताओं के पास होने वाला एक धन स्थानांतरण का कारण बनेगा।

अनंत उठान

आधुनिक आर्थिक इतिहास में, मानवीय बुद्धिमत्ता एक सीमित विरल संसाधन रही है। हमारी अर्थव्यवस्था की हर संस्था, श्रम बाजार से लेकर ऋण बाजार, कर कानून आदि एक ऐसी दुनिया के लिए बनाई गई थी जिसमें यह धारणा सफल थी।

हम अब एक अभूतपूर्व स्थिति का सामना कर रहे हैं: आगतों (इनपुट) का लोकतंत्रीकरण। मशीनी बुद्धिमत्ता अब कार्यों की एक विस्तृत श्रृंखला में मानव बुद्धिमत्ता का एक सक्षम और तेजी से विकसित होता हुआ पूरक होगा । वित्तीय प्रणाली अपनी कीमतों में वृद्धि को शीघ्र समायोजित करेगी जो शुरू में इसके परिणामों से अनिश्चित थी ।

इसका स्वरूप कुछ इस प्रकार होगा कि बुनियादी ढांचे के निर्माणकर्ता लाभ का एक बड़ा हिस्सा हासिल करेंगे, लेकिन बचा हुआ मुनाफा भी इतना ज्यादा होगा कि वह उपभोक्ताओं के जीवन स्तर को भी परिवर्तित कर देगा ।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता भी इसी राह पर तेजी से आगे बढ़ रही है। आइए अपने जीवन में इसकी अगवानी करें।

कहानी

कहानी

धरोहर

मुनीष भाटिया
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी, प्रत्यक्ष कर अनुभाग
कार्यालय महानिदेशक, लेखा परीक्षा (केन्द्रीय), चंडीगढ़

मोहल्ले की पतली गलियों में साइकिलों की खड़खड़ाहट और बच्चों की हंसी-ठिठोली गूँज रही थी। स्कूल की पीली वैन जैसे ही गली में आई, बच्चे खुशी से दौड़ते हुए उसके पीछे लग गए। रमेश दरवाज़े पर खड़ा अपने बेटे मनु को देख रहा था। मनु भी बाकी बच्चों की तरह वैन के पीछे दौड़ रहा था, पर उसके चेहरे पर हंसी की जगह एक अनकही उदासी थी।

"पापा," मनु दौड़ते-दौड़ते रुक गया और हांफते हुए बोला, "सबके पास कार है, सब कार से आते हैं। कब आएगी हमारी कार? मैं भी दोस्तों की तरह स्कूल कार से जाना चाहता हूँ..."

रमेश के दिल में कुछ चुभ गया। वह जानता था कि उसके बेटे की यह मासूम ख्वाहिश उसके वेतन और महंगाई की दीवार से टकराकर चकनाचूर हो जाती है।

सुनयना मायके से लौटी तो उसके शब्दों ने रमेश की बेचैनी और बढ़ा दी।"अब गाड़ी सिर्फ ज़रूरत नहीं, स्टेटस बन गई है," वह बोली। "मुझे बस या रेल से कहीं जाना अच्छा नहीं लगता..."

रमेश चुप रहा। उसे लगा मानो दोनों ओर से खींच रहा हो — एक ओर बेटे का सपना, दूसरी ओर पत्नी की चाह। उसने अपनी हालत को तौलने की कोशिश की: वेतन सीमित, महंगाई बेहिसाब। लेकिन आखिरकार उसने हार मान ली।

कुछ हफ्तों बाद मोहल्ले में खलबली मच गई — रमेश के घर एक नई चमचमाती कार आई थी। उस शाम मनु की आँखों की चमक और सुनयना की मुस्कान ने रमेश के दिल में थोड़ी राहत भर दी। लेकिन उसके भीतर गहराई में एक बोझ भी उतर आया — हर महीने की ईएमआई का बोझ।

शुरुआती महीनों में सब ठीक चला। कार मोहल्ले में चर्चा का विषय थी। लेकिन जैसे-जैसे किश्तों की तारीख नज़दीक आती, रमेश की बेचैनी बढ़ जाती। अक्सर रात को वह सो नहीं पाता। धीरे-धीरे घर का माहौल बदलने लगा।

सुनयना का चेहरा भी अब उतना खिलता नहीं था। छोटी-छोटी बातों पर झल्लाहट, ताने और चुप्पियाँ बढ़ने लगीं। "मनु की जिद थी, मेरी भी गलती थी," वह सोचता, "लेकिन अब सब मुझ पर ही क्यों..."

एक दिन पिता जी ने चुपचाप पास बैठकर कहा, "बेटा, घर में सिर्फ किराए की चीज़ें नहीं आईं, किराए की उम्मीद भी आ गई हैं। रिश्तों को अब स्थायी भरोसे की ज़रूरत है।"

ये शब्द रमेश को भीतर तक हिला गए। समय जैसे खेल खेल रहा था। एक दिन अचानक कंपनी से नोटिस मिला — छंटनी।

रमेश की नौकरी चली गई। जिस पहचान पर वह गर्व करता था, वही मानो किसी ने छीन ली।

अब वह सुबह स्कूटर ज़रूर स्टार्ट करता, पर दिन मंदिर की सीढ़ियों पर काटता। परिवार में तनाव बढ़ गया। सुनयना अक्सर ताने देती — "कितने बड़े सपने थे आपके, अब देखिए नतीजा!"

रमेश जानता था कि ये सिर्फ लांछन नहीं, असुरक्षा की आवाज़ें हैं। उसने सुनयना से कहा,

"मैं हार नहीं मानूंगा, पर इस बार साथ चाहिए, उलाहना नहीं।"

किस्तें चुभने लगीं। ईएमआई की तारीख नज़दीक थी और जेब खाली। उस शाम वह छत पर गया। हवा तेज थी, मन बिखरा हुआ। उसने नीचे देखा और सोचा — "शायद यहीं से सब खत्म कर दूं..."

तभी मनु की खिलखिलाहट कानों में गूँजी। सुनयना की डरी आँखें याद आईं। पिता जी का हाथ जैसे कंधे पर आ गया — "बेटा, चीज़ें ज़िंदगी को आसान बना सकती हैं, पर असली सुख संतुलन में है।"

उसकी आँखें भर आईं। उसने ठान लिया — नहीं, हार नहीं मानूंगा।

उसी रात सुनयना रसोई से आई। उसने रमेश के कंधे पर हाथ रखा।"मैं भी उतनी ही ज़िम्मेदार हूँ। डर गई थी, इसलिए ताने दिए। माफ़ करोगे?"

"जब तुम साथ हो," रमेश ने कहा, "तो खाली जेब भी डरावनी नहीं लगती।"

दोनों ने फैसला किया — कार बेच दी जाएगी, और घर से टिफिन सेवा शुरू होगी। धीरे-धीरे छोटे ऑर्डर आए, परिवार की मुस्कान लौटी। रमेश फिर से नौकरी की तलाश में लग गया।

कुछ हफ्तों बाद एक पुराने सहकर्मी ने नौकरी दिलवाई। यह छोटी थी, पर उम्मीदें बड़ी।

मनु ने कहा, "पापा, अब गाड़ी नहीं चाहिए, आपकी खुशी ही हमारे लिए काफी है।"

वर्ष गुजरते गए। मनु बड़ा हुआ। उसने पिता के संघर्ष देखे थे। वही संघर्ष उसकी ताकत बने। उसने पढ़ाई में मेहनत की, छात्रवृत्ति पाई, और बाद में एक अच्छी नौकरी।

कई साल बाद, जब मोहल्ले में लोग मनु की तरक्की की मिसाल देने लगे, तब एक दिन उसने घर के बाहर एक चमचमाती नई कार खड़ी की।

पर रमेश चुप खड़ा था। उसकी आँखें उस कार पर नहीं, मनु पर थीं।

मनु मुस्कुराता हुआ बोला, "पापा, देखो, अब मेरा सपना पूरा हुआ। अपनी कार... बिना कर्ज, बिना डर।"

रमेश ने हल्की मुस्कान के साथ कहा, "कार तो पहले भी आई थी, मनु। फर्क बस इतना है कि तब हमने उसे कंधों पर ढोया था, और आज तुमने उसे अपने पैरों पर खड़ा किया है।"

मनु थोड़ी शरारत भरे अंदाज़ में बोला, "तो क्या तब गलती आपकी थी, पापा?"

रमेश हंसा, आँखों में नमी थी।"गलती नहीं, बेटा... वो एक सीख थी। तुम्हारी जिद, तुम्हारी माँ की चाह और मेरा झुक जाना। कभी-कभी सपनों को समय देना चाहिए। जल्दी पूरी की गई ख्वाहिशें अक्सर रिश्तों को तोड़ देती हैं।"

मनु गंभीर हो गया। "मैं समझता हूँ, पापा। उस दिन आपकी आँखों में डर और टूटन देखी थी। शायद उसी दिन मैंने तय किया था कि एक दिन आपको गर्व दिलाऊँगा।"

रमेश बोला, "याद रखना, मनु, असली स्टेटस कार, बंगला या ब्रांड नहीं होता। असली स्टेटस यह है कि मुश्किल वक्त में परिवार साथ खड़ा रहे — बिना तानों के, बिना शर्तों के।"

मनु मुस्कुराया, आँखों में चमक और होंठों पर सादगी थी— "पापा, अब समझ गया हूँ। कार सपना था, लेकिन असली सुख आपके जैसे पिता का संघर्ष और माँ का साथ है। यही हमारी सबसे बड़ी धरोहर है। गाड़ी तो बस लोहे का ढाँचा है, पर आपने जो खून-पसीना बहाकर मुझे इस काबिल बनाया, वही असली इंजन है, जो मेरी ज़िंदगी को चलाता है।"

उस पल मनु धीरे से बोला— "पापा, किस्तों का बोझ कभी-कभी ज़िंदगी को जकड़ लेता है। हर महीने का चेक, हर ईएमआई एक तनाव बनकर सिर पर मंडराता है। मगर वही किस्त हमें अनुशासन भी सिखाती हैं—कि सपनों की कीमत चुकानी पड़ती है।"

रमेश ने भारी आवाज़ में जोड़ा— "हाँ बेटा, लेकिन याद रखना... ईएमआई से कार तो खरीदी जा सकती है, पर चैन की नींद और रिश्तों का सुकून नहीं। उधार से मकान मिल सकता है, पर घर बनाने के लिए परिवार का साथ चाहिए।"

मनु ने झुककर पिता के पैर छुए। "आप सही कहते हैं पापा। कर्ज़ चुका देंगे, किस्त पूरी हो जाएँगी। पर अगर हम एक-दूसरे को खो दें, तो वह कर्ज कभी उतारा नहीं जा सकता।"

रमेश ने बेटे को सीने से लगा लिया। उनकी आँखों से आँसू बह रहे थे, लेकिन इन आँसुओं में दर्द से अधिक संतोष था। बाहर मोहल्ले की भीड़ नई कार के चारों ओर इकट्ठी थी—

"वाह मनु की कार आ गई... ब्रांड न्यू!" लोग ताली बजा रहे थे, बच्चे कार को छूकर देख रहे थे, पर रमेश की आँखों में विजय का मापदंड अलग था। उन्हें लगा, असली जीत मनु की कमाई हुई गाड़ी नहीं है। असली धरोहर तो यह है कि इतने संकटों, कर्ज़ और ईएमआई की तलवार के बावजूद उनका परिवार टूटा नहीं। रिश्ते टिके रहे। यही वह सच्चाई थी, जो गाड़ी की चमक से कहीं ज्यादा रोशन थी।

कहानी

जादू

सुश्री सुदेश कुमारी
सहायक निदेशक (राजभाषा)
महानिदेशक (लेखापरीक्षा) का कार्यालय, रेलवे, नई दिल्ली, शाखा कार्यालय जयपुर

मेरा एक दोस्त उच्च न्यायालय में जज है।

समाज यह मांग करता है कि जज आपने फैसलों द्वारा न सिर्फ इंसाफ करे अपितु उसके चाल-चलन एवं उठने बैठने से लोगों को यकीन हो जाए कि वो सदा इंसाफ ही करता है। इस कारण इस पेशे में व्यक्ति ज्यादा यहाँ वहां घूमता बहुत अच्छा नहीं लगता। जब उसका मन करे तो वो खुद मिलने नहीं आता। मुझे टेलीफोन करता है कि मैं उस को आकर मिल जाऊं।

एक बार उसका इस तरह ही टेलीफोन आया। मैं टाल गया। टेलीफोन फिर आया। बात कुछ ज्यादा गंभीर लग रही थी। मैं उसे शाम को मिलने चला गया।

वो अभी घर वापिस नहीं आया था। नौकर ने कहा कि फोन आया था बस आने ही वाले हैं। मैं बरामदे में बैठ गया। नौकर कोठी के गेट के पास खड़ा हो कर इंतजार करने लगा।

“आ गये” उसने दूर से ही कार पहचान कर कहा। कार कोठी के अंदर आ घुसी। उस पर झंडा फहरा रहा था। एक चपरासी वर्दी पहने ड्राइवर के पास बैठा था। उसने उतर कर कार का दरवाजा खोला। मेरा दोस्त उतर कर मेरे पास आकर बैठ गया।

बैठे बैठे ही उस ने काला कोट उतार कर नौकर को पकड़ा दिया। उसके बाद वहीं बैठे ही कमीज और पगडी बदल कर अपना शरीर हल्का कर लिया। उच्च न्यायलय धीरे-धीरे उसके चारों तरफ से उतरता जा रहा था। एक दो मिनट चुप रह कर उसने नौकर को कहाः

"व्हिस्की"

नौकर से, जो कि पहले भी जज के बाहर बाहर कपड़े बदलने से हैरान था, से अब चुप नहीं रहा गया। उसने कहा

यहीं? बाहर

"हां यहीं" जज ने कहा।

जज साहब को आज क्या हो गया है? नौकर हैरान था। पहले तो किसी के साथ बाहर भी कम ही बैठते थे। आज बाहर बैठ

कर शराब पीना चाहते थे। ये तो कुछ अलग ही दिन था उसने गहरी सांस ली और अंदर चला गया।

"तुझे एक बहुत अजीब बात बताने के लिए बुलाया है"। जज ने कहा।

"कोई अनोखा मुक़दमा है?" मैंने पूछा। जजों के पास ओर क्या होगा।

"नहीं मुक़दमा नहीं।" उसने कहा, "मेरा अपना अनुभव है।"

तुझे अब इस उम्र में क्या अनुभव होने लग गया? मैंने हंसते हुए कहा।

यही तो हैरानी है। मेरे साथ अब इस उम्र में कुछ हो गया है। यह इंसान कुदरत ने क्या चीज बनाई है। कुछ समझ नहीं आता। किसी को समझ नहीं आता, हमें भी नहीं आता ।

बहुत सुख में था। आराम से दिन गुजर रहे थे। साथ -साथ जज होने का भी मजा ले रहे थे कि मुसीबत आ गयी। खैर अब तो निकल गयी है। याद करके ही बहुत मजा आता है। इस लिए मैने तुझे फोन किया था।

"सुना फिर" मैंने कहा, एक बार और याद करके मजा ले ले"।

"समझ नहीं आता कहां से बात शुरू करूं"उस ने कहा।

कोर्ट में हम सब जज दोपहर में एक साथ खाना खाते हैं। खाना खाने जाने से पहले अगर किसी से मिलना हो ते उसे वही वक्त दे देते है। एक दिन खाने के समय उसी वक्त चपरासी ने आकर कहा " आपसे एक मैडम आकर मिलना चाहती हैं"। मैंने कहा "अंदर भेज दो"।

मेरा ख्याल था कि कोई दूर की रिश्तेदार होगी, जिस का किसी दफ्तर में काम होगा। मैं दरवाजे की तरफ देख रहा था. किसी आम सी मैडम के इंतजार में। पर जो मैडम अंदर आई उसके लिए मैं तैयार नहीं था। उसको देख कर मेरी ऊपर का सांस ऊपर और नीचे की नीचे रह गई। सिर्फ बहुत सुंदर होने की बात नहीं थी कौन सी सुंदर लड़की मैंने देखी नहीं थी। लाहौर, श्रीनगर, बंगलौर, इंग्लैंड, अमेरिका, कनाडा,

यूरोप, मैं सब जगहों पर घूमा हूँ। पर इस तरह का असर मुझ पर पहले कभी नहीं हुआ। मैं असलियत में बदल गया। भगवान का शुक्र है कि उसने बात जल्दी खत्म की।

मैं कॉलेज की प्रोफेसर हूँ, उसने कहा, वहां पुरस्कार वितरण है। प्रिंसिपल ने यह पत्र भेजा है कि आप आने का कष्ट करें। ।

ठीक है ठीक है, मैने पत्र रख लिया और वो चली गयी। वो जो कुछ भी कहती मुझे झटपट हां ही करनी थी। क्योंकि मैं उसे अपने सामने सहन नहीं कर पा रहा था। मैं चाहता था कि वो जल्दी से मेरे पास से चली जाए क्योंकि मैं खुद तो कोर्ट का कमरा छोड़ कर जा नहीं सकता था। उसके दो चार मिनट और वहां रहने से कुछ का कुछ हो सकता था।

अब मेरा कमरा फिर मेरे पास था। यहां मैं कईयों को फांसी चढा देता हूं और कईयों को छोड़ देता हूं। सरकारों के बड़े से बड़े अधिकारियों को और नेताओं को पेश होने के लिए आदेश दे सकता हूं और सरकारों के अधिकारियों को लिखित में डांट सकता हूं अथवा जेल भिजवा सकता हूं। पर इन सारे अधिकारों का क्या फायदा? मेरा अपना मन ही मुझ से छीन लिया गया था जैसे वो मेरा अंतर्मन ले गयी हो। मैंने उस लडकी की तरफ ठीक से देखा भी नहीं था। अगर मुझे तस्वीरें बनानी आती तो भी मैं उस की कोई मामूली सी तस्वीर नहीं बना सकता था। कहीं भीड़ में उसे अच्छी तरह से पहचान भी नही सकता हूं।जैसे कोई परछाई सी थी। किसी और को देख कर सिर्फ इतना कह सकता था कि ये वो नहीं है।

मैं और जजों के साथ खाना खाने नहीं गया। कमरे में ही लेटा रहा और ये सोचता रहा कि अच्छा हुआ कि वे जल्दी चली गयी और मेरी जान बच गयी। पर पूरी तरह नहीं बची थी।

शरीर सुन्न था जैसे पुलिस थाने में किसी से कुछ पूछने के लिए उसकी पिटाई कर के शरीर सुन्न कर देते हैं। मैं पहले वाला आजाद आदमी नहीं था। वो दिन बीता। और दिन भी बीते पर कोइ फर्क न पड़ा। कहते हैं जो लोग ऊपर चले जाते है वो वो अपने आप नीचे नहीं आ सकते। धरती, जो हर चीज को अपनी तरफ खींचती है उनको खींचने से हट जाती है वो अपनी परिधि में ही घूमते रहते हैं। मैं भी ऐसे ही घूमता रहता था। इस दुनिया से मेरा संबंध टूट गया था।

पुरस्कार वितरण का दिन आया। मैं उस के कॉलेज गया। देख कर उसको पहचानना मुश्किल नहीं था। वह वहां बेचैन खडी थी कुछ दुआ सलाम हुई। इनाम वितरण किया और लौट आया। पर कोई फर्क नहीं पड़ा उसका कब्जा वैसे ही कायम था। मैं वहां भी उसे नजर भर कर देख नहीं पाया था। घर आकर मैंने यह जानने कि कोशिश की कि भला उसने साड़ी पहनी हुई थी या सलवार कमीज तो मैं जान नही पाया था। दूसरी बार देख कर भी मुझे उसका चेहरा याद नहीं आ रहा था। यह मुझे हुआ क्या था? इसकी दवा क्या करूं।

इस कठिन समय में मुझे बचपन की एक बात याद आयी। तीसरी-चौथी में पढ़ता था। हमारा ग्वाला घर भैंसें खोल कर खेतों में ले जा रहा था। पर उस से भूल से एक बछिया घर पर ही बंधी रह गयी। वो बाहर जाने के लिए रस्सी तुड़वा रही थी। मां ने कहा,"इस को खोल दे खुद ही झुंड मे जा मिलेगी।" बछिया रस्सी खींच रही था। इस लिए खूंटी से रस्सी से गांठ खोलनी मुश्किल हो रही थी मैं उसे खूंटी की तरफ खींचता बछिया जल्दी जाने के लिए दूसरी तरफ खींचती। इस खींचातानी में मेरा पैर बछिया के पैर के नीचे आकर कुचला गया। बछिया तो खुल गयी पर मेरे पैर से पतली खाल उतर गयी थी। सारी जगह दर्द से कुलबुला रही थी। दर्द सहा नही जा रहा था मेरी चींखें निकल रही थी। मां ने कहा "बेटा तू झुंड के पीछे जा और अपना पैर उसी बछिया के होंठों से छुआ। तुझे आराम आ जाएगा"। यह जादू होता है। और किसी भी तरह आराम नहीं मिलेगा"। मैं दुखी-सुखी होता लंगड़ाता दौड़ता हुआ झुंड के पीछे गया अपने जख्मी पैर से उस बछिया के होंठों को हिलाया। उस के मुंह से कुछ लार मेरे जख्म पर लग गयी और कुलबुलाहट करना हट गया। कुछ दिन बाद पैर ठीक हो गया। मां का जादू चल गया था।

मैं एक मध्यम, बेपहचान चेहरे की गिरफ्त में आया हुआ था। क्या मां का जादू यहां भी काम कर सकता था। क्या उसके होंठ हिलने से, उसके कुछ कहने से यह पकड़ ढीली हो सकती थी। मुझे कोशिश करनी चाहिए । एक बहाना भी बन गया। आंध्र प्रदेश का एक प्रोफेसर किसी के द्वारा मुझ से मिलने आ गया। वो कॉलेज विद्या के वारे में कुछ मसाला ढूंढ रहा था। मुझे खुद तो इन चीजों के बारे में कुछ पता नहीं था पर वो लड़की यह मसाला दे सकती थी। मैंने उसके कॉलेज फोन किया उस प्रोफेसर की जरूरत के बारे में बताया और एक नये से होटल में उसको मिलने के लिए बुलाया। वो आने के लिए मान गयी।

हम एक अलग मेज पर बैठे थे। प्रोफेसर के साथ बात शुरू करने से पहले उसने बताया कि वो अपनी एक शादीशुदा सहेली के साथ एक दिन क्लब गयी। वहां उसने मुझे देखा था। चूंकि सहेली मेरी परिचित नहीं थी इसलिए मेरे साथ मुलाकात नहीं हो सकी थी। पर सामने न होने के कारण वो मेरी बातें सुनती रही थी इस कारण पुरस्कार वितरण के लिए मुझे चुना था। जज होने के कारण नहीं। प्रिंसिपल का पत्र तो एक बस एक दिखावा था ,चुनाव तो उसका अपना ही था । इस बीच वो प्रोफेसर की समस्या के बारे में बात कर लेती।

"किसी होटल में किसी और से मिलने की बात मैं सोच भी नहीं सकती"। उस ने कहा।

"फिर कैसे आ गयी ?" मैंने पूछा।

"आपकी बात अलग है। किसी की दो बातें सुन कर ही मैं समझ लेती हूं कि यह इंसान मेरा सगा है या मैं इसकी सगी हूं।

मुझे एहसास हुआ कि उसके चेहरे के पीछे तेज मशीन लगी हुई थी। उसकी बातों से ऐसा लगता था कि उसकी सोच और उसकी पहुँच की कोई सीमा ही न हो। जैसे उड़ते पंछी का पता नहीं होता कि वो अगले खेत की मेड़ पर बैठेगा या चार खेत पार कर बाग में या अगले गांव की समाधियां के समूह में। उसके नजदीक बैठना या उसे हाथ लगाना मेरे लिए बहुत दूर की बात थी। उसके डर से नहीं मेरे बचाव के लिए। मेरे अंदर हिम्मत नही थी। यह विहस्की मुझे बहुत अच्छी लगती है न। पर यह कैसे हो सकता है कि मैं सारी बोतल एक सांस में ही खत्म कर दूं। पैग-पैग घूंट घूंट कर ही सहन कर सकता हूं। मुझे अब भी उस से डर लग रहा था। कहते हैं, बहुत बड़ी ताकत वाली बिजली की तारों को हाथ लगाने से ही नहीं नजदीक होने से भी करंट लग जाता है। वो लड़की ज्यादा बातें करने के मूड में थी। आंध्रा के प्रोफेसर को उसने समझाया कि उन्नति अकेले विद्या से नहीं होती। उसका इंतजार करना चाहिए । पुरानी नस्लों पर विद्या का कोई प्रभाव नहीं होता। मनुष्यता का कल्याण उसके अगली पीढियों में है। उसकी बातों से मेरा मन हल्का हो रहा था। अपनी सामान्य हालत की तरफ आ रहा था। जैसे धरती काले बादलों की चपेट में हो, बिजली कड़कती हो तो अलग सा लगता है। फिर बारिश होने पर बादलों की पकड़ कुछ ढीली होने लगती है? आस-पास सब साफ दिखने लगता है, अपने असली चेहरे में। मां का जादू असर कर रहा था। ल़ड़की के होंठ हिलने से मैं अपनी असली हालत में आ गया था। अब उसको मिलने की कोई इच्छा नहीं थी। जैसे मैंनें हजम कर ली हो। कहीं मिल जाती तो भी ठीक, नहीं मिलती तो भी।

(मूल लेखक (पंजाबी) - श्री कुलवंत सिंह विर्क
अनुवादक - सुश्री सुदेश कुमारी
पद नाम - सहायक निदेशक (राजभाषा) महानिदेशक (लेखापरीक्षा) का कार्यालय, रेलवे, नई दिल्ली, शाखा कार्यालय जयपुर
द्वितीय तल, उत्तर पश्चिम रेलवे मुख्यालय भवन, जवाहर सर्कल, गोल्ड सूक के पास, जयपुर 302017)

कहानी

गोतनियों का रिश्ता

सियाशरण
प्रधान निदेशक, जीएएसएबी स्कंध,
सीएजी मुख्यालय, नई दिल्ली

(एक)

नीम की छाया में ठहरा वह आँगन केवल मिट्टी का टुकड़ा नहीं था—वह रिश्तों का रंगमंच था, जहाँ हर दिन भावनाएँ अपनी नई आकृति लेती थीं। दीवारें थीं, रसोई अलग थीं, चूल्हे अलग जलते थे—पर आँगन अब भी एक ही था। और उसी आँगन में साँस लेता था एक अनोखा रिश्ता—कलावती और सुमित्रा का।

दोनों गोतनियाँ थीं—दो भाइयों की पत्नियाँ। इस रिश्ते में एक अजीब-सी मिठास होती है, जिसमें हल्की-सी कसक घुली रहती है। जैसे गुड़ में कहीं-कहीं कच्चापन रह जाए, जो स्वाद को और गहरा कर दे।

दोपहर का समय था। नीम की छाया ज़मीन पर बिखरी हुई थी। एक ओर कलावती अपनी रसोई में रोटियाँ सेंक रही थीं, तो दूसरी ओर सुमित्रा अपने चूल्हे पर सब्ज़ी में मसाला भून रही थीं। दोनों के बीच दीवार थी, पर आवाज़ें उस दीवार से टकराकर रुकती नहीं थीं—वे सहज ही एक-दूसरे तक पहुँच जाती थीं।

सुमित्रा ने ज़रा ऊँची आवाज़ में कहा— "दीदी, आज क्या बना रही हैं?"

कलावती ने रोटी पलटते हुए उत्तर दिया— "बस, लौकी की सब्ज़ी... और दाल।"

सुमित्रा हल्का-सा हँसी— "अरे, वही रोज़ वाली सादगी! कभी हमारे जैसा भी बनाइए—आज तो हमने थोड़ा गरम मसाला ज़्यादा डाला है।"

कलावती ने चूल्हे में लकड़ी खिसकाई, और बिना देखे ही कहा— "ज़्यादा मसाला डालने से स्वाद बढ़ता नहीं, छुप जाता है।"

कुछ पल के लिए सन्नाटा रहा... फिर दोनों ही धीमे से मुस्कुरा दीं।

यह मुस्कान केवल बात का उत्तर नहीं थी—यह उस रिश्ते की पहचान थी, जिसमें तकरार भी अपनापन लिए होती है।

थोड़ी देर बाद सुमित्रा खुद ही आँगन में आकर कलावती के पास बैठ गईं। हाथ में सब्ज़ी का चम्मच था, पर बातों का स्वाद ज़्यादा गहरा था।

"दीदी, कभी-कभी सोचती हूँ... हम लोग भी अजीब हैं। एक ही घर में रहते हैं, पर रसोई अलग।"

कलावती ने धीरे से रोटी उतारी और थाली में रखते हुए बोलीं— "रसोई अलग है, पर चूल्हे की आग तो एक ही है... उसी घर की।"

सुमित्रा ने उनकी ओर देखा— "पर मन में कभी-कभी लगता है... कौन बेहतर बनाता है, किसका घर अच्छा चलता है..."

कलावती ने पहली बार सीधा उनकी ओर देखा। आँखों में न तो तंज था, न ही गर्व—बस एक सच्चाई थी— "तुलना तो होती है... यह रिश्ता ही ऐसा है। पर अगर वह न हो, तो शायद अपनापन भी अधूरा लगे।"

सुमित्रा ने हल्के से सिर हिलाया— "सच कह रही हैं... जब आपसे बात नहीं होती, तो लगता है कुछ कमी रह गई।"

नीम के पत्ते उस समय हल्के-हल्के हिल रहे थे, जैसे उनकी बातों की गवाही दे रहे हों।

आँगन में खेलते बच्चों की हँसी बीच-बीच में उनकी बातों को तोड़ देती, और फिर जोड़ भी देती।

उधर उर्मी और उम्मीद साथ बैठी कुछ खेल रही थीं—एक घर की बेटी, दूसरी घर की सहारा—पर उस क्षण दोनों में कोई अंतर नहीं था।

सुमित्रा ने उन्हें देखकर मुस्कुराते हुए कहा— "देखिए दीदी, ये बच्चे... इन्हें क्या फर्क पड़ता है कि किसकी रसोई अलग है?"

कलावती ने भी उनकी ओर देखा— "हाँ... इनके लिए तो पूरा घर एक ही है।"

फिर थोड़ी देर रुककर बोलीं— "और शायद... हमारे लिए भी।"

दोनों की आँखें एक पल को मिलीं—उसमें न प्रतियोगिता थी, न दूरी—सिर्फ एक गहरा, अनकहा रिश्ता था।

रसोईयाँ अलग थीं, पर आँगन एक था।

चूल्हे अलग थे, पर धुआँ एक ही आसमान में घुलता था।

और दिल...

वे अलग होकर भी कहीं न कहीं जुड़े ही रहते थे।

शायद यही गोतनियों का रिश्ता होता है—

जहाँ हल्की-सी होड़ भी होती है,

और उससे कहीं गहरा एक अदृश्य बंधन भी—

जो अलग होकर भी, साथ रहने पर मजबूर करता है।

(दो)

कलावती और सुमित्रा — एक दोपहर

दोपहर की धूप आँगन में आ गई थी। रसोई से धुएँ की एक पतली लकीर ऊपर उठ रही थी।

कलावती चूल्हे के पास बैठी थीं — दाल में कुछ डाल रही थीं। सुमित्रा परछी में बैठी मटर छील रही थीं। आज उन्होंने चटक नारंगी साड़ी पहनी थी — वह साड़ी जो पिछली दीवाली पर आई थी और जिसे वे अब तक संभालकर रखती थीं।

कलावती ने एक नज़र डाली।

'आज कहाँ जाना है?' उन्होंने पूछा।

सुमित्रा ने नीचे देखा — साड़ी की तरफ। 'कहीं नहीं। बस मन हुआ।'

'मन हुआ।' कलावती ने दोहराया — थोड़ी-सी हँसी के साथ। 'घर में काम करते हुए नारंगी साड़ी पहनने का मन होता है तुम्हें।'

'तुम भी पहनो न। हरी वाली निकालो — वह बहुत दिनों से रखी है।'

'मेरी हरी वाली अब कहाँ फबेगी।' कलावती ने हँसते हुए कहा। 'बाल देखे हो अपने — आधे सफेद हो गए।'

'मेरे भी हो गए हैं। पर साड़ी तो पहनती हूँ।'

कलावती ने कुछ नहीं कहा — पर मुस्कुराती रहीं।

थोड़ी देर चुप्पी रही। मटर छिलते रहे। दाल उबलती रही।

फिर सुमित्रा ने नाक सिकोड़ी।

'यह क्या डाला दाल में?'

'कहाँ? कुछ नहीं।'

'खटास आ रही है।'

कलावती ने एक चम्मच उठाया — चखा।

'अरे — आम डल गया।'

'आम?' सुमित्रा उठकर आ गईं।

'कच्चा आम था — कटा हुआ रखा था — सोचा अचार के लिए है — भूल से दाल में पड़ गया।' कलावती ने माथे पर हाथ मारा।

सुमित्रा ने चम्मच लेकर खुद चखा।

एक पल रुकीं।

'अच्छा लग रहा है।'

'क्या?'

'सच में। एक बार और चखो।'

कलावती ने फिर चखा — इस बार ध्यान से।

'हाँ...' वे बोलीं — 'खटास है। पर स्वाद अच्छा है।'

'मेरी माँ डालती थीं आम दाल में। कहती थीं — चना दाल में कच्चा आम पड़ जाए तो दाल राजा हो जाता है।'

'राजा!' कलावती हँस पड़ीं।

'हाँ। और थोड़ा जायफल डालो — ऊपर से।'

'जायफल?' अब सुमित्रा ने नाक चढ़ाई। 'दाल में?'

'हाँ। हम डालते हैं।'

'हम नहीं डालते।'

'इसीलिए तुम्हारी दाल में वह बात नहीं।'

सुमित्रा ने आँखें नचाईं — 'हमारी दाल में वह बात नहीं!' उन्होंने नकल उतारी। 'सुनो — मेरी दाल के लिए पूरा मुहल्ला दरवाज़ा खटखटाता है।'

'मुहल्ला खटखटाता है — या सिर्फ रमेश चाचा?'

'कलावती!' सुमित्रा ने आँखें बड़ी कीं — फिर दोनों हँस पड़ीं।

वह हँसी — जो रसोई की दीवारों से टकराती थी — आँगन तक जाती थी।

कलावती ने जायफल की डिबिया उठाई। थोड़ा-सा घिसा। दाल में डाला।

'देखो — डाल दिया।'

'अब चखोगी?'

'तुम चखो।'

सुमित्रा ने चखा। एक पल। फिर धीरे से कहा —

'ठीक है।'

'ठीक है?' कलावती ने भौंहें उठाईं।

'बहुत अच्छा है।' सुमित्रा ने मान लिया। 'पर यह मैं घर में नहीं बताऊँगी।'

'क्यों?'

'क्योंकि फिर रोज़ माँगेंगे। और रोज़ तुमसे जायफल माँगना पड़ेगा।'

कलावती ने वह जायफल की डिबिया उनकी तरफ खिसका दी।

'यह रखो अपने पास।'

सुमित्रा ने देखा — डिबिया को। फिर कलावती को।

'सच में?'

'हाँ। और उस नारंगी साड़ी में तुम अच्छी लग रही हो — यह भी सच है।'

सुमित्रा चुप हो गईं।

फिर साड़ी का पल्लू ठीक किया — थोड़ा शरमाते हुए।

'ज़्यादा मत बोलो।'

'सच बोल रही हूँ।'

बाहर से हवा आई। आँगन में नीम की पत्तियाँ हिलीं।

और उस दोपहर में — दो औरतें — एक चूल्हे के पास — दाल में आम और जायफल की खोज कर रही थीं।

दो रसोई थे — पर वह दोपहर एक थी।

तीन

नीम की छाया उस साँझ कुछ और ही गहरी हो गई थी। हवा में हल्की-सी उमस थी, और आसमान में धूप का आख़िरी टुकड़ा ठहरा हुआ था—जैसे दिन जाने से पहले एक बार और ठहर जाना चाहता हो।

आँगन वही था—एक, पर उसके दो कोनों में दो रसोइयाँ जल रही थीं।

आज कलावती और सुमित्रा के बीच कुछ ठहराव था। कोई बड़ी बात नहीं हुई थी, पर कभी-कभी बिना वजह भी बातों के धागे उलझ जाते हैं। दोनों अपने-अपने काम में लगी थीं, पर चुप्पी जैसे बीच में दीवार बनकर खड़ी थी।

तभी अचानक—

"टप्!"

बिजली चली गई।

सुमित्रा ने झुँझलाकर कहा— "अरे, बिजली फिर गुल हो गई! कब तक यही हाल रहेगा?"

कलावती ने भी चूल्हे में लकड़ी सुलगाते हुए धीरे से जोड़ा— "यह जो विधायक है न... एकदम निकम्मा है। न बिजली की ठीक व्यवस्था, न पानी की। बस चुनाव के समय बड़े-बड़े वादे।"

सुमित्रा ने बात पकड़ ली— "हाँ दीदी, पिछली बार तो कह रहा था कि हर घर में चौबीस घंटे बिजली रहेगी। अब देखिए— दीया जलाने की नौबत आ जाती है।"

दोनों की आवाज़ों में हल्की खीझ थी, पर उसी में एक अनकहा साथ भी था—जैसे शिकायतें अलग-अलग हों, पर दर्द एक ही हो।

इतने में बगल वाले घर से आवाज़ आई— "अरे बहू... कोई है?"

दरवाज़े पर मनोहर की माँ, फूलमती खड़ी थीं। चेहरे पर हल्की चिंता, पर आँखों में अपनापन।

"बहू, ज़रा मिट्टी का तेल मिल जाता क्या? आज ख़त्म हो गया...

और मनोहर को रात में पढ़ना है।"

जैसे ही वह आँगन में दाख़िल हुईं, कोने में टँगा पिंजरा हिलने लगा। उसमें बैठा हीरामन तोता अचानक चहक उठा— "आ गई! आ गई! फूलमती आ गई!"

आँगन में एक हल्की-सी हँसी फैल गई।

उधर खेलते-खेलते उर्मी का ध्यान भी उधर चला गया।

"उर्मी!"

सुमित्रा ने आवाज़ दी—

"जरा फूलमती काकी को तेल दे आओ।"

उर्मी उठी।

उसकी चाल में एक सहजता थी—न जल्दी, न बनावट। जैसे हर कदम अपनी जगह ठीक-ठीक पड़ता हो।

जब वह पास आई, तो साँझ की धुंधली रोशनी में उसका चेहरा और निखर उठा। उसकी आँखें... बड़ी, गहरी, और शांत—जैसे किसी पोखर में ठहरा हुआ चाँद। उनमें एक अजीब-सी खिंचाव था—जो देखने वाले को कुछ पल के लिए रोक ले।

फूलमती उसे देखते ही ठिठक गईं।

"अरे..." उनके मुँह से अनायास निकला—

"कितनी बड़ी हो गई रे उर्मी..."

उर्मी ने हल्की मुस्कान के साथ सिर झुकाया और अंदर जाकर मिट्टी का तेल ले आई।

जब वह तेल का डिब्बा देने लगी, तो फूलमती ने उसका हाथ थाम लिया। फिर दूसरे हाथ से उसके गाल को सहलाया—इतने स्नेह से, जैसे वह अपनी ही बेटी हो।

"जुग-जुग जियो बिटिया... सौभाग्यवती हो..."

उनकी आवाज़ में दुआ थी, और आँखों में अपनापन।

उर्मी ने धीरे से मुस्कुराकर उनकी ओर देखा—उस मुस्कान में सम्मान था, और एक शांत आत्मीयता भी।

उसी समय कोने में खड़ा एक दुबला-पतला लड़का झाँक रहा था—मनोहर। उसकी आँखों में संकोच था, पर पढ़ने की लगन भी साफ झलकती थी। हाथ में पुरानी-सी किताब थी, जैसे वह अँधेरे से पहले ही रोशनी समेट लेना चाहता हो।

कलावती ने उसे देखकर आवाज़ दी— "पढ़ाई कर रहा है?"

मनोहर ने सिर हिलाया— "हाँ काकी... कल मास्टर जी पूछेंगे।"

रामनारायण की कही बात जैसे हवा में तैर गई— "पढ़-लिख लेगा, तो इस गाँव की तस्वीर बदल जाएगी।"

फूलमती तेल लेकर चली गईं। हीरामन तोता फिर चुप हो गया, जैसे उसका काम पूरा हो गया हो।

आँगन में फिर वही दो रसोइयाँ, वही चूल्हे, और वही दो गोतनियाँ।

सुमित्रा उठकर जाने लगीं, तो कलावती ने हल्की मुस्कान के साथ कहा— "अरे सुनो... थोड़ा अपना भी ध्यान रखा करो।"

सुमित्रा ने मुड़कर देखा— "क्यों, क्या हुआ?"

कलावती ने आँखों में हल्की शरारत के साथ कहा— "थोड़ा वजन घटाओ... चर्बी जमने लगी है। हमारी औरतों को तो सुंदर दिखना चाहिए—एकदम लड् जैसी नहीं।"

एक पल के लिए सुमित्रा चुप रहीं... फिर हँस पड़ीं— "आप भी न दीदी!"

दोनों की हँसी इस बार खुलकर गूँजी—जैसे थोड़ी देर पहले की चुप्पी कहीं घुल गई हो।

नीम के पत्ते फिर से सरसराए।

आँगन अब भी एक था।

रसोइयाँ अलग थीं,

पर रिश्ते...

वे अब भी एक ही धागे में पिरोए हुए थे—

जहाँ हल्की-सी होड़ भी थी,

और उससे कहीं गहरा एक अपनापन भी।

कहानी

चालीस के बाद की रफ़्तार

अमित उपाध्याय
वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी
निरीक्षण स्कन्ध
सीएजी मुख्यालय, नई दिल्ली

पारिवारिक जिम्मेदारियों और समय की कमी के कारण, चालीस की उम्र के बाद ज़िंदगी अक्सर एक तय लय में चलने लगती है। इसके बावजूद भी उत्साह और जोश में जब हमने अचानक बातों ही बातों में दिल्ली से स्पीति की लगभग 1800 किलोमीटर की यात्रा अपनी बुलेट मोटरसाइकिल से करने का फैसला किया, तो यह सिर्फ़ एक ट्रिप नहीं थी, बल्कि खुद को याद दिलाने का तरीका था कि रोमांच की कोई उम्र नहीं होती। बस दिल में कहीं न कहीं इस बात का डर जरूर था कि इससे पहले मैं कभी दिल्ली से बाहर बाइक से नहीं गया था तो कहीं इतनी लम्बी यात्रा पूरी हो पायेगी या नहीं ।

फिर भी बहुत सारे अच्छे बुरे विचारों के साथ सुबह अँधेरे में जब मैंने और मेरे एक दोस्त ने अपनी-अपनी बुलेट स्टार्ट की, तो इंजन की गूंज ने भीतर कहीं सोए हुए जुनून को जगा दिया। अब रफ़्तार दिखावे के लिए नहीं थी, बल्कि आज़ादी को महसूस करने के लिए थी। बीच-बीच में रूकते हुए शाम ढलते तक हम कुफरी पहुंचे। कुफ़री की ठंडी हवा में यह एहसास साफ़ था कि चालीस के बाद राइड करना ज़्यादा सधा हुआ, लेकिन उतना ही रोमांचक होता है।

सतलुज के साथ चलते हुए अनुभव हर मोड़ पर साथ था। पहले शायद हम तेज़ चलने की कोशिश करते, अब हम सही चलने में विश्वास रखते थे। बुलेट की थाप स्थिर थी, और मन भी। दोस्त साथ था, इसलिए किसी भी विपरीत परिस्थिति का सामना करने का आत्मविश्वास भी साथ था।

ऊँचाई बढ़ते ही साँसें भारी होने लगीं। यहीं समझ आया कि उम्र के साथ शरीर की सुननी पड़ती है। छोटे-छोटे ब्रेक, पानी के घूँट और एक-दूसरे की चिंता, यही चालीस के बाद की राइड का असली रोमांच है, जहाँ समझदारी रोमांच को और गहरा बना देती है।

स्पीति घाटी की वीरानी में बुलेट चलाते हुए लगा जैसे समय धीमा हो गया हो। अब हम जीतने या साबित करने नहीं निकले थे। यह सफ़र खुद से मिलने का था। काज़ा पहुँचते-पहुँचते मन पूरी तरह शांत और आत्मविश्वास से भरा था।

कुंजुम के पास बर्फ़ और तेज़ हवा ने परीक्षा ली। लेकिन चालीस के बाद डर भागने को नहीं कहता, बल्कि सोचने को कहता है। रोहतांग पर खड़े होकर पीछे मुड़कर देखा तो लगा यह सफ़र अनुभव की बदौलत ही पूरा हो पाया।

वापसी का रास्ता लंबा था, लेकिन मन हल्का। बुलेट अब सिर्फ़ मशीन नहीं थी, वह हमारी उम्र, अनुभव और जज़्बे की साथी बन चुकी थी।

वापस दिल्ली पहुँचकर समझ आया कि चालीस के बाद बुलेट पर लंबी यात्रा करना जवानी को दोहराना नहीं है, बल्कि परिपक्वता के साथ रोमांच को जीना है।

और शायद यही इस सफर का असली आनंद है।

कविताएँ

अनुवाद

सन्नी कुमार
पदनाम- कनिष्ठ अनुवादक
कार्यालय प्रधान महालेखाकार
(लेखा एवं हकदारी), बिहार पटना।
मोबाइल - 9931606487

अनुवाद शब्दों की खींचा-तानी है,
जब तक अर्थ-भाव न निकले परेशानी है,
शब्दों की बगिया में गोते लगाना है,
सजावट से भावों को उकेरना है।

अर्थ का बखूबी ख्याल रखना है,
श्रोत भाषा को लक्ष्य भाषा में पिरोना है,
सिद्धांतों की भूल-भुलैया से लक्ष्य को भेदना है,
श्रोत सी बेहतरीन मूरत गढ़ना है।

आशय यू निकले कि समझ आए,
बिना अर्थ बदले भावों को व्यक्त कर जाए,
सरपट-सरपट मस्तिष्क में लक्ष्य भाषा समा जाए,
रियाजत-ए-कश का शाहकार ऐसा कि भा जाए।

सार्थकता, आकांक्षा, योग्यता, सन्निधि एवं अन्विति से,
लक्ष्य भाषा के वाक्यों को परिपूर्ण कराना है,
किश्ती को सिद्धांतों की कसौटी पर खरा उतरवाना है,
सागर को पार कर लक्ष्य तक पहुँचाना है।

क्या क्या याद रखें

पंकज मोहन जायसवाल
वरिष्ठ लेखापरीक्षक
वित्त एवं संचार लेखापरीक्षा कार्यालय,
लखनऊ
मोबाइल- 6389428337

"क्या क्या याद रखें, क्या क्या याद रखें?
उसका मिलना, वो मिलकर बिछड़ना या खुद का गिरकर संभलना याद रखें,
माँ का समझाना, वो पापा का डाँटना या अपनों का ग़ैरों सा हो जाना याद रखें,
सोचता हूँ रखूँ याद सब या फिर भूल जाऊँ,
कागज़ की कश्ती वो नदी में नहाना या आँखों से समन्दर बहाना याद रखें।

क्या क्या याद रखें, क्या क्या याद रखें?
गहरी उदासी, वो तन्हाई का आलम या संग दोस्तों के गप्प लड़ाना याद रखें,
अग्नि के फेरे, वो माथे की पगड़ी या जीवन में किसी का आना याद रखें,
सोचता हूँ रखूँ याद सब या फिर भूल जाऊँ,
तारो को गिनना, सूरज तक पहुँचना या चन्दा को रात भर देखना याद रखें,

क्या क्या याद रखें, क्या क्या याद रखें?
सुबह जल्दी उठना, वो काम पर जाना या थक हार कर घर लौट आना याद रखें,
माँ के सीने की ममता, वो बहना की राखी या पापा का दिल पत्थर हो जाना याद रखें,
सोचता हूँ रखूँ याद सब या फिर भूल जाऊँ,
कुछ भी पा लेने की ख्वाहिश, वो सबको हराना या सब छोड एक दिन है जाना याद रखें,

क्या क्या याद रखें, क्या क्या याद रखें
क्या क्या याद.....।।

मित्रता

अंशुल पंत
पदनाम व कार्यालय : महालेखाकार का कार्यालय
(ले व हक. - प्रथम), महाराष्ट्र, मुम्बई
मोबाइल नंबर : 7895813295

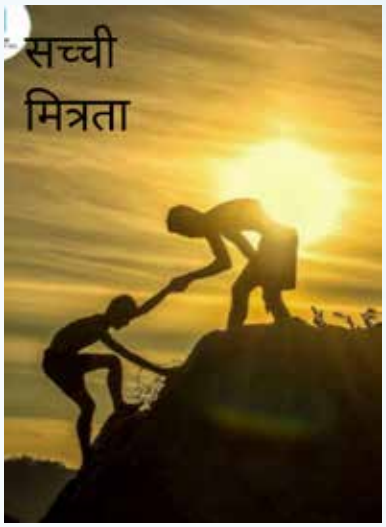

उम्र बीत जाती है जीते जीते
कुछ अनसुलझे रिश्तों को सीते।
एक रिश्ते की है खास पवित्रता
वो है मेरी तुम से मित्रता ।।

कुछ मां से कहते कुछ पिता से कहते
फिर द्रवित हृदय के भाव तुम पर बहते।
सच्चा दिल हो बस यही थी पात्रता
ऐसे हो जाती थी हमारी मित्रता।।

दुख में कभी हम, कभी तुम रोते
संघर्ष कर एक बेहतर कल को बोते।
हर हाल में निभाया जाता ये रिश्ता
जो है मेरी तुम से मित्रता ।।

कभी रूठते कभी झगड़ते
फिर भी आपसी रिश्ते न बिगड़ते।
क्यूंकि स्वार्थ की है यहां शून्यता
ये है मेरी तुम से मित्रता।।
जीवन पथ पर चलते चलते
कई मिलते और कई बिछड़ते।
प्रेम बांटते हम, ना करते शत्रुता
सच्चे रिश्ते का रूप है मित्रता ।।

यही प्रार्थना ईश्वर से है करते
मित्र प्रेम आपस में खूब पनपे
अंत समय तक भी ना हो संतृप्तता
ऐसी बनी रहे हमारी मित्रता ।।

कौन हो तुम

शैलेंद्र कुमार
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी,
एएमजी-IV/ऑडिट-I

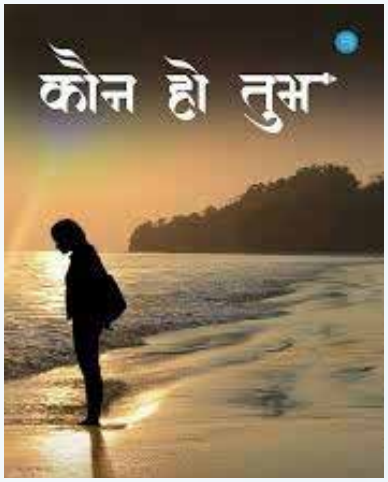

प्रतिबिंबित हो तुम शब्दों में
अनजान- अनाम – सी एक छवि
इस शाम की नीली चादर में
तन्हा-तन्हा दिल एक कवि।
ख्वाबों की कुर्बत सच की दूरी
भला जानता कौन उन्हें?
मालूम नहीं घड़ियाँ सतरंगी
बुनती क्यों अनचाहे लम्हे?
लहरों - सा उद्वेलित मन
सागर-तट से टकराता है
शंख – सीपियाँ यादों की बन
ठहर वहीं रह जाता है।
कतरा- कतरा दिल घुलता है
पिघली यादों के साये में
पतझड़ का मौसम आता क्यों
सूखे शजरों के साये में।

हमारा विभाग

ज्योति दीक्षित
सहायक निदेशक (राजभाषा)
वित्त एवं संचार लेखापरीक्षा कार्यालय,
लखनऊ
मोबाइल-9982700316

जिस विभाग का नाम समूचे देश में,
भारतीय जन बड़े ही आदर से लेते हैं।
उस विभाग को हम बहुत ही गर्व से,
भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग कहते हैं।

बड़े ही सम्मान की बात है ये कि
हम इस गौरवशाली विभाग में कार्य करते हैं।
जिसके उच्च कोर मूल्य हमारे पथ को,
दीपशिखा बन प्रतिदिन आलोकित करते हैं।
उच्च गुणवत्ता वाले लेखापरीक्षण एवं लेखाकरण के माध्यम से,
हम जवाबदेही, पारदर्शिता एवं अच्छे अभिशासन को उन्नत करते हैं।
साई (SAI) के व्यापक और दूरदर्शी दृष्टिक्षेत्र,
हमारी उत्कृष्टता की अभिलाषा को व्यक्त करते हैं।

लेखापरीक्षा का नाम सुनते ही,
भ्रष्टाचारियों के हाथ-पाँव फूल जाते हैं।
और अपनी कमियाँ छुपाने के लिये,
वे स्वार्थवश सत्कार के सेतु बनाते हैं।
करते हैं वे पुरजोर कोशिश लेकिन,
वे लेखापरीक्षा दल को डिगा नहीं पाते हैं।
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा है इस विभाग का प्रतीक-चिन्ह,
जिसे लेखापरीक्षक अपने आचरण से साकार कर दिखाते हैं।
निष्ठा, ईमानदारी और अपने कर्तव्यभाव से,
वे राष्ट्र-निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।
भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग के प्रहरी बन,
विश्वसनीयता की नई मिसाल स्थापित कर जाते हैं।
भ्रष्टाचार से मुक्त हो ये देश हमारा,
बस यही संकल्प हम रोज दोहराते हैं।
ये विभाग रहे हमेशा प्रगति पथ पर अग्रसर,
हम ऐसी ही आशा का दीप नित्य जलाते हैं।

बोझपड़ा (सामंजस्य)

कौशिक चक्रवर्ती
वरिष्ठ लेखापरीक्षक
प्रधान महालेखाकार कार्यालय
(लेखा परीक्षा-II) पश्चिम बंगाल
मोबाइल नं. 9830660665

चाहे कोई अच्छा कहे या बुरा,
जो जैसा है उसे वैसा ही मान लेना सही है।
किसी को तुम अच्छे लगोगे, किसी को शायद नहीं,
कोई तुम्हें अपना सब कुछ दे देगा, तो कोई तुम्हें ठग लेगा।
यही दुनिया की रीत है, इसमें कुछ नया नहीं,
हजारों साल से ऐसा ही होता आया है।
इसलिए जो जैसा है, उसे वैसा ही स्वीकार कर लो,
यही जीवन का सच्चा बोझपड़ा (समझौता) है।
शायद तुम जिसे सबसे ज्यादा चाहते हो,
वही तुम्हें सबसे ज्यादा चोट पहुँचाए।
जिस नाव पर तुम भरोसा कर रहे थे,
वही बीच भँवर में साथ छोड़ जाए।
पर हार मानकर बैठने से क्या होगा?
अपनी किस्मत को दोष देने से क्या होगा?
जीवन की इस कश्मकश में आगे बढ़ना ही धर्म है,
दुखों के बीच भी सुख की राह चुनना ही कर्म है।
मन को समझाओ, मन से बातें करो,
जो बीत गया उसे भूलकर नयी शुरुआत करो।
अंधेरे के बाद ही उजाला आता है,
और कठिनाई के बाद ही शांति का अनुभव होता है।
अभिमान छोड़कर, सत्य को अपनाओ,
और जीवन के साथ एक सुंदर सामंजस्य बनाओ।

यह रवींद्रनाथ टैगोर की प्रसिद्ध कविता है " कविता जीवन के उतार-चढ़ाव और प्रतिकूल परिस्थितियों में खुद को ढालने और सकारात्मक रहने का संदेश देती है। इस कविता का एक भावानुवाद प्रस्तुत है:

आज़ादी की कहानी

नवीन दैया 'एकांत'
सीएजी मुख्यालय, नई दिल्ली

आजादी की कहानी आज तुम्हें सुनाता हूँ।
तिरंगे में तीन रंग कैसे भरे, आज मैं बताता हूँ ।।

मुग़लों से लेकर अंग्रेजों तक सबने हमें रौंदा था।
गुलामी की जंजीरों में बांधकर बार बार हमें कुरेंदा था ।।

यूँ ही आज़ादी का लड् थाली में हमें नहीं मिला।
पूर्वजों की जान की बाज़ी से आज़ादी का फूल खिला था ।।

ना जाने कितनी प्रताड़नाएं और अत्याचार सहे होंगे।
कालेपानी के द्वीप में गुमनाम जीवन कितनों ने जिये होंगे ।।

क्रांतिकारियों के हौंसलों को पंख तब लगे थे।
भगतसिंह ने ब्रिटिश असेंबली में खुलकर बम जब फेंके थे।।

इंक़लाब का नारा तब भारतवर्ष में खूब गूंजा था।
बम से ज़्यादा ब्रिटिश शासन इंक़लाब से थर्र थर्राकर उजड़ा था।।

आज़ादी हेतु इंक़लाब की मशाल, रक्त ईंधन से जलाई गई थीं।
तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आज़ादी दूँगा, यह नारा नहीं एक मिशन था।।

आज़ादी के रथ में ईंधन भरने काम क्रांति वीरों को करना था।
आज़ादी हेतु जनमानस का जोश प्रबलता के स्तर से भीऊँचा था ।।

अंग्रजों के विरुद्ध असहयोग आंदोलन का बिगुल हर घर से गूंजा था।
क्रांति की ज्वाला अपने प्रचण्ड वेग से जली थी।।

प्राणों की आहुति देकर भी सांस आज़ादी की लेनी थी।
कई माताओं ने कुर्बान किये टुकड़े अपने जिगर के ।।

बापों के भी कंधे दब गये,
वीर बेटों की अर्थी उठाने में।
केवल शांति से आज़ादी हमें नहीं मिली,
क्रांति की ज्वाला का यह जौहर था
अंग्रेज देश छोड़ भागे,
जान उनकी हलक में थी
फूट डालो-राज़ करो की नीति को
अंग्रेजों ने खूब भुनाया देश के दो टुकड़े करके,
सांप्रदायिकता का बीज उन्होंने बोया
लालकिले की प्राचीर से
जब प्यारा तिरंगा लहराता है आँखों में
दो आँसू भर कर उन वीर
शहीदों को श्रद्धांजलि दे देना।
हरा उन्नति का, शांति का सफ़ेद रंग,
शौर्य दिखाता केसरिया रंग,
तिरंगे की वीरगाथा लिखी गई
रक्त स्याही के थे वो रंग,
रक्त स्याही के थे वो रंग

प्रकृति का आँचल : एक अनमोल धरोहर

डॉ. अजीत कुमार
निदेशक (मु.)
कार्यालय, महानिदेशक
लेखापरीक्षा (खान & कोयला)
कोलकाता

सूरज की पहली किरण जब, अंबर को सहलाती है,
सोई हुई इस धरती को, मीठे स्वर में जगाती है।
पर्वत की उन ऊँची चोटियों पर, जब बर्फ चमकती है,
जैसे धरती माता ने, चाँदी की ओढ़नी पहनी है।
कल-कल करती नदियाँ देखो, पत्थरों से टकराती हैं,
जीवन का संगीत सुनाकर, सागर तक ये जाती है।
ऊँचे-ऊँचे ये घने पेड़, अम्बर को छूने की चाहत में,
शीतल छाया बाँट रहे हैं, अपनी हर एक शाख में।
फूलों की कलियाँ जब अपनी, पंखुड़ियाँ बिखेरती है,
सारी सृष्टि में खुशबू की, एक लहर सी दौड़ती है।
रंग-बिरंगी तितलियाँ फिर, उन पर प्यार लुटाती हैं,
छोटे-छोटे भौरों को भी, पास अपने बुलाती हैं।
सावन की वो पहली बारिश, मिट्टी को जब भिगोती है,
सोंधी-सोंधी महक हवा में, चारों ओर पिरोती है।
मोर नाचते वन में देखो, अपने पंख फैलाकर,
झूम उठती है सारी धरती, रिमझिम सावन पाकर।
पतझड़ में जब पत्ते गिरकर, राहों को सजाते हैं,
वो भी हमको जीवन का, एक पाठ नया पढ़ाते हैं।
रुक जाना ही अंत नहीं है, फिर से नया सवेरा होगा,
नए कोंपलों के आने से, गुलशन फिर से सुनहरा होगा।
रात के गहरे सन्नाटे में, जब चंदा मामा आते हैं,
अपनी शीतल चाँदनी से, सारा जग चमकाते हैं।
टिम-टिम करते तारे जैसे, आसमाँ के मोती हों,
अंधेरों को दूर भगाती, कुदरत की ये ज्योति हों।
हवा के झोंके कानों में, कुछ गुपचुप कह जाते हैं,

शांत खड़े ये पहाड़ हमें, धीरज ही सिखलाते हैं।
प्रकृति ही है जननी सबकी, पालन-पोषण करती है,
निस्वार्थ भाव से हम सबके, खाली झोले भरती है।
लेकिन देखो आज मनुज ने, कैसा चक्र चलाया है,
अपनी ही माँ के आँचल पर, संकट भारी लाया है।
कटते जंगल, दूषित नदियाँ, रोती आज हवाएँ हैं,
अगर न जागे अब भी हम, तो कैसी ये दुआएँ हैं?
आओ मिलकर कसम ये खाएं, कुदरत को हम बचाएंगे,
हर आंगन में, हर कोने में, नन्हे पेड़ लगाएंगे।
हरियाली से सजी ये धरती, फिर से स्वर्ग कहलाएगी,
आने वाली पीढ़ी को ये, सुंदर सुख दे पाएगी।
प्रकृति के इन रंगों में ही, असली जीवन बसता है,
जो करता है प्रेम इससे, वही चैन से हंसता है।
जंगल, पंछी, नदी और पर्वत, सबके हम आभारी हैं,
इस सुंदर से संसार की, हम सब पहरेदारी हैं।

मेहनत रंग लाएगी

विष्णु शर्मा
(लेखाकार)
प्रधान महालेखाकार का कार्यालय (ले व हक.)
हिमाचल प्रदेश
मोबाइल-9634761437

जो कहते थे की क्या पाया ।
कह कर बहुत कुछ बड़ा सताया ।
वक्त ने पहिया ऐसा घुमाया ।
हर सवाल खुद ही मुरझाया ।

न समझे वो कभी मेहनत का मान ।
श्रम, धैर्य और संघर्ष की पहचान ।
पसीने के हर एक बूँद से ।
ढह गया झूठा अभिमान ।

यह कहानी नहीं सच्चाई है ।
जो सबके समक्ष आनी थी ।
वह रात बड़ी सुहानी थी ।
जब मेहनत रंग लानी थी ।

तोड़ कर सारे बंधन ।
लिखनी एक नई कहानी थी ।
मानो या न मानो, वह नींद बड़ी मीठी होगी ।
जो दिन रात श्रम से पिरोई होगी ।

जब श्रम का दामन थामोगे ।
तब ही उन्नति पाओगे ।
श्रम को जब मान दोगे ।
भाग्य स्वयं मुस्काओगे ।

सफलता का भवन

रामानन्द शर्मा
सेवानिवृत्त वरिष्ठ लेखापरीक्षक कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा राजस्थान जयपुर-
मेरा पता राममन्दशर्मा 76/55 शिप्रा पथ, मानसरोवर, जयपुर-802020 (राजस्थान)

सफलता का तभी तैयार होगा भवन
पथ पर अग्रगामी बनो, करते रहो मृजन ॥

बर्फ का पहाड़ हो, चाहे हो बरसात को छुट्टा,
चरैवेति का सिद्धान्त दृढ़ हो, चाहे गरमी की हो तपन ।।

धरा की गहराइयों में सुकून बढो तो मिलेगा,
उदात्त लहरों के सहारे तुम, छू लो तुम गगन ।।

वृक्ष की छाँव में पल भर के लिए सुख लो जरा,
सर्द हवा चले चाहे द्रुतगामी सरसराती पवन ।।

पथ पर न रुकें कदम जरा भी इस तरह चलो,
खुशियों का पिटारा लूटते चलो, हो जाओ मगन ॥

गुनगुनाते ही मिलेगा तयशुदा पथ का रास्ता,
गाते चलो आसावरी गान चाहे गाओ राग यमन

माँझी और नाव

श्री अंकुश शर्मा
लेखाकार/ प्रशासन
कार्यालय प्रधान महालेखाकार
(लेखा एवं हकदारी), गुजरात,
राजकोट-360001

माँझी और नाव
बहुत आसान है कहना,
किनारे बैठ सागर के,
चलानी नाव माँझी को,
नहीं आती, नहीं आती।
घिरे हो क्या कभी भी तुम,
बवंडर में समंदर के?
जो कहते हो चलानी नाव,
माँझी को नहीं आती।

गरज सुन कर के नभ में,
बादलों की गड़गड़ाहट की,
रजाई में छुपे जाते हो तुम,
सुन कर वो आहट ही,
कभी महसूस की ठिठुरन,
हवा की सरसराहट की,
कभी क्या है सुनी आवाज़,
यम की फुसफुसाहट की?
तुम्हारी आत्मा दो पल को,
नश्वर से निकल जाए,
तुम्हारे सब तरफ जो हो,
जमावट इस गरलघट की!
तूफानों में ना खोना धीर,
है पहचान माँझी की,
बिना संकट कुशलता की,
परीक्षा हो नहीं पाती।
बहुत आसान है कहना,
किनारे बैठ सागर के,
चलानी नाव माँझी को,
नहीं आती, नहीं आती।

किया है सामना तुमने,
कभी क्या उस बवंडर का,
खड़ा हो सामने मुंह खोल के,
दानव समंदर का।
धरा हो रूप जब उसने,
खड्गधारी जालंधर का।
तुम्हारी आख़िरी उम्मीद हो,
बस चरण शंकर का।
अरे क्या सह सकेंगे वे,
थपेड़े सख़्त लहरों के,
सहन जो कर नहीं सकते,
ज़रा सा घाव कंकड़ का।
खड़ी करते हो उंगली जब,
किसी की शख्सियत पर तुम,
पलट कर तीन अपनी ओर,
को भी हो खड़ी जाती।
बहुत आसान है कहना,
किनारे बैठ सागर के,
चलानी नाव माँझी को,
नहीं आती, नहीं आती।

नहीं करता है वो परवाह,
किसी पल भी रुकावट की,
नहीं दिखती है उसके भाल पर,
रेखा थकावट की,
नहीं करता शिकायत वो,
विपत्ति की, गिरावट की,
है चौड़ी शौर्य से छाती,
नहीं वस्तु दिखावट की।
अड़ा रहता है वो तूफान में भी,
इस तरह जैसे,
कि जैसे मूल हो मज़बूत सी,
कोई महावट की।
है गहरी बात ये 'अंकुश',
समझ पाते चुनिंदा ही,
ये बातें ऐरे–ग़ैरे के,
समझ में भी नहीं आती।
बहुत आसान है कहना,
किनारे बैठ सागर के,
चलानी नाव माँझी को,
नहीं आती, नहीं आती।

घिरे हो क्या कभी भी तुम,
बवंडर में समंदर के?
जो कहते हो चलानी नाव,
माँझी को नहीं आती।
बहुत आसान है कहना,
किनारे बैठ सागर के,
चलानी नाव माँझी को,
नहीं आती, नहीं आती।

साहस

जावेद
वरिष्ठ लेखापरीक्षक
गोपनीय कक्ष, भारत के नियंत्रक एवं
महालेखापरीक्षक का कार्यालय, नई दिल्ली
-110124 मोबाइल - 8802728829,

साहस प्रकाश है, जो भयरूपी तम को चीरता है,
यह वो दीपक है जो मुश्किल से जलता है।
इसका कोई आकार नहीं, न शब्दों में समाता है,
इसकी ताकत से ही मानव पूर्ण बन पाता है।

जब साहस जन्म लेता है, तब आत्मा जागती है,
यह वो ऊर्जा है, जिससे विपदायें भागती है।
जीवन की कठिनाईयों से लड़ने में यह शक्ति है,
इसी के कारण अनेकों सफलताएं मिलती है।

दुख के मेघों के पीछे सुख की एक किरण होती है,
साहस की क्षमता टूटी हिम्मतों को जोड़ती है।
साहस की सीमा से ही कामयाबी तय की जाती है,
ये वो रोशनी है जो अंधेरे में रास्ते दिखाती है।

साहस डर को, अंदेशों को, आशंकाओं को टालता है,
साहस ही जीवन की यात्रा को सुगम बनाता है।
साहस से ही आत्मविश्वास है, पराक्रम पैदा होता है,
साहस बिना जीवन निरर्थक व अधूरा होता है।

जीवन का सार

सुमित कुमार
सहायक पर्यवेक्षक, समन्वय
प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा
केंद्रीय व्यय (कृषि, खाद्य एवं जल संसाधन)
आठवाँ व नवाँ तल, सी.ए.जी. संकाय भवन,
बहादुर शाह ज़फर मार्ग, नई दिल्ली- 110002.

जीवन है बड़ा क्षणभंगुर फिर अपनी हस्ती पर इतना गुमान क्यों
आने वाले पल का कुछ पता नहीं फिर इतना अभिमान क्यों
जब सारी माया काया छोड़ कर जाना है खाली हाथ यहाँ से
फिर आत्मीयता, सहिष्णुता इंसानियत से इतना अलगाव क्यों ।

बड़े- बड़े अहंकारी सुरमा राजे महाराजे आदि समा गए
यहाँ काल के ग्रास में
कितने ही आलीशान भव्य साम्राज्य तक मिल गए यहाँ ख़ाक में
फिर अपनी हस्ती पर इतने दंभ से इतराता क्यों है इंसान
जीवन है बड़ा क्षणभंगुर फिर अपनी हस्ती पर इतना गुमान क्यों ।

प्रेम सौहार्द विनय करुणा आदि ही है मानवता के मार्ग की कुंजी
अपने अंतःकरण में इनको आत्मसात कर
क्यों नहीं आगे बढ़ता है इंसान
आगे बढ़ने की चाह में क्यों अपने को खोता जा रहा है इंसान
धन सम्पदा शौहरत आदि के गुमान में क्यों इंसानियत खो रहा है इंसान
जीवन है बड़ा क्षणभंगुर फिर अपनी हस्ती पर इतना गुमान क्यों ।

किसे क्या कहें

सुनीता
क. अनुवादक (राजभाषा)
नई दिल्ली, मुख्यालय

क्या कहें उसे,
जिसको कमजोर समझता है समाज,
और वह खुद को उससे शक्तिशाली समझने वाले लोगो को
जनती भी है, पालती भी है, और उन्हीं के बीच रहती है,
हर पल घर में, बाहर में, समाज में,
उन्ही से कमजोर होने का ताना सहती है।

और उसे भी क्या कहें?
वह खुद अभाव में रहता है,
और तुम कहती हो कि भाव नहीं देता,
शायद ऐसा नहीं है,
उस पेड़ को तो काट दिया जाता है ना
जो छाँव नहीं देता,
दरअसल उसके सपनों पे ज़िम्मेदारी का
जो पूरा टीला गिर गया,
उसमे उसके सपनों के साथ
उसका आत्मसम्मान भी दब गया।
अब कोई कुछ कहे, उसे फर्क नहीं पड़ता।

और उनको क्या कहें,
वो जो चार लोग है
जो केवल कहते है,
उनको सुनाई भी केवल दूसरों के विषय में देता है,
वो स्वयं के प्रति जन्मजात बहरे चार लोग,
कभी वे चार लोग हम और तुम ही होते है ।

और क्या कहें हर उस व्यक्ति को जो जहां है,
वहाँ तक पहुंचने में क्या कुछ पीछे छोड़ आया है,
और क्या अब छोड़ रहा है,
यह भी केवल वही व्यक्ति जानता है।
एक समय के बाद उस अपने संघर्ष की कहानी कहने में भी
कोई गर्व महसूस नहीं होगा,
क्योंकि कितने ही व्यक्ति है इस धरा पर
जो जीवन का कारावास काट रहें है,
अपना सुख और दु:ख,
बोलकर ही बाँट रहें है।

तो अब किसे क्या कहें
या ये सीखें कि चुप कहाँ रहना है,
या ये कहें कि बोलना एक कला है
लेकिन कम बोलने में ही भला है।

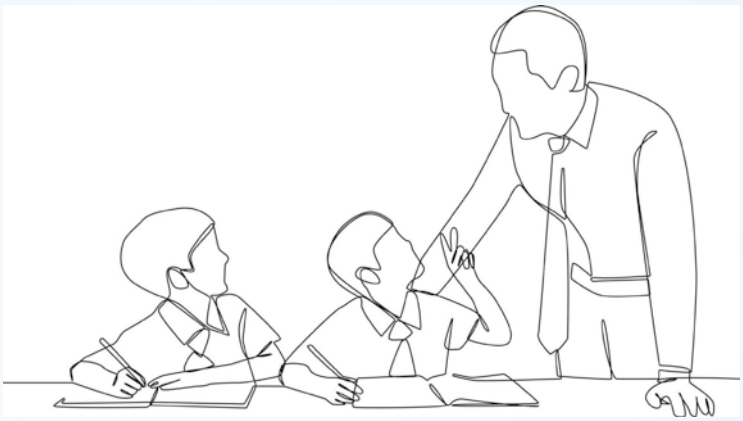

“खो गया कहाँ... रिश्तों का सम्मान”

रिंकी गुप्ता
स.ले.अ/विधिक कक्ष
कार्यालय प्रधान महालेखाकार
(लेखा एवं हकदारी), गुजरात,
राजकोट-360001

कलियुग की आँधी में बिखरे अरमान,
टूटते संबंध, मुरझाते परिवारों के गान।
प्यार की जगह स्वार्थ ने लेली है पहचान,
खो गया कहाँ... रिश्तों का सम्मान।

जहाँ संबंध थे अपनत्व की डोर,
अब मोबाइल ने बाँध दिए हैं मन के छोर।
ममता की छाँव भी लगती है अनजान,
खो गया कहाँ...रिश्तों का सम्मान।

ठहाके गूँजते थे आँगन में खुशी के,
आज दिखावे की दौड़ में हो गए हैं निर्जन।
सच की जगह झूठ को मिला है मान,
खो गया कहाँ... रिश्तों का सम्मान।

माँ की ममता अब बन गई है बोझिल,
भाई–बहन के बंधन हो गए हैं स्वार्थ में तब्दील।
पति–पत्नी नज़र आ रहे करते एक-दूसरे का अपमान खो
गया कहाँ... रिश्तों का सम्मान।

त्यौहार जो मिलन का संदेशा लाते थे,
अब दिखावे के ही रंग सजाते हैं।
भावनाओं की जगह दिखता है केवल सामान,
खो गया कहाँ... रिश्तों का सम्मान।

बच्चे व्यस्त हैं सपनों की दौड़ में,
बुज़ुर्ग तड़पते हैं अपनी ही ओट में।
घर होते हुए भी मन रहता है वीरान,
खो गया कहाँ... रिश्तों का सम्मान।

कलियुग की चादर ने सब ढंक लिया,
विश्वास का दीपक भी मंद हो गया।
हर दिल में उठता यही सवाल—
आख़िर क्यों हुआ रिश्तों का ऐसा हाल?

जागो अभी भी समय है, सुधर लो,
स्नेह की डोर से फिर से रिश्तों को भर लो।
प्रेम ही है जीवन का अमूल्य मान,
लौटा लो फिर से रिश्तों का सम्मान।

हक़ की उड़ान

सुमित
लेखाकार, कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा व हक़),
हरियाणा,
मोबाइल न. 8950057765

बेटी को बचाना है, बेटी को पढ़ाना है,
पर हर कदम पर उसका हौसला तोड़ना है।

बेटी घर की शान है, सबको यही सिखाना है,
पर बाहर निकले तो, उसके रास्ते में कांटे बिछाना है।

कहते हैं बेटी लक्ष्मी है, घर की रौनक है वही,
पर जब कुछ बोलने आए तो कहना
“चुप रहो, ये लड़कियों के लिए नहीं।”

उसके कपड़ों पर सवाल, उसके सपनों पर रोक,
खुद की पहचान चाहे, तो कहें “ये है तुम्हारा शौक?”

बेटी को ऊँचा उड़ाना है, ये नारे हैं हर गली,
पर उड़ने लगे अगर वो, तो
कहते हैं, “अब ये ज़मीन पे नहीं रही।”

कहते हैं उसे हिम्मत दो, न डराए कोई उसे,
फिर खुद ही उसे डराएं, कि "लड़की हो, ये मत करो"
बस यही सिखाएं उसे।

आधुनिकता के बड़े-बड़े झंडे तो लहराएंगे,
पर उसकी आवाज़ को फिर "मर्यादा" से दबाएंगे।

उसकी सुरक्षा का दावा हर पोस्ट में करेंगे,
पर उसके हौसलों को हर सवाल से बिखेरेंगे।

बेटी को बचाना है, बेटी को पढ़ाना है,
पर उसकी हर हँसी, हर ख्वाब पे पहरा भी लगाना है।

बेटी जब सवाल करे, तो कहते हैं "ज्यादा मत पूछो,"
उसकी जिज्ञासा को दबाकर, कहते हैं "अपनी हद में रहो।"

उसे किताबें दो, मगर पढ़े जो हक़ की बातें,
तो कह दो "ये सब तुम्हारे बस की नहीं, औरों के लिए हैं राहें।"

बेटी अगर कामयाब हो, तो कहते हैं "क़िस्मत अच्छी थी,"
पर बेटा जीते तो कहते हैं "मेहनत और काबिलियत सच्ची थी।"

बेटी का सम्मान सिर्फ शब्दों में नहीं, कर्मों में हो,
उसे उड़ने दो, उसके सपनों को नए आसमानों में संवरने दो।

जब सच में बेटी को बचाना और पढ़ाना होगा,
तो पहले समाज की सोच को बदलना होगा।

"मर्यादा" की दीवारें, भीतर ही भीतर उगती हैं,
बाहर के पहरेदार कम, अंदर की जंजीरें चुभती हैं।

देवी बनाकर देह से, फिर डरना भी सिखाया है,
पूजा की थाली देकर, अधिकारों से हटाया है।

सुरक्षा का दूसरा नाम, अक़्सर नियंत्रण होता है,
जो साथ चले वही साथी, वरना क़ैद-क़ानून होता है।

घर का काम “फ़र्ज़” कहकर, करियर को “शौक़” बताते हैं,
वही मेहनत बेटे की हो, तो “कौशल” कहलाते हैं।

किताबों में बराबरी, पर हिस्से नहीं बँटते घर के,
थाली, तख़्त और विरासत, अब भी हक़ में हैं किसके?

"हम तो आधुनिक सोच वाले हैं," ये कह कर सो जाएंगे,
पर हर कदम पर उसकी राहों में, अंधेरे को और फैलाएंगे।

बेटी को बचाना, पढ़ाना—ये बस शुरुआत है,
समान मनुष्यता तक पहुँचना ही असल ज़रूरत है।

जिस दिन घर की भाषा में, “ना” को हाँ-सा माना जाएगा,
उसी दिन ये देश सच में, बेटी का देश कहलाएगा।

हिंदी कार्यशाला विशेष

प्रिया मिश्रा
वरिष्ठ अनुवादक, प्रधान निदेशक का कार्यालय (मुंबई)
मोबाईल संख्या – 9167321318

जितनी भी देर आप मुझे सुन पाएंगे, मैं आपको उतनी देर ही प्रशिक्षण दूंगी,
हिंदी कार्यशाला, अभ्यास, प्रशिक्षण क्यों दिलवाते हैं, आज मैं उसका महत्व बतलाऊंगी,
लगभग तीस साल का हिंदी शिक्षण योजना में कार्य का अनुभव लिए व्याख्याता आई,
आपस में बातचीत कर कार्यलयीन कार्य में आ रही चुनौतियों का निवारण बताऊंगी सुन सभा हर्षाई।
"पढ़े-लिखे को पढ़ाना मुश्किल है", "जब सब कुछ भरा है तो हिंदी पढ़ाना अत्यंत कठिन है",
इन शानदार वाक्यों से किया सम्मानीय महोदया ने की कार्यशाला की शुरुआत,
"प्रशिक्षण" और "कार्यशाला" में आसान और सरल भाषा में अंतर समझाया,
जो सम्मेलन कक्ष में उपस्थित सभी माननीय महोदय और महोदया को समझ आया।
जिनकी मातृभाषा हिंदी नहीं है या जिन्होंने किसी भी वजह से अपने स्कूल या कॉलेज के स्तर पर हिंदी नहीं पढ़ी है,
उन्हें केंद्रीय सरकार चार स्तर पर देती है प्रशिक्षण,
"प्रबोध", "प्रवीण", "प्राज्ञ" एवं "पारंगत" जिससे अपने कार्यालय में हिंदी में कार्य कर,
भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग के द्वारा विनिर्दिष्ट लक्ष्य "90%" प्राप्त कर सकें हम।
केंद्र सरकार के कार्यालय में कार्यरत अधिकारियों व कर्मचारियों को,
धारा 3(3) के अंतर्गत आने वाले दस्तावेज - सामान्य आदेश, संकल्प, परिपत्र, नियम, अधिसूचना, प्रशासनिक या अन्य प्रतिवेदन, प्रेस विज्ञप्ति, संविदाएं, करार, अनुज्ञप्तियां, अनुज्ञापत्र, सूचनाएं, निविदा-प्रारूप, संसद के किसी सदन या सदनों के समक्ष रखे जाने वाले राजकीय कागज़ात हमेशा द्विभाषी निकालने है, ध्यान रहें कभी भी होने न पाए इसका उल्लंघन।
दृढ़ इच्छा शक्ति होगी तभी करेंगे आप,
अनिवार्यता और दृढ़ता से राजभाषा हिंदी में कार्य करने का संकल्प लें आप,
विदेशी बोली जैसी भी हो, माँ जैसी सहज, सुबोध, सरल और आत्मा से नहीं जुड़ सकती,
राजभाषा हिंदी में कार्य करना शुरु तो करें, बिना थके, बिना रुके, कर सकते है आप।
प्रयास, कोशिश, तो कीजिए, बनेंगे आपके सारे काम,
"करत करत अभ्यास के जड़मति होत सुजान",
कैसे सुबह से शाम हो गई किसी को समझ न आया,
माननीय महोदया आपका आभार,
अपनी व्यस्त जीवन में हमारे कार्यालय में आने के लिए समय निकाला।

1. बीते दिनों की प्रेमिकाएँ

जय प्रकाश
वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी
प्रत्यक्ष कर अनुभाग, सीएजी मुख्यालय

'भालो थेको''
दो शब्द
मन्त्र की तरह
बोल खामोश चली गयी हैं
बीते दिनों की प्रेमिकाएं
''शेषेर बार मतो एक बार जोड़िये धोरते पारी कि ''
की इल्तजा में
बिना उत्तर की प्रतीक्षा किये
(मेरे ठगे से रह गए बेलहू जिस्म को)
एक बार ना -हुआ -सा -आलिंगन के बाद
मेरे दरवाजे से इस तेजी से निकल गई हैं कि
पहला आंसू मेरे कमरे में गिरा है
तो दूसरा बाहर !
बीते दिनों की प्रेमिकाएं
बारहां ख्वाबो में आती हैं
ख्वाब जिनकी तफसील ओ वुजुहात के
लिए युसूफ ए तन्हा से रसाई की दरकार नही
ख्वाब जिनमे बीतो दिनों की प्रेमिकाएं
स्कूल बस छूट जाने के बाद
बच्चो को स्कूल 'ड्राप' कर
उदास रूह
(वक्त काटने के वास्ते)
पैदल लौट रही होती है
ख्वाब जिसमे दफ्तर से लौटे शौहर के लिए
फ्रिज से ठंडा पानी निकालते हुए
माथे में चोट लग गई है
और जबीं पर उगे गूमड़ के हलके दर्द
के सहारे मीना कुमारी बनी जिन्दगी बसर करने
की सोचती है
ख्वाब
जिसमे बीते दिनों की प्रेमिकाएं
बंगाल की 'मक्खी ' पार्टी -एस यू सी आई (कम्युनिष्ट)
जिसकी क्रांति अनंत में वाके किसी कल को होनी है
के हावड़ा के शिवपुर के कम्यून में मुकीम है
यूरिया के बढ़ते प्रकोप से
भहराता हुआ पैर मेज पर पसार देती है
और अपने गायब हाथो को
जो उनके पैरो को दबाते थे
अपनी आँखे पोंछते पाता हूँ
देखता हूँ
सपने में कि बीते दिनों की प्रेमिकाएं
कलकता के प्रेसीडेंसी कालेज
में मीरा बाई को पढ़ाते हुए थक कर निढाल हो गई हैं
चाइल्ड केयर लीव के मंसूख कर दिए
जाने के दुःख में मुब्तला
कल की रैली में गाड़े गये बांस से टकरा
खून भींगा अंगूठा लिए रिसड़ा लौट रही है
उत्तरपाड़ा में कोई कमीना
कुचले अंगूठे को फिर से कुचल गया है
दर्द हद से गुजर के दवा नही हुआ है
पैर का नासूर हो गया है
जिसके लिए नश्तर ए अल्मास होने की कोशिश में
मै सिर्फ रोता हूँ
तमाम आंसुओ में तमाम शब

मगर ग़म है कि
बाकी रहता है
ख्वाबो में आती रहती है
बीते दिनों की प्रेमिकाएं
ख्वाब जिनके तफसील ओ वुजुहात के लिए
युसूफ ए तनहा से रसाई की दरकार नही

2. खंदा-ए-गुल में

खंदा-ए-गुल में
रंग ओ बू है
उफक में चाँद है,
तारे गर्दिश में !
हर बात में सियासत है
औ'
सियासत में हर बात है
गर्द ओ गुबार में तमाम है जिंदगी
परदे पर रक्कासा है
उसकी अदा में लोच है
जमाना सुरूर में है
दीवार पर कैलेंडर है
कैलेंडर में सात तारीख है
मार्च है ,फरवरी है
बहार है ,रंगीन इबारतें है
दिल्ली में आप की सरकार है
डीटीसी बसें है -तमाम सवार है
चेहरे हैं , बेचेहरा है –सुकून है ,बेचैनी है
हर चीज़ है जहाँ होना है ,
महज मेरा सर नहीं है
तेरे जुल्फ की माहूम घनी छाँव में !

3. छूना

खुदा का दिया सब कुछ है।
अगर कुछ नहीं भी है तो ,
आज जुम्मे की नमाज के बाद
दुआ में माँग आया हूँ।
जिसे पा ना सका ,
वह ऐ भोली पवित्र प्रेयसी,
खुदा नहीं दे सकता
तुम्हीं से मांगता हूँ..तुम्हीं से..
तुम्हीं दे सकती हो..वह..
तुम्हारे ही हैं हाथ
पाँव..ये जबीं..ये कान की लौ..
खुदा निराकार है..
मैं तुझे छूना चाहता हूँ...

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

प्रेरक प्रसंग

कथनी और करनी में अंतर

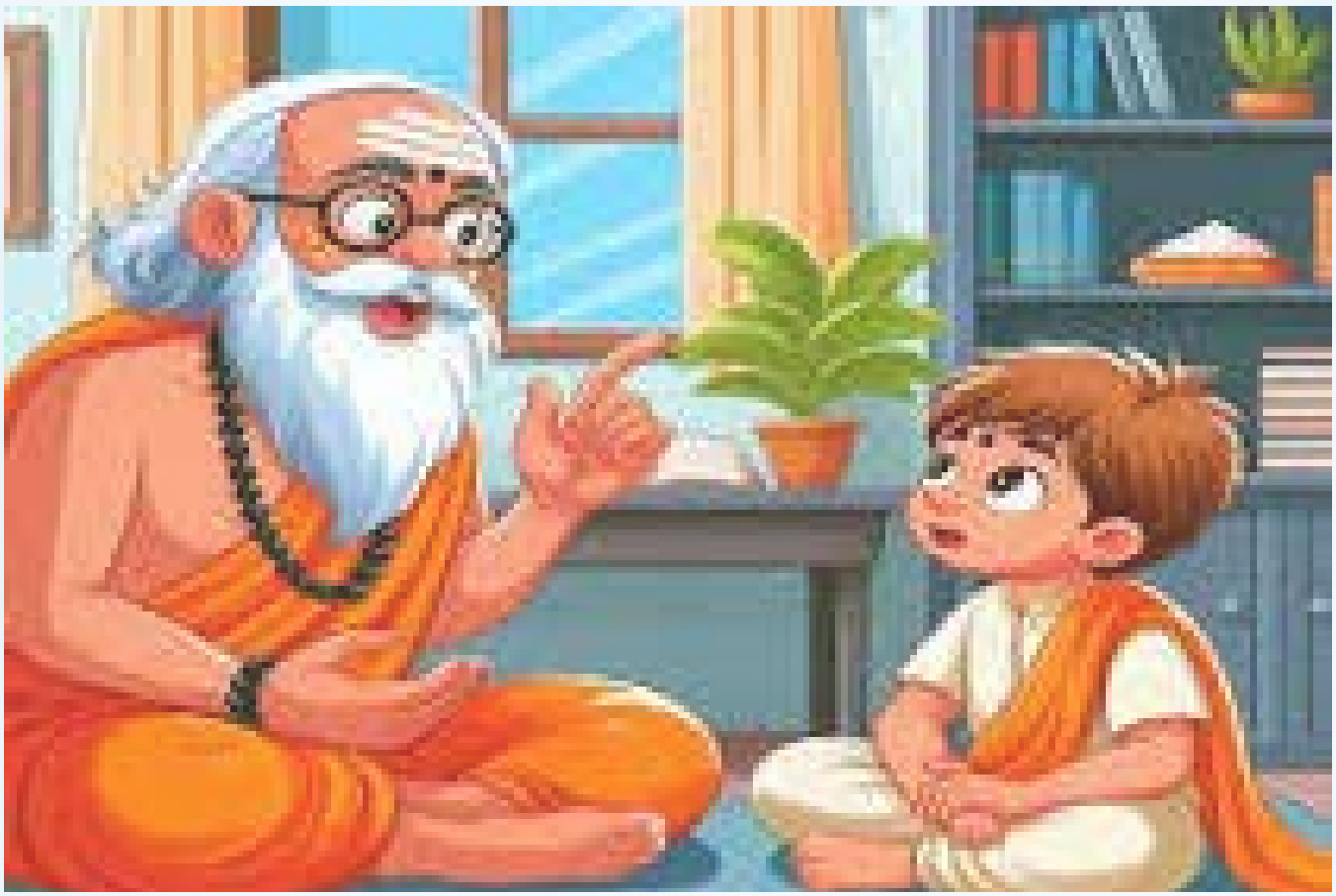

गांव में मंदिर के एक पुजारी की मृत्यु हो गई...

गांव वालों ने मिलकर,उस मंदिर के लिए नए पुजारी की नियुक्ति कर दी। नए पुजारी भी अब गांव के लोगों को प्रवचन देते। कुछ ही दिनों में पुजारी की लोकप्रियता बढ़ने लगी ....!!

वह एक दिन बस से शहर जा रहे थे। पुजारी जी ने बस के कंडक्टर को किराए के लिए रुपए दे दिए । कंडक्टर ने टिकट काटकर अतिरिक्त पैसे पुजारी जी को लौटा दिए। उन्होंने देखा कि मेरे पास ₹10 ज्यादा आ गए हैं। पुजारी जी ने सोचा कि मैं थोड़ी देर बाद कंडक्टर को ₹10 लौटा दूंगा....!!

कुछ ही समय बाद पुजारी जी के मन में विचार आया कि ₹10 जैसी छोटी-सी राशि के लिए परेशान होने की क्या जरूरत है। वैसे भी इन लोगों की कमाई लाखों रुपए है। ₹10 से इनको कोई भी फर्क नहीं पड़ने वाला। मैं इन पैसों को अपने पास ही रख लेता हूं। इस बारे में कंडक्टर को पता भी नहीं है...!!

यह विचार करते-करते शहर आ गया। जब वह बस से उतर रहे थे तो अचानक से रुक गए। उन्होंने ₹10 निकाले और कंडक्टर को वापस लौटा दिए और कहा कि तुमने मुझको ₹10 ज्यादा दे दिए थे। उस कंडक्टर ने पूछा कि क्या आप

गांव के मंदिर के नए पुजारी हैं । पुजारी जी ने गर्दन हिला कर उसको उत्तर दिया...!!

कंडक्टर ने कहा कि मैंने आपके प्रवचनों के बारे में बहुत कुछ सुना है। मैंने आपको देखकर ही ₹10 एक्स्ट्रा दिए थे। मैं बस यह जानना चाहता था कि पैसे ज्यादा मिलने पर आप क्या करेंगे। मुझे पता चल गया कि आपके जैसे प्रवचन है, आपका आचरण भी वैसा ही है। कंडक्टर ने पुजारी जी से पैसे ले लिए और बस आगे चली गई...!!

कंडक्टर की बातें सुनकर पुजारी पसीना-पसीना हो गए। पुजारी ने भगवान के सामने हाथ जोड़े और उनको धन्यवाद किय। पुजारी जी ने मन में विचार किया कि सही वक्त पर मेरा लोभ खत्म हो गया और बुद्धि जग गई, नहीं तो ₹10 की वजह से मेरी पूरी इज्जत मिट्टी में मिल जाती। भगवान की वजह से ही मैं परेशानियों से बचा...!!

सीख: यदि कथनी और करनी में अंतर हो तो धर्म के प्रतिनिधि पर भी विश्वास डगमगा सकता है ।

मन की डोर – प्रभु के हाथ

एक संत एक छोटे से आश्रम का संचालन करते थे। एक दिन प्रवचन के पश्चात उन्होने अपने एक शिष्य से प्रश्न किया कि यदि तुम्हें सोने की अशर्फियों की थैली रास्ते में पड़ी मिल जाए तो तुम क्या करोगे ?

वह शिष्य बोला - "तत्क्षण उसके मालिक का पता लगाकर उसे वापस कर दूंगा अन्यथा राजकोष में जमा करा दूंगा।"

संत हंसे और शिष्यों से बोले -" यह शिष्य मूर्ख है।"

शिष्य बड़े हैरान कि गुरुजी क्या कह रहे हैं ? इस शिष्य ने ठीक ही तो कहा है तथा सभी को ही यह सिखाया गया है कि ऐसे किसी परायी वस्तु को ग्रहण नहीं करना चाहिए।

थोड़ी देर बाद फिर संत ने दूसरे शिष्य से भी वही प्रश्न दोहरा दिया।

उस दूसरे शिष्य ने उत्तर दिया कि "क्या मैं निरा मूर्ख हूँ ? स्वर्ण मुद्राएं पड़ी मिलें और मैं लौटाने के लिए मालिक को खोजता फिरूं? मैं उसे स्वयं के लिए रख लूँगा । "

अब संत ने कहा -" यह शिष्य तो शैतान है।

शिष्य बड़े हैरान हुए कि पहला मूर्ख और दूसरा शैतान, फिर गुरुजी चाहते क्या हैं ?

अबकी बार संत तीसरे शिष्य से वही प्रश्न दोहराया गया ।

उस शिष्य ने बड़ी सज्जनता से उत्तर दिया--" महाराज! अभी तो कहना बड़ा मुश्किल है।इस चाण्डाल मन का क्या भरोसा, कब धोखा दे जाए ? एक क्षण की खबर नहीं। यदि परमात्मा की कृपा रही और सद्बुद्धि बनी रही तो लौटा दूंगा।"

संत बोले -

" यह शिष्य सच्चा है। इसने अपनी डोर परमात्मा को सौंप रखी है। ऐसे व्यक्तियों द्वारा कभी गलत निर्णय नहीं होता।

ज्येष्ठ पांडव, सूर्यपुत्र कर्ण कर्म, धर्म का ज्ञाता, क्या कारण था कि अपने छोटे भाई अर्जुन से हार गया जबकि कर्म और धर्म दोनों में वो अर्जुन से श्रेष्ठ था। कारण था कि अर्जुन ने अपनी घर से निकलने से पहले ही अपनी जीवन रथ की डोरी,भगवान श्री कृष्ण के हाथ में दे दी थी।

सीख : आपको हमें भी इसी प्रकार अपने मन तथा जीवन की डोर प्रभु के हाथ में दे देनी चाहिए।

मन की फिसलन

एक राजा को राज भोगते हुए काफी समय हो गया था । बाल भी सफ़ेद होने लगे थे । एक दिन उसने अपने दरबार में एक उत्सव रखा और अपने गुरुदेव एवं मित्र देश के राजाओं को भी सादर आमन्त्रित किया । उत्सव को रोचक बनाने के लिए राज्य की सुप्रसिद्ध नर्तकी को भी बुलाया गया ।

राजा ने कुछ स्वर्ण मुद्रायें अपने गुरु जी को भी दीं, ताकि यदि वे चाहें तो नर्तकी के अच्छे गीत व नृत्य पर वे उसे पुरस्कृत कर सकें । सारी रात नृत्य चलता रहा । ब्रह्म मुहूर्त की बेला आयी । नर्तकी ने देखा कि मेरा तबले वाला ऊँघ रहा है, उसको जगाने के लिए नर्तकी ने एक दोहा पढ़ा -

"बहु बीती, थोड़ी रही, पल पल गयी बिताय।

एक पलक के कारने, क्यों कलंक लग जाय ।"

अब इस दोहे का अलग-अलग व्यक्तियों ने अपने अनुरुप अलग-अलग अर्थ निकाला । तबले वाला सतर्क होकर बजाने लगा ।

➢ जब यह बात गुरु जी ने सुनी तो उन्होंने सारी मोहरें उस नर्तकी के सामने फैंक दीं ।

➢ वही दोहा नर्तकी ने फिर पढ़ा तो राजा की लड़की ने अपना नवलखा हार नर्तकी को भेंट कर दिया ।

➢ उसने फिर वही दोहा दोहराया तो राजा के पुत्र युवराज ने अपना मुकट उतारकर नर्तकी को समर्पित कर दिया ।

नर्तकी फिर वही दोहा दोहराने लगी तो राजा ने कहा - "बस कर, एक दोहे से तुमने वैश्या होकर भी सबको लूट लिया है ।"

➢ जब यह बात राजा के गुरु ने सुनी तो गुरु के नेत्रों में आँसू आ गए और गुरु जी कहने लगे - "राजा ! इसको तू वैश्या मत कह, ये तो अब मेरी गुरु बन गयी है । इसने मेरी आँखें खोल दी हैं । यह कह रही है कि मैं सारी उम्र संयमपूर्वक भक्ति करता रहा और आखिरी समय में नर्तकी का मुज़रा देखकर अपनी साधना नष्ट करने यहाँ चला आया हूँ, भाई ! मैं तो चला ।" यह कहकर गुरु जी तो अपना कमण्डल उठाकर जंगल की ओर चल पड़े ।

राजा की लड़की ने कहा - "पिता जी ! मैं युवा हो गयी हूँ। आप आँखें बन्द किए बैठे हैं, मेरा विवाह नहीं कर रहे थे और आज

रात मैं आपके महावत के साथ भागकर अपना जीवन बर्बाद करने वाली थी । लेकिन इस नर्तकी ने मुझे सुमति दी है कि जल्दबाजी मत कर कभी तो तेरा विवाह होगा ही । क्यों अपने पिता को कलंकित करने पर तुली है?"

➢ युवराज ने कहा - "पिता जी ! आप वृद्ध हो चले हैं, फिर भी मुझे राज नहीं दे रहे थे । मैं आज रात ही आपके सिपाहियों से मिलकर आपकी हत्या करवाने वाला था । लेकिन इस नर्तकी ने समझाया कि पगले ! आज नहीं तो कल आखिर राज तो तुम्हें ही मिलना है, क्यों अपने पिता के खून का कलंक अपने सिर पर लेता है । धैर्य रख ।"

जब ये सब बातें राजा ने सुनी तो राजा को भी आत्म ज्ञान हो गया । राजा के मन में वैराग्य आ गया । राजा ने तुरन्त फैसला लिया - "क्यों न मैं अभी युवराज का राजतिलक कर दूँ ।" फिर क्या था, उसी समय राजा ने युवराज का राजतिलक किया और अपनी पुत्री को कहा - "पुत्री ! दरबार में एक से एक राजकुमार आये हुए हैं । तुम अपनी इच्छा से किसी भी राजकुमार के गले में वरमाला डालकर पति रुप में चुन सकती हो ।" राजकुमारी ने ऐसा ही किया और राजा सब त्याग कर जंगल में गुरु की शरण में चला गया ।

सीख : एक पल की नैतिक दुर्बलता से जीवन भर का कलंक लग सकता है ।

मुख्यालय समाचार

स्थानीय शासन व्यवस्था को मजबूत करने और क्षमता निर्माण के लिए आईसीएएल ने दिनांक 29 अगस्त 2025 को एनआईआरडीपीआर और सी ई पी टी विश्वविद्यालय के साथ समझौता ज्ञापनों पर हस्ताक्षर किए।

स्थानीय शासन के लेखापरीक्षा के लिए अंतर्राष्ट्रीय केंद्र राजकोट, ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज संस्थान (एनआईआरडीपीआर) हैदराबाद और पर्यावरण योजना एवं प्रौद्योगिकी केंद्र (सीईपीटी), अहमदाबाद के साथ दो समझौता ज्ञापनों (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए हैं।

हस्ताक्षर समारोह 29 अगस्त 2025 को भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक श्री के. संजय मूर्ति की गरिमामय उपस्थिति में आयोजित किया गया। समारोह में हैदराबाद स्थित एनआईआरडीपीआर के महानिदेशक डॉ. जी. नरेंद्र कुमार, अहमदाबाद स्थित सीईपीटी विश्वविद्यालय के प्रबंधन संकाय के डीन प्रोफेसर प्रणवंत और संबंधित संस्थानों के वरिष्ठ प्रतिनिधि उपस्थित थे।

समझौता ज्ञापनों की मुख्य विशेषताएं:

आईसीएएल और सीईपीटी विश्वविद्यालय: दोनों संस्थान शहरी शासन और नियोजन के क्षेत्र में सर्वोत्तम प्रथाओं पर ध्यान केंद्रित करते हुए लोक सेवकों के बीच अकादमिक आदान-प्रदान को बढ़ावा देने और क्षमता निर्माण को बढ़ाने के लिए सहयोग करेंगे।

आईसीएएल और एनआईआरडीपीआर: इस साझेदारी का उद्देश्य प्राथमिक लेखापरीक्षकों की लेखापरीक्षा क्षमताओं को मजबूत करना है, जिससे स्थानीय स्व-सरकारों की जवाबदेही व्यवस्था मजबूत होगी और जमीनी स्तर पर लोकतंत्र को गहरा करने में मदद मिलेगी।

श्री के. संजय मूर्ति ने समझौता ज्ञापनों का स्वागत करते हुए कहा कि सीईपीटी विश्वविद्यालय की विशेषज्ञता शहरी शासन और नियोजन में सुधार लाने में सहायक होगी और एनआईआरडीपीआर के साथ साझेदारी से ग्रामीण स्थानीय निकायों में पारदर्शिता, जवाबदेही और निगरानी को मजबूत करने में मदद मिलेगी। उन्होंने आगे कहा कि भारत सरकार से स्थानीय स्वशासन निकायों को बढ़ते आवंटन को देखते हुए, ये समझौता ज्ञापन समयोचित और महत्वपूर्ण हैं और ये साझेदारियां मजबूत जवाबदेही तंत्र बनाने, सार्वजनिक संसाधनों के अधिक कुशल उपयोग को बढ़ावा देने और जमीनी स्तर पर लोकतांत्रिक शासन को मजबूत करने में सहायक होंगी।

भारत ने प्रौद्योगिकी आधारित सुशासन को बढ़ावा देने के लिए वैश्विक लेखापरीक्षा विशेषज्ञों की मेजबानी की।

भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक (सीएजी)ने दिनांक 09 सितंबर 2025 से हैदराबाद में चार दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन की मेजबानी की, जिसमें 29 से अधिक देशों के वरिष्ठ अधिकारी और लेखापरीक्षा प्रमुखों ने भाग लिया । यह आयोजन इस बात पर केंद्रित था कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई), डेटा विश्लेषण और भू-स्थानिक उपकरणों जैसी उभरती प्रौद्योगिकियां सार्वजनिक लेखापरीक्षा प्रणालियों को कैसे बेहतर बना सकती हैं और पारदर्शी एवं नागरिक-केंद्रित शासन को बढ़ावा दे सकती हैं।

इस वैश्विक संवाद में सर्वोच्च लेखापरीक्षा संस्थानों के अंतर्राष्ट्रीय संगठन के आईटी लेखापरीक्षा कार्य समूह (INTOSAI-WGITA) की 34वीं वार्षिक बैठक, एआई और उभरती प्रौद्योगिकियों पर एक उच्च स्तरीय शिखर सम्मेलन और सर्वोच्च लेखापरीक्षा संस्थानों के अंतर्राष्ट्रीय संगठन की ज्ञान साझाकरण समिति की 17वीं संचालन समिति की बैठक शामिल थी । सर्वोच्च लेखापरीक्षा संस्थानों का अंतर्राष्ट्रीय संगठन 190 से अधिक देशों के राष्ट्रीय लेखापरीक्षा कार्यालयों (जिन्हें सर्वोच्च लेखापरीक्षा संस्थान या एसएआई के रूप में जाना जाता है) का प्रतिनिधित्व करने वाला वैश्विक निकाय है, जो विश्व स्तर पर सार्वजनिक क्षेत्र की लेखापरीक्षा और वित्तीय जवाबदेही में सुधार के लिए काम करता है।

भारत, जो वर्तमान में सूचना प्रोद्यौगिकी लेखापरीक्षा कार्यसमिति समूह (आईटी ऑडिट वर्किंग ग्रुप) और (ज्ञान साझाकरण समिति) दोनों का नेतृत्व कर रहा है, सार्वजनिक लेखापरीक्षा में प्रौद्योगिकी के उपयोग के लिए वैश्विक रणनीतियों को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक श्री के. संजय मूर्ति के नेतृत्व में, सीएजी कार्यालय सरकारी व्यय की निगरानी और मूल्यांकन में सुधार लाने के लिए एआई, बिग डेटा और उपग्रह प्रौद्योगिकी को अपनाने में अग्रणी रहा है।

चीन, पोलैंड, मिस्र, दक्षिण अफ्रीका और एस्टोनिया सहित विभिन्न देशों के प्रतिनिधिमंडलों ने इन चर्चाओं में भाग लिया। ये बैठकें अनुभवों को साझा करने, वैश्विक लेखापरीक्षा पद्धतियों को तेजी से हो रहे तकनीकी परिवर्तनों के अनुरूप ढालने और विभिन्न देशों के बीच सहयोग को मजबूत करने का अवसर प्रदान करती हैं।

दस सितंबर को, आईटी ऑडिट वर्किंग ग्रुप ने एआई टूल्स, ऑडिट डेटाबेस और ग्रुप की आगामी कार्य योजना सहित नवीनतम अंतरराष्ट्रीय ऑडिट पद्धतियों पर चर्चा की । अगले दिन, एआई शिखर सम्मेलन में भारतीय प्रोद्यौगिकी संस्थान (आईआईटी) मद्रास के निदेशक डॉ. वी. कामकोटि ने मुख्य वक्ता के रूप में एआई की वर्तमान स्थिति और भविष्य पर चर्चा की । एक उच्च स्तरीय पैनल ने इस बात पर विचार किया कि ऑडिट संस्थानों ने जलवायु परिवर्तन, समावेश और भ्रष्टाचार जैसी वैश्विक चुनौतियों से निपटने के लिए उन्नत तकनीकों का उपयोग कैसे

किया जाए ।

अंतिम दिन अर्थात 12 सितंबर को ज्ञान साझाकरण समिति की संचालन बैठक आयोजित की गई, जहां लेखापरीक्षा प्रमुखों ने प्रमुख रणनीतिक प्राथमिकताओं पर चर्चा की और वैश्विक लेखापरीक्षा सहयोग पर हुई प्रगति की समीक्षा की ।

ये आयोजन वैश्विक लेखापरीक्षा समुदाय में भारत के बढ़ते नेतृत्व और सार्वजनिक वित्तीय प्रबंधन में सुधार के लिए नवाचार और अंतर्राष्ट्रीय सहयोग के प्रति उसकी प्रतिबद्धता को रेखांकित करते हैं। नागरिकों के लिए इसका सीधा प्रभाव पड़ता है: बेहतर लेखापरीक्षा से करदाताओं के धन का बेहतर उपयोग होता है, सार्वजनिक संस्थान मजबूत होते हैं और सरकारी सेवाओं का वितरण अधिक प्रभावी होता है। इस वैश्विक मंच का आयोजन करके, भारत का सीएजी कार्यालय न केवल राष्ट्रीय लेखापरीक्षा सुधारों को आगे बढ़ा रहा है, बल्कि एक अधिक पारदर्शी, जवाबदेह और डिजिटल रूप से सशक्त दुनिया के निर्माण में भी योगदान दे रहा है।

वैश्विक लेखापरीक्षा संवाद का समापन एआई, उभरती प्रौद्योगिकियों और आईटी लेखापरीक्षा के भविष्य पर केंद्रित चर्चा के साथ हुआ।

2026-28 की कार्य योजना में साइबर सुरक्षा लेखापरीक्षा और रिमोट लेखापरीक्षा को शामिल किया गया।

अंतर्राष्ट्रीय सर्वोच्च लेखापरीक्षा संस्थानों के संगठन (आईएनटीओएसएआई) के सूचना प्रौद्योगिकी लेखापरीक्षा कार्य समूह (WGITA) की 34वीं वार्षिक बैठक और आईएनटीओएसएआई ज्ञान साझाकरण समिति (KSC) की 17वीं संचालन समिति की बैठक, जिसकी मेजबानी भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक (CAG) श्री के. संजय मूर्ति ने की, 12 सितंबर 2025 को हैदराबाद में सफलतापूर्वक संपन्न हुई। चार दिवसीय इस अंतर्राष्ट्रीय कार्यक्रम में सर्वोच्च लेखापरीक्षा संस्थानों, वैश्विक सहयोगी संगठनों और विश्व भर के क्षेत्र विशेषज्ञों का प्रतिनिधित्व करने वाले 29 देशों के प्रतिनिधियों ने सक्रिय रूप से भाग लिया।

बैठकों के दौरान, प्रतिनिधियों ने सार्वजनिक लेखापरीक्षा को मजबूत करने, पारदर्शिता बढ़ाने और नागरिक-केंद्रित शासन सुनिश्चित करने में कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई), उभरती प्रौद्योगिकियों और डिजिटल उपकरणों की भूमिका पर व्यापक चर्चा की। इस आयोजन ने विभिन्न देशों के बीच सार्थक सहयोग, विचारों के आदान-प्रदान और ज्ञान साझाकरण को बढ़ावा दिया।

डब्ल्यूजीआईटीए की 34वीं वार्षिक बैठक में, सदस्यों ने 2023-25 कार्य योजना के अंतर्गत हुई प्रगति की समीक्षा की, जिसमें आईटी लेखापरीक्षा हैंडबुक के समर्थन में विस्तृत लेखापरीक्षा मैट्रिक्स का विकास, सूचना प्रणाली सुरक्षा लेखापरीक्षा पर आईएनटीओएसएआई दिशानिर्देश-5101 का प्रकाशन और सूचना प्रणालियों के मूल्यांकन के लिए दिशानिर्देशों का निर्माण शामिल था। आईटी लेखापरीक्षा डेटाबेस के रखरखाव और ज्ञान साझाकरण वेबिनार के आयोजन में किए गए योगदान को भी सराहा गया।

बैठक का एक प्रमुख परिणाम 2026-28 कार्य योजना को अपनाना था, जिसमें साइबर सुरक्षा लेखापरीक्षा और इंटरनेट ऑफ थिंग्स (आईओटी) प्रौद्योगिकियों का उपयोग करके रिमोट लेखापरीक्षा को प्राथमिकता दी गई है। इस योजना में अनुसंधान, क्षमता निर्माण और नए लेखापरीक्षा ज्ञान के विकास के प्रति प्रतिबद्धताओं को भी सुदृढ़ किया गया। एसएआई इंडिया ने आईआईटी मद्रास के सहयोग से लेखापरीक्षा और निरीक्षण रिपोर्टों पर प्रशिक्षित लार्ज लैंग्वेज मॉडल (एलएलएम) विकसित करने की अपनी पहल प्रस्तुत की। इसके अतिरिक्त, नौ महीने के एआई/एमएल प्रमाणन कार्यक्रम की घोषणा की गई, जो दुनिया भर के अन्य एसएआई के लिए खुला रहेगा।

एसएआई चीन, मिस्र, इंटोसाई विकास पहल (आईडीआई), यूरोसाई आईटी कार्य समूह और अफ्रोसाई-ई के योगदान ने चर्चाओं को समृद्ध किया और अंतरराष्ट्रीय सहयोग के महत्व को उजागर किया।

केएससी की 17वीं संचालन समिति की बैठक में, प्रतिभागियों ने सहयोगात्मक शिक्षण के एजेंडे को आगे बढ़ाने में ज्ञान साझाकरण समिति के अंतर्गत विभिन्न कार्य समूहों के प्रयासों की सराहना की। आईएनटीओएसएआई के महासचिव सचिवालय, आईडीआई और चेक गणराज्य के एसएआई द्वारा प्रस्तुतियाँ रणनीतिक अंतर्दृष्टि और क्षेत्रीय परिप्रेक्ष्य प्रदान करती हैं।

समिति ने 2026-28 के लिए परिचालन योजना के मसौदे पर भी चर्चा की, रणनीतिक विकास योजना 2023-28 के अंतर्गत हुई प्रगति की समीक्षा की और वैश्विक रुझानों पर

रिपोर्ट का विश्लेषण किया। प्रमुख प्रशासनिक मामलों को अंतिम रूप दिया गया, जिनमें केएससी के कार्यक्षेत्र में संशोधन, समिति की रिपोर्टों और प्रस्तावों की स्वीकृति, लक्ष्य अध्यक्षों की जिम्मेदारियों का आवंटन और अगली बैठक के स्थल की पुष्टि शामिल है। अगले वर्ष, बैठक की मेजबानी मिस्र करेगा।

अपने समापन भाषण में, भारत के सीएजी श्री के. संजय मूर्ति ने सभी प्रतिभागियों की सक्रिय भागीदारी की सराहना की और पारदर्शिता, जवाबदेही और सुशासन को बढ़ावा देने के लिए प्रौद्योगिकी के उपयोग के महत्व पर बल दिया। उन्होंने कहा कि साझा विशेषज्ञता और निरंतर सहयोग के माध्यम से, INTOSAI विश्व भर के एसएआई को तेजी से बदलते डिजिटल युग की चुनौतियों का सामना करने में सक्षम बना सकता है।

इन उच्च स्तरीय बैठकों के सफल समापन से सार्वजनिक क्षेत्र के लेखापरीक्षा में नवाचार, सहयोग और क्षमता निर्माण के प्रति INTOSAI की प्रतिबद्धता की पुष्टि होती है और यह अधिक पारदर्शी और जवाबदेह शासन परिदृश्य को आकार देने में भारत के बढ़ते नेतृत्व को दर्शाता है।

सीएजी ने राज्य वित्त सचिवों के सम्मेलन को संबोधित किया

भारत के सीएजी के तत्वावधान में आयोजित इस उच्च स्तरीय सम्मेलन में केंद्रीय वित्त मंत्रालय के वरिष्ठ अधिकारी, राज्य सरकारों के वित्त सचिव, भारतीय रिजर्व बैंक, लेखा महानिरीक्षक (सीजीए), रेलवे, दूरसंचार और रक्षा के लेखा सेवाओं के प्रमुखों के साथ-साथ राज्यों में सीएजी के लेखापरीक्षा और लेखा कार्यालयों का प्रतिनिधित्व करने वाले लेखा महालेखाकारों ने भाग लिया। देश भर से लगभग दो सौ प्रतिनिधियों ने इस पूरे दिन चलने वाले सम्मेलन में भाग लिया। सम्मेलन के दौरान चार महत्वपूर्ण तकनीकी सत्र आयोजित किए गए।

सीएजी श्री के संजय मूर्ति दिनांक 19-09-2025 को नई दिल्ली राज्य वित्त सचिवों के सम्मेलन को संबोधित करते हुए

सीएजी श्री के संजय मूर्ति, व्यय सचिव श्री वुमलुनमंग वुयलनम एवं उपनियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक श्री जयंत सिन्हा नई दिल्ली में दिनांक 19-09-2025 को आयोजित राज्य वित्त सचिवों के सम्मेलन के सम्मेलन में राज्य वित्त पर प्रकाशन को जारी करते हुए

परिचालनात्मक प्रभावशीलता बढ़ाने के लिए सीएजी और सीबीडीटी के मध्य समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए।

भारत के नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक कार्यालय ने दिनांक 23 सितंबर 2025 को केंद्रीय प्रत्यक्ष कर बोर्ड (सीबीडीटी) के साथ एक समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए। सीबीडीटी के अध्यक्ष श्री रवि अग्रवाल और उपनियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक (वाणिज्यिक एवं सीआरए) श्री ए.एम. बजाज ने नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक श्री के. संजय मूर्ति की उपस्थिति में इस एमओयू पर हस्ताक्षर किए। दोनों संगठन पारस्परिक हित के क्षेत्रों में क्षमता विकास और अनुसंधान गतिविधियों में शैक्षणिक, प्रशिक्षण और अनुसंधान सहयोग को बढ़ावा देने के लिए मिलकर काम करेंगे।

सीएजी ने इस बात पर जोर दिया कि समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर से दोनों विभागों के बीच व्यावसायिक सहयोग और क्षमता निर्माण प्रयासों में उल्लेखनीय वृद्धि होगी, विशेष रूप से डेटा-आधारित प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में। यह समझौता ज्ञापन दोनों संस्थानों के बीच कौशल अंतर को पाटने और पारस्परिक विकास को बढ़ावा देने के लिए एक रणनीतिक ढांचा प्रदान करेगा। श्री मूर्ति ने बताया कि यह साझेदारी प्रशिक्षण कार्यशालाओं, संयुक्त सेमिनारों, उन्नत डेटा विश्लेषण पर आधारित लेखापरीक्षा संबंधी जानकारियों को साझा करने और जीएसटी लेखापरीक्षा तथा अन्य क्षेत्रों/क्षेत्रों में दूरस्थ लेखापरीक्षा जैसी नवीन पद्धतियों के उपयोग सहित कई पहलों पर केंद्रित होगी।

नई दिल्ली में 23-09-2025 को समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर होने के दौरान सीएजी श्री के संजय मूर्ति, सीबीडीटी के अध्यक्ष श्री रवि अग्रवाल, उपनियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक (मानव संसाधन, विधिक एवं समन्वय) श्री के एस सुब्रमण्यम, उपनियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक (वाणिज्यिक एवं केंद्रीय राजस्व लेखापरीक्षा) श्री ए एम बजाज एवं अन्य अधिकारीगण

सीएजी ने कहा कि चूंकि दोनों संस्थानों के लक्ष्य एक समान हैं, इसलिए सी एंड एजी का कार्यालय सीबीडीटी द्वारा पहचाने गए सिस्टम को मजबूत करने में सीबीडीटी का समर्थन कर सकता है, क्योंकि सी एंड एजी के अधिकारियों को आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और मशीन लर्निंग जैसी उभरती प्रौद्योगिकियों में प्रभावी ढंग से प्रशिक्षित किया जा रहा है।

सीएजी ने विश्वास व्यक्त किया कि यह औपचारिक साझेदारी पारदर्शिता को बढ़ावा देगी, परिचालन प्रभावशीलता को बढ़ाएगी और लेखापरीक्षा संबंधी जानकारियों के आधार पर नियामक परिवर्तनों को आगे बढ़ाएगी, जिससे समग्र वित्तीय और शासन प्रणाली में सकारात्मक योगदान मिलेगा।

इसके अतिरिक्त, सीएजी ने कहा कि यह सहयोग कौशल और ज्ञान के पारस्परिक विकास में सहायक होगा, विशेष रूप से नए सरलीकृत आयकर अधिनियम जैसे परिवर्तनों के अनुकूलन में। श्री मूर्ति ने नए आयकर अधिनियम 2025 के मद्देनजर राजस्व लेखापरीक्षा अधिकारियों को सीबीडीटी से नियमों और विनियमों पर अद्यतन प्रशिक्षण प्राप्त करने के महत्व पर बल दिया। उन्होंने खरीद प्रक्रियाओं और आंतरिक नियंत्रण को मजबूत करने के लिए लेखापरीक्षा विशेषज्ञता साझा करने की भी पेशकश की।

सीबीडीटी के अध्यक्ष श्री रवि अग्रवाल ने कहा कि लेखापरीक्षा विभाग में उपलब्ध निरंतर संवाद और प्रशिक्षण अवसंरचना

नई दिल्ली में 23-09-2025 को सीबीडीटी के अध्यक्ष श्री रवि अग्रवाल को स्मृति चिन्ह भेंट करते हुए सीएजी श्री के संजय मूर्ति, साथ में उपनियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक (वाणिज्यिक एवं केंद्रीय राजस्व लेखापरीक्षा) श्री ए एम बजाज एवं सीबीडीटी के पीडीजी श्री प्रसेनजित सिंह

कर प्रशासन को और बेहतर बनाएगी तथा आयकर विभाग के कर अधिकारियों के प्रशिक्षण को गति प्रदान करेगी। उन्होंने आयकर अधिनियम 1961 से नई आयकर व्यवस्था 2025 में परिवर्तन के बारे में भी विस्तार से बताया। उन्होंने कहा कि पहले की दखलंदाजी वाली नीति से हटकर अब विवेकपूर्ण और गैर-दखलंदाजी वाली नीति अपनाई जा रही है।

हिन्दी पखवाड़ा समाचार

प्रत्येक वर्ष की तरह इस वर्ष भी दिनांक 30 सितंबर 2025 को नई दिल्ली स्थित भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक कार्यालय में हिन्दी पखवाड़े के समापन समारोह को भी धूमधाम से मनाया गया। राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय के निर्देशानुसार इस वर्ष हिंदी पखवाड़े के दौरान सभी कार्यक्रम/प्रतियोगिताएं दिनांक 16.9.2025 से दिनांक 24.9.2025 तक आयोजित की गई। कार्यालय में पूर्व में आयोजित हिंदी पखवाड़े की भांति इस वर्ष भी हिंदी पखवाड़े के दौरान आयोजत की जानी वाली प्रतियोगिताओं में विजेता प्रतिभागियों को पुरस्कार राशि (प्रथम ₹2500/-, द्वितीय ₹2000/- एवं तृतीय ₹1500/) एवं प्रशस्ति-पत्र प्रदान किए गए।

इन प्रतियोगिताओं को दो श्रेणियों, राजपत्रित एवं अराजपत्रित, में बांटा गया था । दोनों ही श्रेणियों में पुरस्कार विजेताओं की समान राशि रखी गई थी। प्रमुख प्रतियोगिताओं में हिन्दी निबंध, अनुवाद व वाद विवाद प्रतियोगिताएं सम्मिलित थीं। समापन समारोह से एक दिन पूर्व कार्यालय के पुस्तकालय में पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया जिसमें कार्यालय द्वारा इस वर्ष (2025-26) में क्रय की गई पुस्तकों का प्रदर्शन किया गया।

महानिदेशक (राजभाषा) महोदय ने दिनांक 29.09.2025 को हिंदी पुस्तकों की प्रदर्शनी का शुभारंभ किया। दिनांक 30.09.2025 को हिंदी पखवाड़े के पुरस्कार वितरण एवं समापन समारोह के अवसर पर आदरणीय भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक महोदय ने समारोह की अध्यक्षता की थी।

आदरणीय उपनियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक (मानव संसाधन, अंतरराष्ट्रीय संबंध, समन्वय एवं विधिक) महोदय द्वारा आदरणीय भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक महोदय को पौधा भेंट कर स्वागत किया। तत्पश्चात महानिदेशक राजभाषा महोदय द्वारा माननीय उपनियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक (मानव संसाधन, अंतरराष्ट्रीय संबंध, समन्वय एवं विधिक) महोदय को पौधा भेंट कर स्वागत किया।

हिंदी पखवाड़े के दौरान राजभाषा अनुभाग द्वारा आयोजत की जानी वाली प्रतियोगिताओं का संक्षिप्त विवरण तथा माननीय भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक महोदय द्वारा विजेताओं को प्रशस्ति-पत्रों का वितरण किया गया।

महानिदेशक (राजभाषा) महोदय के धन्यवाद ज्ञापन के बाद राष्ट्रगान के साथ हिन्दी पखवाड़े के समापन समारोह सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ।

नोटः- हिंदी पखवाड़े से संबंधित 'हिन्दी पखवाड़े की झलकियाँ' आगामी पृष्ठ 130 पर और 'आडिट दिवस की झलकियाँ' आगामी पृष्ठ 133 पर दिये गये हैं।

सी एंड एजी ने डोमेन विशेषज्ञता एवं पेशेवर दक्षता बढ़ाने के लिए दो केंद्रीकृत संवर्गों के गठन की घोषणा की।

भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक (सी एंड एजी) ने भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग (आईए एंड एडी) के अंतर्गत दो नए विशेषीकृत संवर्गों के सृजन के लिए सैद्धांतिक स्वीकृति प्रदान कर दी है: **केंद्रीय राजस्व लेखापरीक्षा (सीआरए) कैडर** एवं यह **केंद्रीय व्यय लेखापरीक्षा (सीईए) कैडर** । यह सुधार, जो कि **1 जनवरी 2026** से प्रभावी होगा। इसका उद्देश्य गहन पेशेवर विशेषज्ञता का निर्माण करना एवं केंद्र सरकार के वित्त के लेखापरीक्षा की गुणवत्ता में एवं सुधार करना है।

वर्तमान में, केंद्रीय प्राप्तियों एवं व्यय का लेखापरीक्षा नौ डीजीए/पीडीए (केंद्रीय) कार्यालयों (शाखा कार्यालयों सहित) एवं डीजीए (सीई), पीडीए (आई एंड सीए), डीजीएसीई (ई एंड एसडी) एवं डीजीए (एफ एंड सी) जैसे विशिष्ट कार्यालयों द्वारा किया जाता है, जबकि कैडर नियंत्रण कई राज्य सिविल लेखापरीक्षा कार्यालयों एवं स्वतंत्र सीसीए में वितरित है।

इस केंद्रीकरण से डीजी/पीडी (केंद्रीय कैडर) के अंतर्गत कैडर प्रबंधन का एकीकरण होगा, जिससे कई बिखरे हुए संवर्गों को दो विशिष्ट धाराओं में समेकित किया जा सकेगा। नए संवर्गों में वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी एवं सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी स्तरों पर 4,000 से अधिक लेखापरीक्षा पेशेवरों को समेकित किया जाएगा। सीआरए कैडर विशेषज्ञता को बढ़ावा देगा।

सरकारी राजस्व संग्रहों का लेखापरीक्षा करने वाला केंद्रीय लेखापरीक्षा विभाग, सरकारी व्यय का लेखापरीक्षा करने पर ध्यान केंद्रित करेगा। दोनों संवर्गों का प्रशासन केंद्रीय स्तर पर महानिदेशक/पीडी (केंद्रीय कैडर) द्वारा कैडर नियंत्रण प्राधिकरण के रूप में किया जाएगा, जो पूरे देश में लेखापरीक्षा कर्मियों के लिए एकसमान मानक एवं कुशल तैनाती सुनिश्चित करेगा।

राजस्व लेखापरीक्षा करने वाले कार्यालयों, जिनमें नई दिल्ली स्थित डीजीए (केंद्रीय प्राप्ति) एवं संबंधित मुख्यालय विभाग शामिल हैं, के कर्मचारियों को मिलाकर सीआरए कैडर का गठन किया जाएगा। सीईए कैडर में व्यय लेखापरीक्षा कार्यालयों, जिनमें वित्त एवं संचार लेखापरीक्षा कार्यालय, केंद्रीय एवं क्षेत्रीय प्रशिक्षण संस्थान एवं मुख्यालय के विभिन्न विभाग शामिल हैं, के पेशेवर शामिल होंगे। इस पुनर्गठन से केंद्रीय लेखापरीक्षाओं के लिए अधिक केंद्रीकृत एवं चुस्त ढांचा तैयार होगा।

कार्यान्वयन एवं **संक्रमण**

यह योजना 1 जनवरी 2026 से लागू होगी।

क्षेत्र विशेषज्ञता विकसित करने के लिए, दो अलग-अलग एसएएस परीक्षा स्ट्रीम शुरू की जाएंगी, एक सीआरए के लिए एवं दूसरी सीईए के लिए । मौजूदा वित्त एवं संचार लेखापरीक्षा स्ट्रीम को सीईए स्ट्रीम में मिला दिया जाएगा। इन संवर्गों में भविष्य की सभी नियुक्तियां इन विशेष परीक्षा स्ट्रीम के माध्यम से की जाएंगी, एवं नए संवर्गों में शामिल होने वाले अधिकारियों को निर्धारित अवधि के भीतर कैडर-विशिष्ट परीक्षा उत्तीर्ण करना अनिवार्य होगा।

सुधार के अंतर्गत , मुख्यालय में लगभग 75% कार्यात्मक पद सीईए कैडर से भरे जाएंगे, जिससे यह सुनिश्चित होगा कि नीति एवं रिपोर्टिंग कार्यों में प्रासंगिक क्षेत्र के अनुभव वाले पेशेवरों की नियुक्ति हो । शेष 25% पद परिचालन लचीलापन बनाए रखने के लिए प्रतिनियुक्ति पर उपलब्ध रहेंगे।

दोनों संवर्गों के अधिकारी अपने-अपने कार्यक्षेत्र में अखिल भारतीय स्थानांतरणों के लिए उत्तरदायी होंगे। संगठनात्मक आवश्यकताओं एवं कैरियर प्रगति संबंधी विचारों के आधार पर पारदर्शी एवं निष्पक्ष स्थानांतरणों की नीतियों को सुनिश्चित

करने के लिए एक स्थानांतरण बोर्ड का गठन किया जाएगा, जिसमें महानिदेशक/पीडी (केंद्रीय कैडर) पदेन सदस्य होंगे।

सार्वजनिक लेखापरीक्षा को सुदृढ़ बनाना

केंद्रीय राजस्व लेखापरीक्षा (CRA) एवं व्यय लेखापरीक्षा (CEA) संवर्गों का गठन, सूचना एवं व्यय लेखापरीक्षा (IA&AD) की संगठनात्मक संरचना में एक महत्वपूर्ण सुधार है। खंडित कैडर संरचनाओं को समेकित करके एवं CRA तथा CEA में क्षेत्र-आधारित विशेषज्ञता स्थापित करके, इस पहल का उद्देश्य राजस्व एवं व्यय लेखापरीक्षा में अधिक पेशेवर दक्षता प्राप्त करना, लेखापरीक्षा संसाधनों का अनुकूलन करना एवं केंद्र सरकार की वित्तीय निगरानी की गुणवत्ता एवं प्रभाव को बढ़ाना है।

यह सुधार कुशल, उत्तरदायी एवं पेशेवर शासन की दृष्टि के अनुरूप, सार्वजनिक लेखापरीक्षा में आधुनिकीकरण एवं उत्कृष्टता के प्रति संस्थागत प्रतिबद्धता को रेखांकित करता है।

इस केंद्रीकरण योजना के प्रमुख लाभ:

राजस्व एवं व्यय लेखापरीक्षाओं में गहन विशेषज्ञता प्राप्त करने के लिए सीआरए एवं सीईए के कैडर में विशेषज्ञता हासिल करना।

कैडर-नियंत्रण प्राधिकरणों की संख्या में कमी की गई है, जो पहले 16 (सीआरए) एवं 19 (सीईए) थी, अब प्रत्येक के लिए एक ही केंद्रीय प्राधिकरण होगा।

बड़े, एकीकृत संवर्गों के भीतर अखिल भारतीय स्थानांतरण दायित्व पारदर्शी घूर्णन को सक्षम बनाता है एवं संगठनात्मक आवश्यकताओं को पूरा करते हुए गृह क्षेत्रों के निकट आवधिक पोस्टिंग की संभावना को बढ़ाता है।

प्रशिक्षण संस्थानों एवं मुख्यालयों के लिए केंद्रीकृत कैडर होने से प्रतिनियुक्ति पर निर्भरता कम हो जाती है।

केंद्रीकृत कैडर होने से प्रशासनिक ओवरहेड में कमी आती है। यह कैडर प्रबंधन को भी सक्षम बनाता है एवं साथ ही एकसमान एवं सुसंगत कार्यप्रणाली को अपनाने में भी सहायक होता है।

केंद्रीकृत कैडर प्रबंधन, लेखापरीक्षा प्राथमिकताओं में बदलाव के आधार पर त्वरित एवं लचीली मानव संसाधन तैनाती की सुविधा प्रदान करता है।

सीएजी कार्यालय और डिजिटल इंडिया भाषिणी डिवीजन (डीआईबीडी) के मध्य समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए।

भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक कार्यालय और भारत सरकार के इलेक्ट्रॉनिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय के डिजिटल इंडिया निगम के डिजिटल इंडिया भाषिणी प्रभाग (डीआईबीडी) के बीच आज संचार को सुगम बनाने के उद्देश्य से एक बहुआयामी (पाठ, संख्याएँ, आवाज, चित्र और वीडियो) बहुभाषी अनुवाद एआई प्लेटफॉर्म, भाषिणी के कार्यान्वयन, प्रशासन और प्रबंधन के लिए एक समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए गए।

सीएजी के श्री भवानी शंकर, महानिदेशक (राजभाषा) एवं श्री अमिताभ नाग, मुख्य कार्यकारी अधिकारी डीआईबीडी के मध्य समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर हुए

भाषिणी एआई प्लेटफॉर्म सुरक्षित क्लाउड वातावरण में पाठ, संख्या, आवाज, चित्र और वीडियो के अनुवाद की सुविधा प्रदान करता है। इसे 200 से अधिक सी एंड एजी कार्यालयों में तैनात किया जाएगा। भाषिणी रिपोर्ट तैयार करने में एआई के उपयोग का पता लगाने और कार्यालयों में साहित्यिक चोरी की पहचान करने के लिए एआई सेवाएं भी शुरू करेगा। यह आईएएडी की रिपोर्ट तैयार करने की प्रक्रिया के विभिन्न चरणों में रिपोर्ट, सर्वेक्षण और साक्ष्य के अनुवाद के लिए एक कार्यप्रणाली प्रणाली विकसित करेगा, और सी एंड एजी के विभिन्न कार्यालयों के लिए भाषिणी ऐप द्वारा उत्पादित अनुवादित, प्रतिलेखित, लिप्यंतरित और ट्रांस-मोडल संचार की जांच करेगा।

दिनांक 10-11-2025 को समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर के दौरान समूह चित्र

यह बात जोर देकर कहना महत्वपूर्ण है कि भाषिणी प्लेटफॉर्म पर मौजूद बहुभाषी, बहुआयामी एआई-सक्षम संचार एप्लिकेशन संचार को आसान बनाएगा और संसदीय समितियों, सरकारी कर्मचारियों के साथ पात्रता संबंधी कार्यों, शिकायत निवारण, हितधारकों और स्थानीय मीडिया के साथ आवश्यकता पड़ने पर जुड़ने के लिए अत्यंत उपयोगी होगा।

समझौता ज्ञापन पर सीएजी के पक्ष में श्री भवानी शंकर, महानिदेशक (राजभाषा) एवं डीआईबीडी के मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री अमिताभ नाग ने हस्ताक्षर किए।

सीएजी ने वैश्विक क्षमता निर्माण और सहयोग को मजबूत करने के लिए "डिजिटल सार्वजनिक अवसंरचना का लेखापरीक्षा" विषय पर अंतर्राष्ट्रीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्घाटन किया।

"डिजिटल सार्वजनिक अवसंरचना की लेखापरीक्षा" विषय पर 166वें अंतर्राष्ट्रीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का 12.11.2025 को आयोजन किया गया । भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक ने इसका उद्घाटन किया। यह आयोजन विदेश मंत्रालय के भारतीय तकनीकी और आर्थिक सहयोग (आईटीईसी) कार्यक्रम के तत्वावधान में आईसीआईएसए द्वारा किया गया ।

श्री के. संजय मूर्ति ने अपने उद्घाटन भाषण में आधुनिक शासन और सेवा वितरण की नींव के रूप में डिजिटल सार्वजनिक अवसंरचना के बढ़ते महत्व पर जोर दिया। उन्होंने इस बात पर प्रकाश डाला कि डिजिटल पहचान प्लेटफॉर्म, भुगतान प्रणाली और डेटा एक्सचेंज जैसी प्रौद्योगिकियां किस प्रकार व्यवसायों और नागरिकों के सरकारों के साथ जुड़ने के तरीके को बदल रही हैं।

एशिया, अफ्रीका, यूरोप और दक्षिण अमेरिका के सर्वोच्च लेखापरीक्षा संस्थानों (एसएआई) के प्रतिष्ठित गणमान्य व्यक्तियों और प्रतिनिधियों ने उद्घाटन समारोह में भाग लिया। इससे पहले नई दिल्ली में आयोजित 16वीं एएसओएसएआई सभा की चर्चाओं के बाद, यह पहल डिजिटल सार्वजनिक अवसंरचना के लेखापरीक्षा में अंतरराष्ट्रीय सहयोग और क्षमता निर्माण की दिशा में एक महत्वपूर्ण प्रगति का प्रतिनिधित्व करती है। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में 26 देशों के 28 लेखापरीक्षा पेशेवरों ने भाग लिया ।

सीएजी ने कहा कि भारत के सफल डिजिटल प्रयासों, जैसे आधार, यूनिफाइड पेमेंट्स इंटरफेस (यूपीआई) और डिजिलॉकर, ने कागज रहित, नकदी रहित और उपस्थिति रहित सेवाएं प्रदान करना संभव बनाया है, जिससे समावेशी और विस्तार योग्य डिजिटल नवाचार का मानक स्थापित हुआ है। उन्होंने कहा, "ये पहलें दर्शाती हैं कि कैसे खुले और अंतरसंचालनीय पारिस्थितिकी तंत्र पारदर्शिता, पहुंच और जनविश्वास को बेहतर बना सकते हैं, साथ ही नागरिकों को ठोस लाभ भी पहुंचा सकते हैं।"

श्री मूर्ति ने इस बात पर भी जोर दिया कि डिजिटल परिवर्तन के साथ-साथ साइबर सुरक्षा, जवाबदेही, डेटा की गोपनीयता और समान पहुंच सुनिश्चित करने में सार्वजनिक लेखापरीक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। उन्होंने कहा, "डीपीआई की लेखापरीक्षा का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि प्रौद्योगिकी सुशासन के मूल मूल्यों - पारदर्शिता, समावेशिता और विश्वास - को बनाए रखे - यह केवल प्रणालियों और नियंत्रणों का मूल्यांकन करने तक सीमित नहीं है।"

समावेशी डिजिटल इंफ्रास्ट्रक्चर (डीपीआई) की वैश्विक प्रवृत्ति को ध्यान में रखते हुए, सीएजी ने कई देशों द्वारा एमओएसआईपी-आधारित डिजिटल आईडी सिस्टम लागू करने, केन्या, नाइजीरिया और ब्राजील द्वारा अंतरसंचालनीय सेवा और भुगतान प्लेटफॉर्म बनाने के कार्यों को भी सराहा। इसके अतिरिक्त, उन्होंने डिजिटल पब्लिक इंफ्रास्ट्रक्चर एलायंस और इंडिया स्टैक ग्लोबल के माध्यम से वैश्विक सहयोग में भारत के योगदान पर भी बल दिया।

इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में संयुक्त राष्ट्र के सार्वभौमिक डिजिटल सूचना सुरक्षा ढांचे और भारत के डिजिटल शासन मॉडल जैसे वैश्विक ढांचे और प्रकरण अध्ययन (केस स्टडी) सम्मिलित थे । सार्वजनिक और वाणिज्यिक क्षेत्रों के विशेषज्ञों के साथ एक पैनल चर्चा में डिजिटल सूचना शासन, जवाबदेही और समावेशिता के प्रमुख मुद्दों पर चर्चा की गई ।

दिनांक 12-11-2025 को आईसीआईएसए में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय प्रशिक्षण कार्यक्रम में वैश्विक प्रतिभागियों की समूह तस्वीर

इसके अतिरिक्त, प्रतिभागी बेंगलुरु के क्षेत्र भ्रमण पर गए, जहां वे एमओएसआईपी और सेंटर फॉर डिजिटल पब्लिक इंफ्रास्ट्रक्चर (सीडीपीआई) के साथ जुड़े और उन्होने समावेशी, सुरक्षित और खुले डिजिटल सिस्टम बनाने में भारत के नेतृत्व के बारे में प्रत्यक्ष रूप से जानकारी हासिल की ।

भारत के सीएजी ने इस बात की पुष्टि की कि इस प्रकार का अंतर्राष्ट्रीय सहयोग सार्वजनिक लेखापरीक्षकों के वैश्विक समुदाय को बेहतर बनाएगा और प्रतिभागियों को अपने देश के अनुभवों और विचारों का योगदान देने के लिए प्रोत्साहित करेगा। भारत ने आईटी ऑडिट पर INTOSAI कार्य समूह (WGITA) के अध्यक्ष के रूप में डिजिटल ऑडिट में ज्ञान के आदान-प्रदान, अनुसंधान और क्षमता निर्माण को बढ़ावा देने के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को दोहराया।

कार्यक्रम का समापन भारत के सीएजी के सामूहिक कार्रवाई के आह्वान के साथ हुआ: 'आइए हम सब मिलकर यह सुनिश्चित करें कि हम जिस डिजिटल भविष्य का निर्माण कर रहे हैं वह न केवल नवोन्मेषी और कुशल हो, बल्कि प्रत्येक नागरिक के लिए विश्वसनीय, समावेशी और जवाबदेह भी हो।'

सीएजी-आईसीएससीएसआर ने लेखापरीक्षा निष्कर्षों, राजकोषीय शासन और जवाबदेही की सार्वजनिक समझ पर केंद्रित संगोष्ठी श्रृंखला का शुभारंभ किया।

भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक (सीएजी) कार्यालय ने भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद (आईसीएससीएसआर) के साथ साझेदारी में नई दिल्ली में 11-11-2025 को 'सीएजी-आईसीएससी संगोष्ठी श्रृंखला' का शुभारंभ किया, जो लेखापरीक्षा निष्कर्षों, राजकोषीय प्रशासन और जवाबदेही के बारे में जनता की समझ को बढ़ाने के उद्देश्य से एक वर्ष तक चलने वाली राष्ट्रीय पहल है।

इस कार्यक्रम में सीएजी और आईसीएसएसआर के वरिष्ठ अधिकारी, प्रख्यात शिक्षाविद, नीति विशेषज्ञ और शोधकर्ता एक साथ आए और दिल्ली में 'राज्य वित्त' और 'स्वास्थ्य क्षेत्र का लेखापरीक्षा' जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर विचार-विमर्श किया।

अपने स्वागत भाषण में, आईसीएसएसआर के सदस्य सचिव, प्रोफेसर धनंजय सिंह ने सीएजी की लेखापरीक्षा रिपोर्टों के अपार महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने इस बात पर बल दिया कि इस सहयोगात्मक श्रृंखला का उद्देश्य अकादमिक समुदाय के लिए इन रिपोर्टों को सुलभ बनाकर इस महत्व को उजागर करना है, जिससे सामाजिक विज्ञान अनुसंधान और सूचित सार्वजनिक चर्चा के लिए एक ठोस साक्ष्य आधार तैयार हो सके।

चर्चा का शुभारंभ भारत के सीएजी कार्यालय के निदेशक श्री राहुल कुमार द्वारा दिल्ली राज्य के वित्त पर एक प्रस्तुति के साथ हुआ। सर्वोच्च लेखापरीक्षा संस्था की डेटा लोकतंत्रीकरण पहलों पर भी चर्चा हुई। दिल्ली स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स के निदेशक और आईसीएसएसआर के परिषद सदस्य प्रोफेसर राम सिंह के विशेष संबोधन से सत्र और भी समृद्ध हुआ। प्रोफेसर सिंह ने व्यापक वृहद आर्थिक ढांचे के संदर्भ में सार्वजनिक वित्त को प्रस्तुत करते हुए विकासात्मक परिणामों पर राज्य स्तरीय राजकोषीय स्वास्थ्य के प्रभावों पर प्रकाश डाला। इसके बाद हुई चर्चा में राजकोषीय अनुशासन को मजबूत करने, व्यय की गुणवत्ता में सुधार करने और सार्वजनिक वित्तीय प्रबंधन में अधिक पारदर्शिता के लिए प्रौद्योगिकी का लाभ उठाने के तरीकों पर विचार-विमर्श किया गया।

भारत के सीएजी कार्यालय की प्रधान निदेशक सुश्री स्वाति पांडे ने दिल्ली में स्वास्थ्य क्षेत्र के हालिया ऑडिट के निष्कर्षों पर प्रस्तुति दी। उन्होंने सार्वजनिक स्वास्थ्य अवसंरचना में प्रणालीगत मुद्दों, सेवा वितरण में दक्षता की कमियों और स्वास्थ्य देखभाल योजनाओं के प्रबंधन में चुनौतियों पर प्रकाश डाला। जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय की प्रोफेसर इंद्राणी आर. चौधरी ने सार्वजनिक स्वास्थ्य व्यय का आर्थिक विश्लेषण प्रस्तुत किया, जिसमें इसके प्रभाव और प्रभावशीलता की जांच की गई।

अशोका विश्वविद्यालय के विकास अर्थशास्त्री ए.के. शिव कुमार ने एक सामाजिक-आर्थिक परिप्रेक्ष्य प्रस्तुत किया, जिसमें स्वास्थ्य अवसंरचना पर लेखापरीक्षा के निष्कर्षों को सामुदायिक कल्याण और समानता पर वास्तविक दुनिया के प्रभावों से जोड़ा गया।

यह संगोष्ठी नवंबर 2025 से नवंबर 2026 के बीच 28 राज्यों और 3 केंद्र शासित प्रदेशों में आयोजित होने वाली 31 ऐसी व्यापक आयोजनों की श्रृंखला की शुरुआत है। प्रत्येक आयोजन का समन्वय संबंधित राज्य के महालेखाकार कार्यालय और आईसीएसएसआर द्वारा संयुक्त रूप से किया जाएगा, जिसमें राज्य-विशिष्ट लेखापरीक्षा रिपोर्टों और स्थानीय प्रासंगिकता के विषयों पर ध्यान केंद्रित किया जाएगा।

इस सहयोगात्मक प्रयास के अंतर्गत, एक राष्ट्रीय शोध लेख प्रतियोगिता की परिकल्पना भी की गई है। इस प्रतियोगिता का उद्देश्य छात्रों, शोधकर्ताओं और युवा विद्वानों को सीएजी की लेखापरीक्षा रिपोर्टों के विश्लेषण में शामिल करना है, जिससे राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) के अनुरूप शोध-उन्मुख शिक्षा को बढ़ावा मिल सके। सर्वश्रेष्ठ लेखों को पुरस्कृत किया जाएगा और देश भर से सर्वश्रेष्ठ लेखों का एक संकलन प्रकाशित किया जाएगा।

सीएजी-आईसीएससीएसआर साझेदारी ज्ञान साझा करने के लिए एक स्थायी मंच बनाने, जवाबदेही की संस्कृति को बढ़ावा देने और यह सुनिश्चित करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है कि सार्वजनिक लेखापरीक्षा से प्राप्त अंतर्दृष्टि सीधे सूचित नीति निर्माण और अधिक सक्रिय शिक्षाविदों और नागरिकों में योगदान दे।

भारत के उपराष्ट्रपति ने आज सीएजी के ऑडिट दिवस 2025 का उद्घाटन किया।

भारत के सीएजी ने परिवर्तन के चार स्तंभों की रूपरेखा तैयार की है - हितधारकों की सहभागिता, डिजिटल परिवर्तन, विकसित भारत 2047 के साथ संरेखण और क्षमता निर्माण।

"लेखापरीक्षा सुधार, दूरदर्शिता और नवाचार का एक प्रगतिशील साधन है" - उपराष्ट्रपति

भारत के माननीय उपराष्ट्रपति श्री सीपी राधाकृष्णन ने आज यहां लेखापरीक्षा दिवस समारोह का उद्घाटन किया। लेखापरीक्षा दिवस 166वें वर्ष की शुरुआत का प्रतीक है।ांयह वर्ष भारत के नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक (एलिमेंट) संस्था की स्थापना का वर्ष है और सार्वजनिक संसाधनों के प्रबंधन में पारदर्शिता, जवाबदेही और सुशासन को बढ़ावा देने में इसकी भूमिका का जश्न मनाता है।

इस अवसर पर बोलते हुए, माननीय उपराष्ट्रपति ने सुशासन को बढ़ावा देने और कार्यपालिका की जवाबदेही को मजबूत करने के लिए लेखापरीक्षा प्रक्रियाओं में परिवर्तन लाने में संस्था द्वारा की गई महत्वपूर्ण प्रगति की सराहना की। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि लेखापरीक्षा अब केवल अतीत की समीक्षा करने वाली प्रक्रिया नहीं है, बल्कि सुधार, दूरदर्शिता और नवाचार का एक भविष्योन्मुखी साधन है। माननीय उपराष्ट्रपति ने आईआईटी और आईआईएम जैसे प्रतिष्ठित शैक्षणिक और व्यावसायिक संस्थानों के साथ संस्थागत सहयोग के माध्यम से क्षमता निर्माण में सीएजी संगठन की हालिया पहलों की प्रशंसा की। उन्होंने आर्थिक, सामाजिक, तकनीकी, पर्यावरणीय और संस्थागत क्षेत्रों में समग्र विकास के सरकारी प्रयासों में एक विश्वसनीय भागीदार के रूप में सीएजी की भूमिका पर विश्वास व्यक्त किया, जो राष्ट्र की प्रगति का मार्ग प्रशस्त करता है।Viksit Bharat 2047.

माननीय उपराष्ट्रपति ने एशियाई सर्वोच्च लेखापरीक्षा संस्थानों के संगठन (एएसओएसएआई) और अंतर्राष्ट्रीय सर्वोच्च लेखापरीक्षा संस्थानों के संगठन (आईएनटीओएसएआई) की कई समितियों के अध्यक्ष के रूप में अंतर्राष्ट्रीय लेखापरीक्षा क्षेत्र में सीएजी की उपलब्धियों की प्रशंसा की, और नैतिक, पारदर्शी और प्रौद्योगिकी-सक्षम लेखापरीक्षा के लिए वैश्विक मानदंड स्थापित करने में भारत के सर्वोच्च लेखापरीक्षा संस्थान के योगदान को स्वीकार किया।

अपने संबोधन में, भारत के मुख्य एवं महाधिवक्ता श्री के. संजय मूर्ति ने निरंतर सुधार, तकनीकी नवाचार और ज्ञान साझाकरण के माध्यम से सार्वजनिक जवाबदेही को मजबूत करने के लिए संस्था की प्रतिबद्धता की पुष्टि की। उन्होंने चार मूलभूत स्तंभों की रूपरेखा प्रस्तुत की।

संस्था के चल रहे परिवर्तन का मार्गदर्शन करना: हितधारक सहभागिता, डिजिटल परिवर्तन, विकसित भारत 2047 के साथ संरेखण और क्षमता निर्माण।

हितधारक सहभागिता के अंतर्गत, श्री के संजय मूर्ति ने इस बात पर प्रकाश डाला कि संस्था पूर्व-लेखापरीक्षा सहभागिता सहित साझेदारों के साथ निरंतर संवाद के माध्यम से सहयोग को मजबूत कर रही है। सार्वजनिक वित्त संबंधी आंकड़े अब सुलभ प्रारूपों में उपलब्ध कराए जा रहे हैं, और विद्त, शहरी विकास और पंचायती राज जैसे प्रमुख क्षेत्रों तक

पहुंच का विस्तार किया जाएगा। सीएजी ने यह भी बताया कि एकीकृत वित्तीय प्रबंधन प्रणाली (आईएफएमएस) जैसे क्षैतिज लेखापरीक्षाओं से प्राप्त अच्छी प्रथाओं और सुधार के क्षेत्रों को उजागर करते हुए प्रमुख निष्कर्ष और सिफारिशें प्रबंधन पत्रों के माध्यम से भारत सरकार के साथ साझा की जा रही हैं। सीएजी ने शिक्षाविदों और शोधकर्ताओं तक पहुंचने के लिए संगोष्ठियों के आयोजन में आईसीएसएसआर के साथ साझेदारी पर प्रकाश डाला।

डिजिटल ट्रांसफॉर्मेशन के अंतर्गत, सीएजी ने रिमोट और हाइब्रिड ऑडिट की ओर एक महत्वपूर्ण बदलाव पर प्रकाश डाला, जिसमें फील्ड वर्क से पहले ऑडिट किए जाने वाले संस्थानों के डेटाबेस की अनिवार्य डेस्क समीक्षा शामिल है ताकि अनियमितताओं की पहचान की जा सके और लक्षित ऑडिट सुनिश्चित किया जा सके। उन्होंने सीएजी-कनेक्ट पोर्टल के शुभारंभ की घोषणा की, जो लगभग 10 लाख ऑडिट किए जाने वाले संस्थानों को ऑडिट कार्यालयों से वास्तविक समय में जोड़ने वाला एक सुगम डिजिटल प्लेटफॉर्म है। उन्होंने सीएजी-एलएलएम के विकास के बारे में भी जानकारी दी, जो स्वदेशी रूप से निर्मित एक लार्ज लैंग्वेज मॉडल है जिसका उद्देश्य संस्थागत ज्ञान का लाभ उठाना और एआई-संचालित ऑडिट विश्लेषण को सक्षम बनाना है।

विकसित भारत 2047 के साथ तालमेल पर बोलते हुए, श्री के संजय मूर्ति ने कहा कि संगठन ने विकसित भारत के राष्ट्रीय मिशन के सहायक के रूप में कार्य करने के लिए अपनी लेखापरीक्षा प्राथमिकताओं को पुनर्व्यवस्थित किया है, जिसमें शहरी स्थानीय सरकारों के प्रदर्शन का आकलन करने और 100 प्रमुख शहरों में जीवन की सुगमता का मूल्यांकन करने पर ध्यान केंद्रित किया गया है। इसके बाद, लघु एवं मध्यम उद्यमों (एमएसएमई) और स्टार्टअप पर विशेष ध्यान देते हुए, व्यापार करने में सुगमता पर लेखापरीक्षा की जाएगी, ताकि प्रक्रिया एकीकरण, शिकायत निवारण और उपयोगकर्ता अनुभव जैसे महत्वपूर्ण सहायक कारकों का आकलन किया जा सके और यह सुनिश्चित किया जा सके कि सुधारों से उद्यमियों को ठोस लाभ प्राप्त हों।

उपराष्ट्रपति श्री सी पी राधाकृष्णन, 16 नवंबर, 2025 को नई दिल्ली में सीएजी मुख्यालय के ऑडिट दिवस का उदघाटन करते हुए

क्षमता निर्माण के स्तंभ पर जोर देते हुए, सीएजी ने आईटी ऑडिट के लिए डेटा साइंस, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और साइबर सुरक्षा में अत्याधुनिक प्रशिक्षण पहलों के माध्यम से भविष्य के लिए तैयार कार्यबल के विकास पर बल दिया। उन्होंने एआई चैंपियंस के रूप में युवा अधिकारियों के एक समर्पित समूह के गठन के बारे में जानकारी दी, जो नवीन, एआई-आधारित ऑडिट परियोजनाओं का नेतृत्व कर रहे हैं। संगठन के 40,000 से अधिक अधिकारियों और कर्मचारियों के कार्यबल की शक्ति को पहचानते हुए, उन्होंने कहा कि उनका व्यावसायिकता, समर्पण और रचनात्मकता संस्था की सबसे बड़ी संपत्ति बनी हुई है।

सीएजी श्री के संजय मूर्ति 16 नवंबर, 2025 को नई दिल्ली में ऑडिट दिवस के अवसर पर अपने उद्गार व्यक्त करते हुए

श्री मूर्ति ने अपने संबोधन का समापन सीएजी के इस संकल्प की पुष्टि करते हुए किया कि वह केवल अतीत के रिकॉर्ड की जांच करने वाला संस्थान नहीं होगा, बल्कि शासन में एक दूरदर्शी भागीदार होगा।

ऑडिट दिवस समारोह में कई कार्यक्रम आयोजित किए गए, जिनमें सीएजी के नवाचार और उत्कृष्टता पुरस्कारों का वितरण, ऑडिटिंग के लिए एआई तकनीक में हाल ही में शुरू की गई नई पहलों पर तकनीकी प्रस्तुतियाँ और ऑडिटिंग में सुधार लाने के उद्देश्य से नए सॉफ़्टवेयर का शुभारंभ शामिल था।

सीएजी श्री के संजय मूर्ति , 16 नवंबर, 2025 को नई दिल्ली में ऑडिट दिवस के अवसर पर उपराष्ट्रपति श्री सीपी राधाकृष्णन को स्मृति चिन्ह भेंट करते हुए । साथ में उपनियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक गण सर्वश्री सुबीर मलिक, जयंत सिन्हा एवं के एस सुब्रमण्यम

हितधारकों के साथ संवाद स्थापित करना और संगठन के भीतर सीखने की क्षमताओं को बढ़ाना। सीएजी द्वारा मायभारत पोर्टल के माध्यम से आयोजित राष्ट्रीय ऑनलाइन निबंध लेखन प्रतियोगिता के विजेताओं को इस अवसर पर सम्मानित किया गया। श्री भास्कर कुमार और मास्टर अद्वैत सजीव को प्रतियोगिता की हिंदी और अंग्रेजी श्रेणियों में प्रथम पुरस्कार से नवाजा गया।

पांच एआई चैंपियंस ने अपने द्वारा शुरू की गई पांच पायलट एआई परियोजनाओं का प्रदर्शन करके दिखाया कि कैसे एआई का उपयोग परिचालन दक्षता और लेखापरीक्षा एवं लेखांकन कार्यों में अधिक प्रभाव डालने के लिए किया जा सकता है।

सीएजी ने 32वें लेखा सामान्य सम्मेलन का समापन किया, जिसमें उत्कृष्टता के नए केंद्र और उन्नत डेटा केंद्रित लेखापरीक्षाओं के साथ एक परिवर्तनकारी मार्ग प्रशस्त किया गया।

सीएजी श्री के संजय मूर्ति ने 18.11.25 को नई दिल्ली में आयोजित महालेखाकारों के सम्मेलन को संबोधित किया।

भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक (सीएजी) कार्यालय ने आज नई दिल्ली में अपने 32वें महालेखाकार सम्मेलन का समापन किया। दो दिवसीय इस उच्च स्तरीय सम्मेलन में भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग (आईए एंड एडी) के

सभी वरिष्ठ प्रबंधन अधिकारी एक साथ आए, जिनमें देश भर से 100 से अधिक महालेखाकार और विभागाध्यक्ष शामिल थे।

"परिवर्तन का नेतृत्व करना और मूल्यों की पुष्टि करना: विश्वास, नवाचार, स्थिरता, जवाबदेही" विषय पर आयोजित सम्मेलन ने भारत में सार्वजनिक लेखापरीक्षा के लिए एक निर्णायक, भविष्योन्मुखी एजेंडा निर्धारित किया।

के. श्रीनाथ रेड्डी, जिन्होंने 'भारत में सार्वजनिक स्वास्थ्य' विषय पर मुख्य भाषण दिया, और श्री सौरभ के. तिवारी कैबिनेट सचिवालय के अतिरिक्त सचिव ने 'प्रत्यक्ष लाभ हस्तांतरण' पर एक सत्र का नेतृत्व किया, जो जटिल शासन संबंधी चुनौतियों से निपटने के लिए संस्था के सहयोगात्मक दृष्टिकोण को दर्शाता है। अपने समापन भाषण में, भारत के सीएजी श्री के. संजय मूर्ति ने संस्था के लिए एक दृष्टिकोण प्रस्तुत किया, जिसमें संस्था को डेटा-संचालित, तकनीकी रूप से उन्नत और दूरदर्शी भागीदार के रूप में विकसित भारत 2047 की दिशा में राष्ट्र की यात्रा में योगदान देने की बात कही गई।

संस्थागत सुदृढ़ीकरण: हैदराबाद में उत्कृष्टता का एक नया केंद्र

संस्था की भावी रणनीति का एक प्रमुख आधार विशेषज्ञता पर नए सिरे से ध्यान केंद्रित करना है। सम्मेलन में एक महत्वपूर्ण घोषणा हैदराबाद में वित्तीय लेखापरीक्षा के लिए एक उत्कृष्टता केंद्र की स्थापना थी। इस राष्ट्रीय केंद्र को वित्तीय लेखापरीक्षा के क्षेत्र में नवाचार, अनुसंधान और व्यावसायिक विकास में अग्रणी बनाने की परिकल्पना की गई है।

यह केंद्र वैश्विक सर्वोत्तम प्रथाओं के लिए एक इनक्यूबेटर के रूप में कार्य करेगा, उन्नत कौशल को बढ़ावा देगा और विभाग भर में उच्च गुणवत्ता वाली वित्तीय लेखापरीक्षा पद्धतियों के मानकीकरण को गति प्रदान करेगा। यह महत्वपूर्ण संस्थागत निवेश राजकोषीय विश्वास और पारदर्शिता की नींव को मजबूत करने की दिशा में एक प्रत्यक्ष प्रतिबद्धता है। एक समर्पित केंद्र बनाकरउत्कृष्टता का केंद्र, सीएजी संस्था सर्वोच्च लेखापरीक्षा संस्था के रूप में अपनी भूमिका को मजबूत कर रही है, यह सुनिश्चित करते हुए कि इसकी कार्यप्रणाली न केवल इस क्षेत्र में उत्कृष्टता के लिए वैश्विक मानकों को पूरा करती है बल्कि उन्हें स्थापित भी करती है।

शोध और अकादमिक सहयोग को बढ़ावा देने की दिशा में एक कदम बढ़ाते हुए, सम्मेलन ने भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद (ICSSR) के सहयोग से कार्यान्वित की जाने वाली एक नई शोध पुरस्कार योजना का भी अनावरण किया। इस रणनीतिक पहल का उद्देश्य सार्वजनिक वित्त और जवाबदेही के क्षेत्र में उच्च गुणवत्ता वाले शोध को प्रोत्साहित करना है। ये पुरस्कार चार प्रमुख विषयगत क्षेत्रों पर केंद्रित होंगे, जिनका उद्देश्य व्यावहारिक अंतर्दृष्टि उत्पन्न करना और सार्वजनिक लेखापरीक्षा के सैद्धांतिक आधार को मजबूत करना है।

सीएजी श्री के संजय मूर्ति 18-11-2025 को नई दिल्ली में महालेखाकार सम्मेलन को संबोधित करते हुए

डेटा आधारित ऑडिट और कृत्रिम बुद्धिमत्ता के माध्यम से ऑडिट की पुनर्कल्पना करना

इस सम्मेलन ने डेटा और कृत्रिम बुद्धिमत्ता की पूरी क्षमता का उपयोग करके लेखापरीक्षा पद्धतियों में क्रांतिकारी बदलाव लाने की दिशा में एक रणनीतिक मोड़ का संकेत दिया। नेतृत्व ने लेखापरीक्षा और लेखा कार्यों के बीच की बाधाओं को दूर करने का स्पष्ट निर्देश जारी किया, और विभाग के लेखा कार्यालयों को अमूल्य वित्तीय डेटा का खजाना माना। इसका

उद्देश्य लेखापरीक्षा और लेखा के बीच की सीमा को एक निर्बाध सेतु में बदलना है, जिससे लेखापरीक्षा टीमें वाउचर, प्रतिबंध और चालान सहित बारीक डेटा का व्यवस्थित रूप से उपयोग कर सकें।

सम्मेलन में स्वदेशी रूप से निर्मित लार्ज लैंग्वेज मॉडल (सीएजी-एलएलएम) के विकास और ऑडिटिंग में एआई के उपयोग से जुड़े अग्रणी परियोजनाओं पर भी प्रकाश डाला गया। यह केवल स्वचालन के बारे में नहीं है; यह भविष्यसूचक अंतर्दृष्टि प्राप्त करने, विसंगतियों की पहचान करने और अभूतपूर्व सटीकता के साथ जोखिम मूल्यांकन करने के लिए एआई का लाभ उठाने के बारे में है। गहन डेटा तालमेल को एआई-संचालित विश्लेषण के साथ मिलाकर, सीएजी अधिक प्रभावी, अधिक केंद्रित और साक्ष्य-आधारित ऑडिट करने के लिए खुद को तैयार कर रहा है।

परिवर्तन का नेतृत्व करना, मूल्यों की पुष्टि करना: राष्ट्रीय प्राथमिकताओं के प्रति एक नवीकृत प्रतिबद्धता

संस्थागत उत्कृष्टता और तकनीकी नवाचार के ये परिवर्तनकारी स्तंभ सम्मेलन के समग्र विषय में सहजता से समाहित हैं। डेटा और एआई का गहन अध्ययन नवाचार की दूरदर्शी भावना को दर्शाता है, जबकि लेखापरीक्षाओं में पर्यावरण, सामाजिक और शासन (ईएसजी) मानदंडों को एकीकृत करने पर नए सिरे से ध्यान केंद्रित करना स्थिरता के प्रति प्रतिबद्धता को रेखांकित करता है।

ये पहलें अपने आप में कोई लक्ष्य नहीं हैं, बल्कि इनका उद्देश्य सुशासन के प्रमुख प्रवर्तक और राष्ट्रीय प्राथमिकताओं को प्राप्त करने में एक विश्वसनीय भागीदार के रूप में संस्था की भूमिका को मजबूत करना है। भविष्य के लेखापरीक्षाओं में जीवन की सुगमता, व्यापार करने की सुगमता और मूलभूत साक्षरता एवं संख्या ज्ञान (एफएलएन) जैसे नागरिक-केंद्रित क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित किया जाएगा, ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि सार्वजनिक नीतियों के लाभ उनके लक्षित लाभार्थियों तक पहुंचें। इसके अतिरिक्त, विभाग स्वायत्त निकायों की क्षमता निर्माण और लेखापरीक्षा की निगरानी को बढ़ाने के लिए एक व्यापक मूल्यांकन मैट्रिक्स विकसित करने के प्रयासों का नेतृत्व कर रहा है।

निष्कर्षतः, 32वां लेखा महालेखाकार सम्मेलन एक निर्णायक क्षण है। विश्वास, जवाबदेही और सार्वजनिक सेवा के मूल्यों पर आधारित यह संस्था अब डेटा-संचालित प्रौद्योगिकियों, एआई-सक्षम अंतर्दृष्टियों और विशिष्ट दक्षताओं में साहसिक प्रगति कर रही है। नागरिकों के हित में महत्वपूर्ण परिणामों पर विशेष ध्यान देते हुए, सीएजी एक गतिशील और भविष्य के लिए तैयार लेखापरीक्षा संस्था होने की अपनी प्रतिबद्धता की पुष्टि करता है, जो न केवल सार्वजनिक संसाधनों की रक्षा करती है, बल्कि विकसित भारत 2047 की दिशा में एक पारदर्शी, कुशल और समावेशी शासन प्रणाली के निर्माण में सक्रिय रूप से योगदान देती है।

सीएजी ने एलबीएसएनएए में सिविल सेवा अधिकारी प्रशिक्षुओं को संबोधित किया

सीएजी श्री संजय मूर्ति ने युवा सिविल सेवकों के लिए भारत को विकसित भारत बनाने में योगदान देने हेतु तीन स्तंभों की रूपरेखा प्रस्तुत की।

भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक ने 21 नवंबर 2025 की शाम मसूरी स्थित एलबीएसएनएए में आयोजित 100वें कॉमन फाउंडेशन कोर्स में विकसित भारत विषय पर व्याख्यान दिया। श्री के संजय मूर्ति ने अपने संबोधन की शुरुआत में विभिन्न क्षेत्रों में शासन को आकार देने में युवा सिविल सेवकों की महत्वपूर्ण भूमिका पर प्रकाश डाला। उन्होंने तीन प्रमुख स्तंभों की रूपरेखा प्रस्तुत की – पहुंच

का विस्तार करना, डेटा-आधारित शासन को बढ़ावा देना और वित्तीय प्रबंधन में संस्थागत परिपक्वता को सुदृढ़ करना। इन विचारों को सुगम बनाने के लिए उन्होंने शिक्षा क्षेत्र और राष्ट्रीय स्तर की सहयोगात्मक पहलों से व्यावहारिक उदाहरण प्रस्तुत किए।

सीएजी ने भारत भर के संस्थानों को प्रीमियम अकादमिक पत्रिकाओं तक मुफ्त पहुंच प्रदान करने के महत्वपूर्ण सुधार के माध्यम से पहुंच की अवधारणा को विस्तार से समझाया। पहले जहां अलग-अलग विभाग एक राष्ट्र एक सदस्यता के अंतर्गत स्वतंत्र रूप से बातचीत करते थे, जिसके परिणामस्वरूप उच्च लागत और सीमित पहुंच होती थी, वहीं शिक्षा मंत्रालय के नेतृत्व में एक समेकित राष्ट्रीय वार्ता के माध्यम से अब 5,000 से अधिक संस्थान 13,000 से अधिक पत्रिकाओं तक पहुंच बना सकते हैं, जिससे प्रति माह लगभग एक करोड़ डाउनलोड हो रहे हैं, जबकि पहले यह प्रति वर्ष 1 करोड़ डाउनलोड थे। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि यह दर्शाता है कि एकीकृत प्रयास अवसरों को किस प्रकार व्यापक रूप से बढ़ाते हैं, विशेष रूप से कम संसाधनों वाले राज्य कॉलेजों के लिए, और युवा अधिकारियों से अपने प्रशासनिक कार्यों में सहयोगात्मक दृष्टिकोण अपनाने का आग्रह किया। उन्होंने बड़े पैमाने पर और सामूहिक खरीद की परिवर्तनकारी शक्ति पर जोर देने के लिए उजाला एलईडी बल्ब पहल का उदाहरण भी दिया।

दूसरे विषय पर चर्चा करते हुए, श्री के संजय मूर्ति ने समझाया कि डेटा-आधारित शासन किस प्रकार संस्थागत जवाबदेही और सुधार को बढ़ाता है। उन्होंने कहा कि यद्यपि कई भारतीय संस्थान शुरू में क्यूएस और टाइम्स हायर एजुकेशन जैसी वैश्विक रैंकिंग में भाग लेने से हिचकिचाते थे, लेकिन अंततः उनकी भागीदारी से अनुसंधान की गुणवत्ता, रोजगार के अवसर, लैंगिक प्रतिनिधित्व और एसडीजी से संबंधित प्रदर्शन के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त हुई। उन्होंने ऐसे उदाहरण दिए जहां व्यवस्थित डेटा संग्रह, नियोक्ताओं तक बेहतर पहुंच और बेहतर दस्तावेज़ीकरण ने विश्वविद्यालयों को वैश्विक रैंकिंग में उल्लेखनीय वृद्धि करने में सक्षम बनाया। इस प्रकार के डेटासेट—चाहे राष्ट्रीय निकायों, मंत्रालयों या वैश्विक संस्थानों द्वारा तैयार किए गए हों—प्रशासकों के लिए कमियों का पता लगाने, हस्तक्षेपों की योजना बनाने और विभिन्न क्षेत्रों में प्रगति की निगरानी करने के लिए आवश्यक उपकरण के रूप में कार्य करते हैं।

तीसरे स्तंभ पर चर्चा करते हुए, सीएजी ने मजबूत संस्थागत वित्तीय अनुशासन और निवेश-तत्परता की आवश्यकता पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि भारत के शिक्षा और स्वास्थ्य क्षेत्रों को पर्याप्त पूंजी की आवश्यकता है, और हालांकि व्यवहार्यता-अंतर वित्तपोषण और पूंजी जुटाने के अवसर जैसी व्यवस्थाएं मौजूद हैं, फिर भी कई संस्थान इन आवश्यकताओं को पूरा करने में विफल रहते हैं।

कमजोर लेखांकन पद्धतियों, संपत्ति रजिस्टरों के खराब रखरखाव और पुराने वित्तीय प्रणालियों के कारण लाभ में कमी आई है। उन्होंने युवा अधिकारियों को वित्तीय पारदर्शिता बढ़ाने, खातों का उचित रखरखाव सुनिश्चित करने और वित्तपोषण के अवसरों का लाभ उठाने के लिए मजबूत संस्थागत संरचनाएं बनाने के लिए प्रोत्साहित किया।

भारत के सीएजी श्री के संजय मूर्ति एलबीएसएनएए मसूरी में प्रशासनिक सेवा के प्रशिक्षु अधिकारियों को संबोधित करते हुए

अपने समापन भाषण में, श्री के. संजय मूर्ति ने 660 प्रतिभागी अधिकारी प्रशिक्षुओं से सतत विकास, सेवा वितरण या नियामक सुधारों जैसे छोटे, ईमानदार प्रशासनिक कार्यों के परिवर्तनकारी प्रभाव को समझने का आग्रह किया। उन्होंने इस बात पर प्रकाश डाला कि राष्ट्रीय सतत विकास

लक्ष्यों से संबंधित हस्तक्षेपों ने 2015-2070 के बीच संचयी उत्सर्जन में 23% की उल्लेखनीय कमी लाने में योगदान दिया है, जो बिना किसी नीति के परिदृश्य की तुलना में अधिक है। यह दर्शाता है कि कैसे निरंतर सामूहिक प्रयास ठोस राष्ट्रीय परिणाम देते हैं। उन्होंने युवा अधिकारियों को विनम्र रहने, नागरिकों के लिए सुलभ रहने, अनुभवी सहकर्मियों के ज्ञान को ग्रहण करने और पारदर्शिता और जनविश्वास में बाधा डालने वाली अनावश्यक प्रशासनिक अड़चनों को दूर करने के लिए प्रतिबद्ध रहने की सलाह दी। उन्होंने उन्हें याद दिलाया कि उनकी सत्यनिष्ठा, सक्षमता और सीखने की तत्परता ही अंततः उनके द्वारा प्रदान किए जाने वाले शासन की गुणवत्ता निर्धारित करेगी।

भारत के सीएजी श्री के संजय मूर्ति एलबीएसएनएए मसूरी में प्रशासनिक सेवा के प्रशिक्षु अधिकारियों की सभा को संबोधित करते हुए

अपने औपचारिक संबोधन के बाद, सीएजी ने अधिकारी प्रशिक्षुओं के साथ एक संवादात्मक प्रश्नोत्तर सत्र में भाग लिया। उन्होंने धैर्यपूर्वक और स्पष्टता से प्रश्नों के उत्तर दिए और भारत सरकार द्वारा विभिन्न क्षेत्रों में नए आईआईटी, एनआईटी और आईआईएम की स्थापना के माध्यम से देश के उच्च शिक्षा और अनुसंधान तंत्र को विस्तारित करने के निरंतर प्रयासों पर बल दिया। उन्होंने कहा कि इन संस्थानों का उद्देश्य न केवल गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की बढ़ती मांग को पूरा करना है, बल्कि उभरते और बहुविषयक क्षेत्रों में अनुसंधान क्षमता को मजबूत करना और शैक्षणिक संस्थानों और उद्योग के बीच गहन समन्वय को बढ़ावा देना भी है। उन्होंने कहा कि यह विस्तार नवाचार-संचालित, वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धी संस्थानों के निर्माण की व्यापक दृष्टि के अनुरूप है, जो भारत की विकास प्राथमिकताओं का समर्थन करने में सक्षम हैं।

भारत के सीएजी श्री के संजय मूर्ति एलबीएसएनएए मसूरी की संयुक्त निदेशक सुश्री सौजन्या से स्मृति चिन्ह प्राप्त करते हुए

श्री के संजय मूर्ति ने 100वें खेल महोत्सव का भी उद्घाटन किया।[बi]कॉमन फाउंडेशन कोर्स के उद्घाटन के दौरान, उन्होंने खेल महोत्सव की भावना पर प्रकाश डालते हुए कहा कि यह केवल एक खेल आयोजन नहीं है, बल्कि अधिकारी प्रशिक्षुओं के बीच एकता, अनुशासन और सामूहिक ऊर्जा का उत्सव है। उन्होंने इस बात पर बल दिया कि खेलों में भाग लेने से निष्पक्ष खेल भावना, ईमानदारी, सौहार्द और आपसी सम्मान जैसे मूल्य विकसित होते हैं, जो प्रत्येक सरकारी कर्मचारी के लिए आवश्यक हैं। उन्होंने आगे कहा कि खेल मानसिक अनुशासन, एकाग्रता और दृढ़ संकल्प को बढ़ावा देते हैं, जो लोक सेवा में नेतृत्व के लिए मूलभूत गुण हैं। विविध भागीदारी की सराहना करते हुए, उन्होंने कहा कि खेल महोत्सव अंतर-हाउस सहयोग, स्वस्थ प्रतिस्पर्धा और प्रतिभागियों के बीच खेल प्रतिभा की पहचान और उसे प्रोत्साहित करने के लिए एक सार्थक मंच प्रदान करता है।

श्री मूर्ति ने सुदृढ़ प्राकृतिक संसाधन लेखा तैयार करने के लिए सहयोग की आवश्यकता पर जोर दिया।

भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक (एनआरए) ने सुदृढ़ प्राकृतिक संसाधन लेखा-जोखा तैयार करने के लिए सभी हितधारकों के बीच सहयोग की आवश्यकता पर बल दिया है। इससे देश में उपयुक्त नीति निर्माण के लिए विभिन्न मंत्रालयों को बहुमूल्य मार्गदर्शन प्राप्त हो सकेगा। श्री के. संजय मूर्ति दिनांक 24 नवंबर 2025 को नई दिल्ली में "भारत में प्राकृतिक संसाधन लेखांकन" (एनआरए) पर आयोजित आधे दिन की कार्यशाला को संबोधित कर रहे थे। भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक कार्यालय के सरकारी लेखा मानक सलाहकार बोर्ड (जीएएसएबी) द्वारा आयोजित इस कार्यशाला में भारत सरकार के कई मंत्रालयों/विभागों जैसे सांख्यिकी एवं कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय, खान मंत्रालय, जल शक्ति मंत्रालय, वन मंत्रालय, भूमि संसाधन मंत्रालय, पृथ्वी एवं विज्ञान मंत्रालय, कोयला मंत्रालय आदि के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। सतत विकास, पर्यावरण संरक्षण और अंततः हरित जीडीपी को मापने की आवश्यकता पर बढ़ते वैश्विक ध्यान को ध्यान में रखते हुए कार्यशाला का आयोजन किया गया था। एनआरए देश के सतत आर्थिक विकास में प्राकृतिक संसाधनों द्वारा निभाई जाने वाली महत्वपूर्ण भूमिका को मान्यता देता है। यह हमारे सतत विकास लक्ष्यों के अनुरूप, प्राकृतिक पर्यावरण के विभिन्न घटकों और देश की आर्थिक प्रगति के बीच घनिष्ठ अंतर्संबंध को दर्शाता है।

इस अवसर पर बोलते हुए, उपनियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक (सरकारी लेखा) और अध्यक्ष (जीएएसएबी) श्री जयंत सिन्हा ने देश में प्राकृतिक संसाधन लेखा तैयार करने में 2019 से जीएएसएबी की प्रगति पर प्रकाश डाला। श्री सौरभ गर्ग, सचिव, सांख्यिकी एवं कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय ने अंतरराष्ट्रीय मानकों के अनुरूप प्राकृतिक संसाधनों के लेखांकन के लिए सांख्यिकी एवं कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय में किए जा रहे कार्यों पर प्रकाश डाला और प्राकृतिक संसाधन लेखांकन के लिए एक सहमत ढांचा तैयार करने, इसे बेंचमार्क से जोड़ने और समय-सीमा निर्धारित करने की आवश्यकता पर बल दिया।

दिनांक 24-11-2025 को नई दिल्ली में प्राकृतिक संसाधन लेखांकन पर आयोजित एक कार्यशाला में उपनियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक श्री जयंत सिन्हा सीएजी श्री के संजय मूर्ति का स्वागत करते हुए

मिस्र के राजदूत ने शासन और लेखापरीक्षा में बेहतर सहयोग के लिए अपने दृष्टिकोण पर प्रकाश डाला।

सीएजी ने डिजिटल ऑडिट और गवर्नेंस में दक्षिण-दक्षिण सहयोग के महत्व पर जोर दिया।

भारत में मिस्र के राजदूत महामहिम श्री कामेल जायद गलाल ने दिनांक 25 नवंबर 2025 को अंतर्राष्ट्रीय सूचना प्रणाली और लेखापरीक्षा केंद्र (आईसीआईएसए) का दौरा किया। यह आयोजन डिजिटल सार्वजनिक अवसंरचना

(डीपीआई) के लेखापरीक्षा पर 166वें अंतर्राष्ट्रीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का हिस्सा था।भारत सरकार के विदेश मंत्रालय के भारतीय तकनीकी एवं आर्थिक सहयोग (आईटीईसी) कार्यक्रम के अंतर्गत आईसीआईएसए द्वारा आयोजित इस तीन सप्ताह के कार्यक्रम में 26 देशों के 28 प्रतिभागियों ने भाग लिया ।

इस कार्यक्रम के लिए मिस्र को थीम देश के रूप में नामित किया गया था, जिससे प्रतिभागियों को मिस्र के इतिहास, संस्कृति, शासन प्रणाली, सार्वजनिक क्षेत्र की प्रणालियों और लेखापरीक्षा पद्धतियों को समझने का एक केंद्रित अवसर मिला। राजदूत ने समकालीन लेखापरीक्षा तकनीकों और डिजिटल शासन में भारत के नेतृत्व की सराहना की, विशेष रूप से नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक द्वारा डेटा विश्लेषण और प्रौद्योगिकी-आधारित पर्यवेक्षण के अभिनव उपयोग की। उन्होंने बताया कि मिस्र इन विकासों से प्रेरित है क्योंकि वह अधिक प्रभावी और खुले सार्वजनिक वित्त प्रबंधन की ओर अपने स्वयं के बदलाव को गति दे रहा है। उन्होंने कहा, "हमारे देशों के बीच द्विपक्षीय समझौते और सहयोग की अपार संभावनाएं हैं।"

अपने संबोधन में आईसीआईएसए के महानिदेशक श्री मोहंती ने सीमित संसाधनों वाले देशों के बीच डिजिटल शासन में सुधार लाने में अंतरराष्ट्रीय सहयोग की महत्वपूर्ण भूमिका पर जोर दिया। उन्होंने बताया कि 1979 से भारत के सीएजी ने विश्वव्यापी प्रशिक्षण कार्यक्रमों के माध्यम से 154 देशों के 6,000 से अधिक लोगों को प्रशिक्षित किया है। उन्होंने दावा किया कि ये कार्यक्रम वैश्विक स्तर पर सार्वजनिक लेखापरीक्षा और शासन क्षमता को मजबूत करने के लिए भारत की निरंतर प्रतिबद्धता को दर्शाते हैं। श्री मोहंती ने इस बात पर बल दिया कि दक्षिण-दक्षिण सहयोग अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि वैश्विक दक्षिण के देशों की विकास संबंधी परिस्थितियाँ और चिंताएँ समान हैं।

भारत में मिस्र के राजदूत श्री कमेल जायद गलाल एवं आईसीआईएसए के महानिदेशक श्री बी के मोहंती दिनांक 25-11-2025 को 166वें अंतर्राष्ट्रीय प्रशिक्षण कार्यक्रम में नोएडा में डीपीआई की लेखापरीक्षा के अवसर पर प्रतिभागियों के साथ

आईसीआईएसए में डिजिटल सार्वजनिक अवसंरचना के ऑडिट पर 166वां अंतर्राष्ट्रीय प्रशिक्षण कार्यक्रम, डेटा प्रबंधन, गोपनीयता, साइबर सुरक्षा और वैश्विक सुरक्षा उपायों पर चर्चा के साथ-साथ, डिजिटल सार्वजनिक अवसंरचना के विकास, संरचना और संचालन को भी शामिल करता है। यह कार्यक्रम समावेशिता, पहुंच और सामाजिक प्रभाव के लिए डिजिटल सार्वजनिक अवसंरचना के ऑडिट का भी पता लगाता है, जिससे प्रतिभागियों को यह समझने में मदद मिलती है कि सार्वजनिक क्षेत्र में डिजिटल पारिस्थितिकी तंत्र की विश्वसनीयता, पारदर्शिता और उपयोगकर्ता-केंद्रितता का मूल्यांकन कैसे किया जा सकता है।

आईसीआईएसए के महानिदेशक श्री बी के मोहंती दिनांक 25-11-2025 को 166वें अंतर्राष्ट्रीय प्रशिक्षण कार्यक्रम में नोएडा में डीपीआई की लेखापरीक्षा पर भारत में मिस्र के राजदूत श्री कमेल जायद गलाल का स्वागत करते हुए

राज्यों के सार्वजनिक वित्त पर सीएजी-आईसीएसआर का दूसरा सम्मेलन आयोजित हुआ।

सीएजी-आईसीएससीएसआर के चल रहे सहयोग कार्यक्रम के अंतर्गत, भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक कार्यालय (सीएजी) और भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद (आईसीएससीएसआर) ने 15 दिसंबर, 2025 को नई दिल्ली में राज्यों के सार्वजनिक वित्त पर द्वितीय सीएजी-आईसीएससी संगोष्ठी का आयोजन किया। संगोष्ठी का विषय, 'राज्यों का सार्वजनिक वित्त', भारत की राजकोषीय संरचना और विकास पथ में राज्यों की महत्वपूर्ण भूमिका को दर्शाता है। नवंबर 2025 में अपने उद्घाटन सत्र के बाद, यह संगोष्ठी सीएजी-आईसीएससीएसआर के चल रहे सहयोग कार्यक्रम के अंतर्गत आयोजित की गई। मुख्य अतिथि नीति आयोग के उपाध्यक्ष श्री सुमन बेरी थे।

साक्ष्य आधारित सार्वजनिक वित्त प्रबंधन और नीति निर्माण में सुधार लाने के लिए श्री जयंत सिन्हा उप नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक (सरकारी लेखा) और सरकारी लेखा मानक सलाहकार बोर्ड (जीएएसएबी) के अध्यक्ष ने राज्यों में एकसमान, विस्तृत और तुलनीय राजकोषीय आंकड़ों की आवश्यकता पर बल दिया। राज्यों के सार्वजनिक वित्त पर दूसरे सीएजी-आईसीएससीएसआर संगोष्ठी में अपने संबोधन में, श्री सिन्हा ने सीएजी के राज्य वित्त प्रकाशन के महत्व पर जोर देते हुए इसे एक अभूतपूर्व परियोजना बताया, जिसमें दस वर्षों की अवधि में 28 राज्यों के लेखापरीक्षित राजकोषीय आंकड़े संकलित किए गए हैं। श्री सिन्हा ने कहा, "यह प्रकाशन राज्य वित्त पर लेखापरीक्षित और मानकीकृत जानकारी को एक साथ लाता है, जिससे राज्यों के बीच और समय के साथ सार्थक तुलना संभव हो पाती है।" उन्होंने बताया कि आंकड़े प्रत्येक राज्य की राजस्व जुटाने की क्षमता, व्यय के रुझान, ऋण और देनदारियों तथा बजट संतुलन में महत्वपूर्ण अंतर दर्शाते हैं। श्री सिन्हा ने राजकोषीय परिणामों में विसंगतियों की ओर ध्यान दिलाते हुए कहा कि बदलते राजकोषीय वातावरण में सार्वजनिक वित्त प्रबंधन तकनीकों, नीतिगत निर्णयों और आर्थिक क्षमताओं में भिन्नता झलकती है। उन्होंने कई राज्य-स्तरीय सर्वोत्तम प्रथाओं की सूची दी, जिन्हें अन्य राज्य भी अपना सकते हैं, विशेषकर बजट निर्माण, लेखांकन में बदलाव और राजकोषीय रिपोर्टिंग जैसे क्षेत्रों में। श्री सिन्हा ने लेखांकन और रिपोर्टिंग मानकों के राज्य-दर-राज्य सामंजस्य पर ज़ोर दिया और सुसंगत वर्गीकरण तथा विषय-शीर्ष स्तर की बारीकी के महत्व को रेखांकित किया। उनके अनुसार, असंगत वर्गीकरण पारदर्शिता को कम करता है और राजकोषीय आंकड़ों के विश्लेषणात्मक मूल्य को सीमित करता है। अकादमिक समुदाय को संबोधित करते हुए, श्री सिन्हा ने शिक्षाविदों और विद्वानों से तुलनात्मक और नीति-संबंधी शोध के लिए सीएजी का महत्वपूर्ण आंकड़ों का उपयोग करने का आग्रह किया और दावा किया कि गहन अकादमिक विश्लेषण लेखापरीक्षा परिणामों का समर्थन कर सकता है और राजकोषीय शासन को मजबूत कर सकता है। उन्होंने कहा कि "सार्वजनिक वित्त डेटा केवल रिपोर्टों तक सीमित नहीं रहना चाहिए - इससे बहस, शोध और सुधार को बढ़ावा मिलना चाहिए।"

अपने मुख्य भाषण में, श्री सुमन बेरी ने विकास के लक्ष्यों को प्राप्त करने में सामाजिक विज्ञान के महत्व पर प्रकाश डाला, विशेष रूप से व्यवहार को प्रभावित करने और संस्थानों को मजबूत करने में। उन्होंने कहा कि पिछले 20 वर्षों में भारत के प्रभावशाली विकास प्रदर्शन में कुशल राजकोषीय और आर्थिक प्रबंधन का योगदान रहा है। उन्होंने इसकी आवश्यकता पर बल दिया।

दूसरी सीएजी-आईसीएसएसआर संगोष्ठी के दौरान पैनल चर्चा

उन्होंने वैश्विक बजट संबंधी चुनौतियों पर प्रकाश डालते हुए राज्यों को अपने वित्त का बुद्धिमानी से प्रबंधन करने के लिए प्रोत्साहित किया, विशेष रूप से विद्युत क्षेत्र के वित्त, सार्वजनिक सेवा मूल्य निर्धारण और पारदर्शिता जैसे क्षेत्रों में। उन्होंने इस बात पर बल दिया कि स्पष्ट, सुसंगत और विश्वसनीय राजकोषीय आंकड़ों से बेहतर निर्णय लेने और संस्थागत विश्वसनीयता सुनिश्चित होती है। उन्होंने यह भी कहा कि बेहतर प्रबंधन के लिए उत्कृष्ट मापन आवश्यक है, जिसमें सीएजी और नीति आयोग जैसे संगठन महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

संगोष्ठी का समापन शासन, अनुसंधान और नीति निर्माण के लिए विश्वसनीय, लेखापरीक्षित और मानकीकृत राजकोषीय आंकड़ों के महत्व पर जोर देते हुए हुआ; भारत के विकास के लिए राज्य-स्तरीय राजकोषीय पारदर्शिता के महत्व पर; और संवैधानिक जवाबदेही को अकादमिक अध्ययन से जोड़कर सीएजी-आईसीएससीएसआर सहयोग के माध्यम से राजकोषीय संघवाद को मजबूत करने पर जोर दिया गया।

इस संगोष्ठी में प्रमुख वक्ताओं में तिरुवनंतपुरम स्थित विकास अध्ययन केंद्र के निदेशक प्रो. सी. वीरमणि; आईसीएसआर के सदस्य सचिव प्रो. धनंजय सिंह; दिल्ली स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स के निदेशक प्रो. राम सिंह; 15वें वित्त आयोग के सदस्य और नीति आयोग के विशिष्ट फेलो डॉ. अनूप सिंह; और सीएजी (सरकारी लेखा) के उप निदेशक और जीएएसएबी के अध्यक्ष श्री जयंत सिन्हा शामिल थे। 26 राज्यों और दो केंद्र शासित प्रदेशों के 650 से अधिक विद्वानों, शोधकर्ताओं, संकाय सदस्यों और छात्रों ने इस कार्यक्रम के लिए बड़े उत्साह से पंजीकरण कराया। उन्होंने केंद्रीय विश्वविद्यालयों, राज्य से संबद्ध संस्थानों, सरकारी वित्त पोषित संस्थानों, आईसीएसआर द्वारा मान्यता प्राप्त संस्थानों, राष्ट्रीय महत्व के संस्थानों और यूजीसी द्वारा मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालयों का प्रतिनिधित्व किया। संगोष्ठी में लगभग 350 लोगों ने व्यक्तिगत रूप से भाग लिया।

नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक ने आईआरएस के परिवीक्षाधीन अधिकारियों से भारत के समावेशी और सतत विकास में सकारात्मक भूमिका निभाने का आग्रह किया।

भारतीय राजस्व सेवा (आयकर) अधिकारी प्रशिक्षुओं के 79वें बैच के प्रेरण प्रशिक्षण का औपचारिक उद्घाटन आज नागपुर स्थित राष्ट्रीय प्रत्यक्ष कर अकादमी (एनएडीटी) में किया गया।

उद्घाटन समारोह में भारत के माननीय नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक श्री के. संजय मूर्ति मुख्य अतिथि के रूप में और मुंबई एवं नागपुर की प्रधान आयकर आयुक्त श्रीमती मालती श्रीधरन विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित थीं। इस अवसर पर आयकर विभाग और अन्य विभागों के वरिष्ठ अधिकारी भी मौजूद थे।

अधिकारी प्रशिक्षुओं को संबोधित करते हुए, माननीय सीएजी श्री के. संजय मूर्ति ने 79वें बैच को लोक सेवा में शामिल होने पर बधाई दी और राष्ट्र निर्माण में आयकर विभाग की महत्वपूर्ण भूमिका पर प्रकाश डालते हुए कहा कि भारत सरकार के राजस्व का अधिकांश हिस्सा आयकर विभाग से आता है। उन्होंने क्षमता निर्माण में अनुकरणीय भूमिका निभाने के लिए एनएडीटी, इसके संकाय सदस्यों और

कर्मचारियों की सराहना की और पाठ्यक्रम सामग्री, बुनियादी ढांचे और प्रशिक्षण सुविधाओं के मामले में अकादमी को अन्य राष्ट्रीय प्रशिक्षण संस्थानों के लिए एक मानदंड बताया। उन्होंने अधिकारी प्रशिक्षुओं से सकारात्मक, प्रतिबद्ध और समावेशी एवं सतत विकास की दिशा में भारत की यात्रा में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका के प्रति सचेत रहने का आग्रह किया।

श्रीमती मालती श्रीधरन ने अपने संबोधन में 1980 से अधिकारी प्रशिक्षुओं में ईमानदारी, संवेदनशीलता, निष्पक्षता और तत्परता जैसे लोक सेवा के मूल मूल्यों को निरंतर रूप से विकसित करने के लिए एनएडीटी को बधाई दी। उन्होंने आयकर विभाग की कई नई पहलों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि विभाग कुशल, प्रभावी और पारदर्शी कर प्रशासन प्राप्त करने के उद्देश्य से साहसिक सुधारों के माध्यम से राष्ट्र की बढ़ती आकांक्षाओं के साथ कदम मिलाकर चला है। उन्होंने फेसलेस असेसमेंट और अपीलीय व्यवस्था में बदलाव पर जोर दिया, जो जबरन प्रवर्तन से स्वैच्छिक अनुपालन की ओर एक बदलाव का प्रतीक है, जिसमें करदाताओं को बाध्य करने के बजाय प्रोत्साहित करने पर अधिक जोर दिया गया है। उन्होंने आयकर विभाग और लोक प्रशासन के अन्य क्षेत्रों में वरिष्ठ नेतृत्व भूमिकाओं की चुनौतियों का सामना करने के लिए युवा अधिकारियों को तैयार करने में एनएडीटी के व्यापक प्रशिक्षण की महत्वपूर्ण भूमिका को भी रेखांकित किया।

सीएजी श्री के संजय मूर्ति दिनांक 17-12-2025 को नागपुर में आईआरएस प्रशिक्षुओं को संबोधित करते हुए

समारोह के दौरान, एनएडीटी के महानिदेशक डॉ. सिबिचेन के. मैथ्यू ने भारतीय राजस्व सेवा (आयकर) के 79वें बैच के अधिकारी प्रशिक्षुओं को निष्ठा की शपथ दिलाई।

इस 79वें बैच में 180 अधिकारी प्रशिक्षु शामिल हैं जिन्होंने यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा 2024 उत्तीर्ण की है, साथ ही भूटान की राजशाही सरकार के 2 अतिरिक्त अधिकारी भी हैं, जिससे कुल संख्या 182 हो जाती है। बैच की औसत आयु 28 वर्ष है, जिसमें सबसे कम उम्र के अधिकारी प्रशिक्षु की आयु 23 वर्ष है। बैच में 67 महिला अधिकारी प्रशिक्षु हैं, जो कुल संख्या का 37% हैं। 16 अधिकारी प्रशिक्षु विवाहित हैं, जो बैच का लगभग 9% हैं।

बैच के 49% छात्रों ने इंजीनियरिंग की पढ़ाई की है जबकि 26% ने मानविकी की पढ़ाई की है। 20 छात्रों ने विज्ञान, 9 ने चिकित्सा, 8 ने वाणिज्य या व्यवसाय प्रबंधन और 6 ने कानून की पढ़ाई की है। 47 स्नातकोत्तर छात्रों के पास स्नातकोत्तर डिग्री है और 2 के पास पीएचडी है।

इस बैच के अधिकांश प्रशिक्षुओं, यानी 54%, के लिए यह पहली नौकरी है। शेष प्रशिक्षुओं के पास पहले से ही विभिन्न क्षेत्रों जैसे केंद्र और राज्य सरकार, बहुराष्ट्रीय निगमों (एमएनसी), सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों (पीएसयू) और निजी क्षेत्र में काम करने का अनुभव है। अधिकारी प्रशिक्षु अत्यंत विविध सांस्कृतिक और भाषाई पृष्ठभूमि से आते हैं। वे भारत के 26 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों का प्रतिनिधित्व करते हैं, जिनमें उत्तर प्रदेश (35), राजस्थान (20) और महाराष्ट्र तथा केरल से 16-16 प्रशिक्षु शामिल हैं। भौगोलिक पृष्ठभूमि की बात करें तो, 37% अधिकारी प्रशिक्षु ग्रामीण क्षेत्रों से हैं, जबकि शेष 63% शहरी या अर्ध-शहरी क्षेत्रों से हैं। हालांकि हिंदी सबसे आम मातृभाषा है, अधिकारी प्रशिक्षु मलयालम, मराठी, तेलुगु, कन्नड़, तमिल, गुजराती, असमिया, जोंगखा, अंग्रेजी, बंगाली, कश्मीरी, कोंकणी, मैतेई, नेपाली, पंजाबी, ओडिया, उर्दू, आदि, गुजराती और बागड़ी भाषाएं भी बोलते हैं। श्री सलिल बिजुर इस बैच के कोर्स निदेशक हैं, श्री अखिल गोयल और सुश्री सीमा प्रमोद सहायक कोर्स निदेशक हैं।

राज्य वित्त 2023-24 पर प्रकाशन जारी किया गया

भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक (सीएजी) श्री के संजय मूर्ति ने 31 दिसंबर 2025 को नई दिल्ली में राज्य वित्त प्रकाशन 2023-24 का दूसरा संस्करण जारी किया। पहले संस्करण (2022-23) पर आधारित यह प्रकाशन सभी 28 राज्यों के वित्त का समेकित, लेखापरीक्षित अवलोकन प्रस्तुत करता है, जिससे 2014-15 से 2023-24 तक की 10 वर्षों की अवधि में अंतर-राज्यीय और अंतर-कालिक विश्लेषण संभव हो सकेगा। राज्य विधानसभाओं के समक्ष रखे जाने वाले वार्षिक वित्त एवं विनियोग लेखा और लेखापरीक्षा रिपोर्टों के विपरीत, यह प्रकाशन राज्यों के तुलनीय लेखापरीक्षित वित्तीय आंकड़ों को एक ही सुलभ खंड में एकत्रित करता है, जिसका उद्देश्य नीति निर्माताओं, सार्वजनिक वित्तीय प्रबंधकों, शोधकर्ताओं, शिक्षाविदों और अन्य हितधारकों की सहायता करना है।

राज्य वित्त 2023-24 प्रकाशन विश्लेषणात्मक दायरे को काफी हद तक बढ़ाता है। राजस्व, व्यय, घाटे, सार्वजनिक ऋण, सार्वजनिक खाता देनदारियों और गारंटियों से संबंधित व्यापक राजकोषीय आंकड़ों के अतिरिक्त, वर्तमान संस्करण में नए विस्तृत विश्लेषण शामिल हैं, जिनमें राज्यों के स्वयं के कर राजस्व (SOTR) और उसके घटकों की विस्तृत जांच, सब्सिडी और उनकी संरचना का विश्लेषण, और वेतन, पेंशन भुगतान, ब्याज और अनुदान-सहायता वेतन सहित प्रतिबद्ध व्यय का व्यापक दायरा शामिल है। यह राज्यों में 10 वर्षों की अवधि के लिए व्यक्तिगत जमा खातों और सार आकस्मिक निधि का आकलन भी प्रस्तुत करता है, साथ ही राज्यों की तरलता स्थिति को दर्शाने वाले मार्ग एवं साधन अग्रिमों की केंद्रित समीक्षा भी करता है।

इस प्रकाशन को छह विषयगत अध्यायों में व्यवस्थित किया गया है, जिनमें प्राप्तियाँ, व्यय, व्यय का वर्गीकरण, सार्वजनिक ऋण और सार्वजनिक लेखा देनदारियाँ तथा राजकोषीय उत्तरदायित्व संकेतक शामिल हैं। इसके साथ ही, 10 वर्षों के राज्यवार राजकोषीय आँकड़ों का विस्तृत अनुलग्नक भी दिया गया है। यह संस्करण केंद्र और राज्यों में व्यय के सामान्य मद शीर्षों के सामंजस्य और युक्तिकरण की आवश्यकता पर भी बल देता है। सीएजी द्वारा वित्त वर्ष 2027-28 से इस सुधार पहल को अपनाने की सलाह दी गई है, ताकि वर्गीकरण में लंबे समय से चली आ रही गैर-एकरूपता की समस्याओं का समाधान किया जा सके और मद शीर्ष स्तर पर सार्वजनिक व्यय आँकड़ों की तुलनात्मकता में सुधार किया जा सके।

सुगम्यता और उपयोग में आसानी बढ़ाने के लिए, राज्य वित्त 2023-24 प्रकाशन के साथ इंटरैक्टिव डैशबोर्ड और डेटा विज़ुअलाइज़ेशन टूल भी उपलब्ध कराए गए हैं, जो सीएजी की वेबसाइट पर मौजूद हैं। प्रकाशन और डैशबोर्ड मिलकर राजकोषीय पारदर्शिता को बढ़ावा देने, साक्ष्य-आधारित नीति निर्माण का समर्थन करने और देश में सार्वजनिक वित्त संबंधी चर्चा को मजबूत करने का प्रयास करते हैं।

भारत के सीएजी, उपनियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक एवं अन्य वरिष्ठ अधिकारीगण दिनांक 31-12-2025 को नई दिल्ली में राज्य वित्त पर प्रकाशन के दूसरे संस्करण को जारी करते हुए

सेवानिवृत्ति

सुश्री स्मिता शैलेंद्र चौधरी

भारत के हृदय, उत्तर प्रदेश की निवासी सुश्री स्मिता शैलेंद्र चौधरी ने भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा सेवा में 20 अगस्त 1990 को प्रवेश किया। आपकी प्रथम नियुक्ति महालेखाकार के कार्यालय (लेखा व हकदारी), प्रयागराज में सहायक महालेखाकार के पद पर हुई जहां आपने दो वर्षों तक अपनी सेवाएँ दीं।2009 तक आपने उत्तर प्रदेश के विभिन्न कार्यालयों में प्रोन्नत पदों पर कार्य किया। बीच में प्रतिनियुक्ति पर आप उत्तर प्रदेश सरकार के वित्त मंत्रालय में विशेष सचिव के पद पर भी छः वर्षों तक रहीं।

वर्ष 2009 में प्रथम बार उत्तर प्रदेश से बाहर आपको कोलकाता में नियुक्ति मिली जब आप को प्रधान निदेशक के पद पर प्रधान निदेशक (वाणिज्यिक) एवं ऑडिट बोर्ड के पदेन सदस्य (द्वितीय) के कार्यालय में नियुक्त किया गया। इसी दौरान वर्ष 2015 में आपको प्रोन्नति पर प्रधान महालेखाकार का ग्रेड प्राप्त हुआ। वर्ष 2021 से अपनी सेवानिव्रित्त तक आपने नई दिल्ली स्थित मुख्यालय में अपनी सेवाएँ दीं। आपने देश ही नहीं अपितु विदेशों में भी अपनी सेवाएँ दीं । विश्व खाद्य कार्यक्रम के लिए आपने रोम एवं विश्व स्वस्थ्य संगठन हेतु आपने जेनेवा में अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया। 'प्रत्यक्ष कर संहिता – 2010' पर आयोजित सेमिनार का आप हिस्सा रही हैं। सेवानिवृत्त होने से कुछ समय पूर्व ही आपने एक अत्यंत महत्वपूर्ण कार्यशाला, जिसका विषय था – "सूचना एवं आंकड़ों को चित्रों तथा ग्राफिकल माध्यम से समझना" में भाग लिया। आपके चमकदार सेवाकाल का अंत आपकी सेवानिवृत्ति पर 30 सितंबर 2025 को हुआ। यह कार्यालय आपके आगामी सुखी एवं वृद्धिप्रदायक जीवन की कामना करता है। ईश्वर आपको सदैव स्वस्थ एवं दीर्घायु रखें ।

सुश्री नंदना मुंशी

बांग्लाभाषी सुश्री नंदना मुंशी का जन्म पश्चिम बंगाल में हुआ था। आपने भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग में विभिन्न पदों को सुशोभित किया। आपके शानदार कैरियर का प्रारम्भ महालेखाकार के कार्यालय (लेखा व हकदारी), पश्चिम बंगाल कोलकाता से हुआ जब आपने उस कार्यालय में सहायक महालेखाकार का पद संभाला। इसी कार्यालय में अपनी प्रथम प्रोन्नति पर उपमहालेखाकार के पद पर कार्यभार संभाला जबकि वरिष्ठ उपमहालेखाकर ग्रेड में आपकी प्रोन्नति 13 अगस्त 1999 को हुई। इस प्रोन्नति पर आपने वरिष्ठ उपमहालेखाकार के पद पर महालेखाकार के कार्यालय (वाणिज्यिक, निर्माण एवं राजस्व लेखापरीक्षा) उड़ीसा भुबनेश्वर में कार्यभार संभाला। पूर्व तट रेलवे लेखापरीक्षा कार्यालय में आपने महालेखाकार के पद प्रोन्नत होने पर कार्य किया। 11 अगस्त 2016 में आपको प्रधान महालेखाकार पद पर प्रोन्नत किया गया जब आपको प्रधान निदेशक (वाणिज्यिक) एवं ऑडिट बोर्ड के पदेन सदस्य (द्वितीय) के नई दिल्ली स्थित कार्यालय में नियुक्ति प्राप्त हुई। एडीएआई ग्रेड प्राप्त होने से 31 अक्तूबर 2025 को सेवानिवृत होने तक आप की नियुक्ति नई दिल्ली सीएजी मुख्यालय में रही।

आपने विदेशों में भी अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया। आंतरिक लेखापरीक्षा एवं संसाधन केंद्र (आईएआरसी) एवं यूएनएआईडीएस विषयों पर आपने लियोन (फ्रांस) एवं जेनेवा में कार्य किया । अंतर्राष्ट्रीय सर्वोच्च लेखापरीक्षा संस्थान (आईएनटीओएसएआई)

के "लेखापरीक्षा में विज्ञान एवं तकनीक के प्रभाव पर कार्यसमूह" (डबल्यूजीआईएसटीए) की चौथी और पाँचवीं महासभा में, जो अबूधाबी और वॉशिंग्टन में वर्ष 2023 एवं 2025 में आयोजित हुई थी, आपने सहभागिता की थी।

भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग, इस विभाग में आपकी सेवाओं के माध्यम से आपके योगदान के लिए आपको धन्यवाद देता है। विभाग आपको आगामी जीवन हेतु सदैव प्रसन्न एवं स्वस्थ रहने के लिए शुभकामनाएँ भी देता है।

सुश्री यशोधरा राय चौधरी

दर्शनशास्त्र से परास्नातक सुश्री यशोधरा राय चौधरी 1991 बैच की भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा सेवा की अधिकारी हैं। अपने 33 वर्षों से अधिक के सेवा काल में आपने भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा सेवा की अधिकांश शाखाओं जैसे वाणिज्यिक, रेलवे , लेखा व हकदारी, केंद्रीय लेखापरीक्षा एवं प्रशासन में अपनी सेवाएँ दीं जिसकी शुरुआत महालेखाकार के कार्यालय (लेखा व हकदारी), पश्चिम बंगाल कोलकाता से हुई जहाँ आपकी सहायक महालेखाकार के पद पर प्रथम नियुक्ति हुई। 01 अगस्त 1995 को आपकी प्रोन्नति उपमहालेखाकार ग्रेड एवं 01 मई 1999 को वरिष्ठ उपमहालेखाकार ग्रेड पर आप प्रोन्नत हुईं । चाय बोर्ड के वित्तीय सलाहकार एवं मुख्य लेखा अधिकारी के पद पर आपकी नियुक्ति इसी ग्रेड पर प्रोन्नति के दौरान हुई। चाय बोर्ड के निदेशक रहते हुए ही आपको महालेखाकार ग्रेड पर प्रोन्नत किया गया। प्रधान महालेखाकार ग्रेड पर 15 जून 2017 को प्रोन्नत किए जाने के पश्चात आपको प्रधान महालेखाकार (आर्थिक एवं राजस्व क्षेत्र लेखापरीक्षा) के पद पर नियुक्त किया गया, जहां आपने 2020 तक कार्य किया। 2023 में आपको एडीएआई ग्रेड में प्रोन्नत किया गया। सेवानिवृत्ति के समय आप एडीएआई ग्रेड में महानिदेशक लेखापरीक्षा (खान) कोलकाता के पद पर कार्यरत थीं।

आपने विदेशों में भी विभिन्न स्थानों पर अपनी सेवाएँ दीं। अफ्रीकी आर्थिक आयोग की निष्पादन एवं वित्तीय लेखापरीक्षा के लिए अदिस अबाबा (इथियोपिया) तथा पश्चिम एशिया के आर्थिक एवं सामाजिक आयोग की निष्पादन एवं वित्तीय लेखापरीक्षा के लिए बेरूत (लेबनान) में आपने कार्य किया। आंतरिक फ़ेलो शिप कार्यक्रम के लिए आपने वाशिंगटन डीसी का दौरा किया। आपके द्वारा किए गए अन्य विदेशी दौरों में संयुक्त राष्ट्र लेखापरीक्षा हेतु विएना एवं दूतावास लेखापरीक्षा हेतु तेल अबीब, ताशकंद, कीव, अस्ताना एवं येरेवान (आर्मेनिया) सम्मिलित है।

आपके द्वारा सहभागिता किए गए प्रशिक्षण कार्यक्रमों की भी तादाद अच्छी ख़ासी है। अधिशासी एवं प्रबंधन विकास कार्यक्रम, दूतावास एवं संयुक्त राष्ट्र लेखापरीक्षा, प्राप्ति डाटाबेस (आरडीबी), परिसंपत्तियों का मूल्यांकन आदि विषयों पर आपने कई प्रशिक्षण कार्यक्रमों में सहभागिता की ।

निस्संदेह यह विभाग आपके द्वारा प्रदत्त सेवाओं से उपकृत हुआ है । हम सभी आपके आगामी सुखद पारिवारिक जीवन एवं उत्तम स्वास्थ्य की कामना करते हैं।

श्री जयंत सिन्हा

अर्थशास्त्र विषय से परास्नातक श्री जयंत सिन्हा वित्तीय मामलों के विशेषज्ञ माने जाते हैं। आपके व्यावसायिक कैरियर की शुरुआत 16 सितंबर 1991 से हुई थी जब आपकी नियुक्ति भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा सेवा में हुई थी। आपकी प्रथम नियुक्ति सहायक महालेखाकार के रूप में महालेखाकार के कार्यालय (लेखा व हकदारी), मेघालय शिलांग में हुई ।

उपमहालेखाकार के पद पर उन्नयन होने के बाद आपको उसी स्थान पर लेखापरीक्षा के कार्यालय में नियुक्त कर दिया गया । आपको वरिष्ठ उपमहालेखाकार का ग्रेड अक्तूबर 1996 मे मिला । इस ग्रेड के विभिन्न पदों पर कार्य करने के दौरान आपकी नियुक्ति दिल्ली में ही रही। इन्हीं दिनों आपको प्रथम बार नई दिल्ली स्थित मुख्यालय में कार्य करने का मौका मिला जहां आप अधिकांश समय भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक के सचिवालय से सम्बद्ध रहे। सचिवालय में रहते हुए ही आपको महालेखाकार ग्रेड में प्रोन्नत किया गया।

प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा के रूप में आपकी नियुक्ति दो वर्षों के लिए लंदन में भी हुई। इसी ग्रेड में रहते हुए आपको सातवें वेतन आयोग के संयुक्त सचिव के पद पर नियुक्त किया गया। इसी पद पर रहते हुए आपको प्रधान महालेखाकार के पद पर प्रोन्नत किया गया। इसी ग्रेड में रहते हुए आपको रक्षा मंत्रालय में संयुक्त सचिव के पद पर भी कार्य करने का अवसर प्राप्त हुआ जहां आपने तीन वर्षों तक कार्य किया। एडीएआई ग्रेड में प्रोन्नत होने के पश्चात आपको मुख्यालय के पूर्वोत्तर क्षेत्र के एडीएआई का कार्यभार सौंपा गया। इसी ग्रेड पर रहते हुए आपको भारत सरकार के सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय में अतिरिक्त सचिव के पद तीन वर्षों के लिए प्रतिनियुक्ति पर नियुक्त किया गया ।

डीएआई ग्रेड में प्रोन्नत होने पर आपने सरकारी लेखा एवं जीएएसएबी स्कन्ध को बड़ी कुशलता से संभाला। आपके इस कार्यकाल में पहली बार इस स्कन्ध द्वारा भरता सरकार के वित्तीय निष्पादन पर भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक कार्यालय द्वारा एक समीक्षा का प्रकाशन भी हुआ।

विभाग द्वारा आपकी प्रतिभा का उपयोग विदेशों में भी किया गया । आपने 'अंतिम वित्तीय लेखापरीक्षा' , "सुदूर पहुँच लेखापरीक्षा – कृषि एवं खाद्य संगठन", "अन्तरिम वित्तीय लेखापरीक्षा" विषयों पर रोम में आपने सेवाएँ दीं। संयुक्त राष्ट्र शरणार्थी उच्चायुक्त, सीमा पार लोक ऋण लेखापरीक्षा एवं विश्व स्वास्थ्य संगठन की लेखापरीक्षा पर आप जेनेवा में कार्यरत रहे। इसके अतिरिक्त लेखापरीक्षा के विभिन्न कार्यक्रमों के अंतर्गत आपने चिली, सिओल, मस्कट , कुवैत , चीन , मेक्सिको और न्यूयॉर्क में भी अपनी सेवाएँ दीं।

प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भी आपने अपनी जीवंत उपस्थिति दर्ज कराई है। आपने बहुविध विषयों पर प्रशिक्षण कार्यक्रमों में अपनी उपस्थिति दर्ज कराई है । प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष कर, राज्य प्राप्ति लेखापरीक्षा, सूचना प्रोद्यौगिकी लेखापरीक्षा, संयुक्त राष्ट्र एवं पोस्ट व दूरसंचार लेखापरीक्षा विषयों पर आपने कार्यशालाएँ एवं प्रशिक्षण कार्यक्रमों का संचालन किया है।

आपके कार्यकाल में विभाग ने नई ऊंचाइयों को छुआ है । विभाग कामना करता है कि सेवानिवृत्ति के पश्चात आपका जीवन निरोगी एवं प्रसन्नचित हो एवं उसमें उत्तरोत्तर वृद्धि हो ।

हिन्दी पखवाड़े की झलकियाँ

हिन्दी पखवाड़े की झलकियाँ

हिन्दी पखवाड़े की झलकियाँ

आडिट दिवस की झलकियाँ

आडिट दिवस की झलकियाँ

आडिट दिवस की झलकियाँ

आडिट दिवस की झलकियाँ

आडिट दिवस की झलकियाँ

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

सीएजी - सुर्खियों में

सीएजी - सुर्खियों में

THE DEADLY DOSE: TOLL RISES TO 22

Cough syrup deaths: CAG flagged shortfall in TN drug tests last year

CHILD DEATHS LINKED TO COUGH SYRUP

CAG flagged shortfall in TN ...

India's urban governance crisis

MP Tewari writes to CAG, seeks performance audit

कैग ने परिचालन दक्षता बढ़ाने के लिए सीबीडीटी के साथ किया

Audit finds lapses in Odisha edu scheme

Only 47% of ₹1,608 cr collected by district mineral foundations spent in Gujarat: CAG

'STABILISATION FUND WILL COME IN HANDY IN HARD TIMES'

CAG urges states to build Odisha-like budget buffers

वेतन, पेंशन, ब्याज भुगतान पर राज्यों का खर्च 10 साल में 2.5 गुना बढ़ा : कैग

Untold story of BSNL's 15-yea...

At the pleasure of the government?

GASAB Committed Towards Improving Transparency in Government Accounting and Standard Setting Process: CAG

States' Expenses on Salary, Pension, Interest Payment Rise 2.5x in 10 Years Since FY14: CAG

वेतन, पेंशन, ब्याज भुगतान पर राज्यों का कुल खर्च 10 साल में 2.5 गुना बढ़ा: कैग

कैग की रिपोर्ट में खुलासा, राज्यों का कर्ज 10 साल में बढ़कर तीन गुना

वेतन, पेंशन और ब्याज भुगतान पर राज्यों का खर्च पिछले 10 वर्षों में 2.5 गुना बढ़ा

राज्यों का खर्च ढाई गुना बढ़ा : कैग

The States' fiscal illusion: Borr... today, mortgaging tomorr...

UP tops revenue surplus list, Bengal deficient

States' salary, pension bill up 2.5 times in 10 yrs

CAG: States' expenses up 2.5 times in 10 yrs

Expenses on Pension, Pay Rise 2.5x in 10 Yrs

NEW DELHI: The committed expenditure on salaries, pensions, and interest payments increased by 2.49 times to ₹15,63,649 crore in fiscal 2022-23 across all states from ₹6,26,849 crore in 2013-14, said a CAG report on state finances.

States' expenses on salary, pension, interest payment rise 2.5 times in 10 yrs: CAG

वेतन, पेंशन व ब्याज देने में राज्यों का खर्च 10 साल में ढाई गुना बढ़ा

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

सीएजी - सुर्खियों में

सीएजी - सुर्खियों में

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

COMPTROLLER AND AUDITOR GENERAL OF INDIA
COMMUNICATION POLICY WING

Comptroller and Auditor General of India launches Centre of Excellence for Financial Audit (COEFA) in Hyderabad

హైదరాబాద్‌లో ఫైనాన్షియల్ ఆడిట్ ఎక్సలెన్స్ సెంటర్ ప్రారంభం

महालेखाकार संजय मूर्ति ने किया वित्तीय लेखा परीक्षा सेंटर ऑफ एक्सीलेंस का उद्घाटन

India's public audit ecosystem gets a boost with CoEFA launch in Hyderabad

C&AG of India Launches Centre of Excellence for Financial Audit (CoEFA) in Hyderabad CoEFA to Drive AI-, ML- and Data-Enabled Transformation in Public Sector Audits

CAG asks Centre, states to follow uniform classification for recording expenses

CAG seeks greater uniformity in expenditure segregation

CAG to audit 'ease of living' in 101 cities

सीएजी का दूरस्थ लेखापरीक्षा की ओर रणनीतिक बदलाव: पारदर्शिता और दक्षता को नया आयाम

Kerala's development paradox

MoU signed between CAG Office and Digital India Bhashini Division (DIBD)

MGNREGA and the weight of change

भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक का कार्यालय सीएजी और डिजिटल इंडिया भाषिणी प्रभाग डीआईबीडी के बीच समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर

CAG to audit Rlys multi-modal transport, logistics initiatives, suburban train system

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

सीएजी - सुर्खियों में

OFFICE OF THE COMPTROLLER & AUDITOR GENERAL OF INDIA
ऑडिट दिवस 2025
Audit Diwas 2025
16 नवम्बर २०२५ | भारत मंडपम, नई दिल्ली
16 November 2025 | Bharat Mandapam, New Delhi
ऑडिट दिवस 2025
Audit Diwas 2025
ऑडिट दिवस 2025
Audit Diwas 2025

पंजीकरण सं.-2 एल (9)/8747177/87(90)

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक का कार्यालय

9, दीन दयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110124